मद्य-निषेध:

नशे का व्यसन



चन्द्रसेन



शारदा प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली-३०

संस्करण : प्रथम
१९९०
मूल्य :
तीस रुपये मात्र

मुद्रक :
हिन्दुस्तान प्रिंटर्स, [illegible] रोड
दिल्ली-110032

शारदा प्रकाशन
१६/एफ-३, अंसारी रोड, दरिया गंज
नई दिल्ली-११०००२ द्वारा प्रकाशित

MADYA NISHEDH : NASHE KA VYASAN by Chandra Sen
(Prohibition)

क्रम

मद्य कथा

बौद्ध ग्रन्थों में एक मद्य कथा इस प्रकार वर्णित है :

एक दिन प्रभु संसार के सब जीवों पर दृष्टिपात कर रहे थे। उन्होंने देखा कि एक राजा जिसका नाम सर्वमित्र है खूब मद्य सेवन कर रहा है। उसके साथ उसके मन्त्रिगण और प्रजाजन भी मद्य के प्याले कण्ठ से उतार रहे हैं और महा पापाचार हो रहा है। प्रभु ने कहा, हाय ! हाय !! इन मनुष्यों पर यह कैसा अभिशाप है ? मद्य पीने में तो मधुर है परन्तु इसका परिणाम कैसा भयानक है ! इन सब का विवेक नष्ट हो गया है, यह अनाचार क्यों कर रहे हैं ? यदि यह राजा सुधर जाय तो शेष प्रजाजन भी सुधर जायेंगे।

ऐसा विचार कर प्रभु ने ब्राह्मण का रूप धारण किया। उनका रंग स्वर्ण की भांति दीप उठा। उन्होंने बल्कल वसन और मृगछाला शरीर पर धारण किये और एक सुराही में मद्य भर कर अपने कंधे पर लटका ली। इस भेस में वे सर्वमित्र के सम्मुख जा पहुंचे। उस समय राजा अपने दर-बारियों के साथ मद्य-चर्चा में लीन था। उन सब ने प्रभु के तेज को देखकर मस्तक झुकाते हुए करबद्ध प्रणाम किया। प्रभु ने जल्द गंभीर स्वर में कहा, "देखो, पुष्पों से आच्छादित इस सुराही में ऊपर तक सुगन्धित मधुर मद्य भरी हुई है, तुम में से कौन इसका खरीदार है ? यह सुराही कण्ठहार की भांति सुसज्जित है, देखो तो, कैसी प्रिय है। बताओ तुम में से कौन इसका मूल्य दे सकता है ?"

राजा के नेत्र उस सुराही पर अटक गये, उसने करबद्ध हो प्रभु से कहा, "आपका तेज प्रभात के सूर्य की तरह चमक रहा है, पूर्ण चन्द्रमा की

नाईं आपकी शोभा है, और आपका दिव्य वेश मुनियों-जैसा है, आपको हम किस नाम से सम्बोधित करें ?"

प्रभु ने उत्तर दिया, "थोड़ी देर बाद तुम मुझे जान जाओगे कि मैं कौन हूं, परन्तु पहले मुझ से इस सुराही के खरीदने का सौदा करो। कम-से-कम तुम तो परलोक की व्याधियों और कष्टों से नहीं डरते होगे ?"

राजा ने निवेदन किया, "श्रीमान की सभी बातें अद्‌भुत हैं, मैंने आज से पहले ऐसा व्यवहार कभी नहीं देखा। अपनी वस्तु के दोषों को कोई प्रकट नहीं करता। हे देव, कहिये इस सुराही में क्या पदार्थ है और आप इसे बेचने का नाट्य क्यों कर रहे हैं ?"

प्रभु बोले, "सुनो, राजन ! इसमें न जल है, न मेघों की अमृत-बूंदें हैं, न यह किसी पवित्र स्रोत की पुनीत धारा है, न इसमें सुगन्धित पुष्पों का सार मधु है, न पारदर्शी घृत है, और नहीं दूध है जो शरद चन्द्र-किरणों की मधुरिमा से युक्त हो। नहीं, नहीं, इस सुराही में पिशाचिनी मद्य है। इस मद्य के गुण सुनो : जो इसका पान करेगा उसे अपनी सुध-बुध न रहेगी, वह नशे में मतवाला होकर भोजन के बदले विष्ठा भी खा सकेगा। ऐसी यह मद्य है, इसे खरीद लो, इतनी निकृष्ट यह सुराही बिक्री ही के लिये है।

"इस पदार्थ में तुम्हारा समस्त ज्ञान और विवेक नष्ट कर देने की शक्ति है, जिससे तुम अपनी विचारधारा पर अधिकार न रख कर एक वनपशु की भांति व्यवहार कर सकोगे। तुम्हारे शत्रु तुम्हारी दशा की हंसी उड़ायेंगे। तुम इसे पीकर खूब नाच भी सकते हो, गा भी सकते हो। यह मद्य अवश्य तुम्हारे खरीदने योग्य है। इसमें एक भी अच्छा गुण नहीं है।

"इसके पीने से तुम्हारी लाज-भावना जाती रहेगी। तुम नंगे भी रह सकते हो। लोगों का समुदाय यदि तुम पर थूके, तब भी तुम्हें बुरा प्रतीत होगा। वे तुम पर गोबर, कीचड, कंकर-पत्थर उछालें तब भी तुम न जान सकोगे। ऐसी मद्य को मैं तुम्हारे पास बेचने के लिए लाया हूं।

"जो स्त्री इसका सेवन करेगी, वह मदान्ध होकर अपने माता-पिता को रस्सियों से बांध कर और कुबेर सदृश पति को भी ठुकरा कर पतन के

गड्ढे में प्रसन्नता से जा गिरेगी। ऐसी यह मद्य है।

"इसने अनेक सम्पन्न परिवारों को नष्ट किया है, सुन्दर स्वर्ण शरीर को चिताओं पर जला कर भस्म किया है, राजमहल और सम्राटों को धूल में मिलाकर पददलित किया है, फिर भी इसकी तृष्णा नहीं बुझती। ऐसी प्रलयकारी है यह मद्य !

"इसे जिह्वा पर रखते ही मन मलिन हो जाता है, जी ऐंठ जाता है। खूब हंसो, खूब बको, कुछ भी ज्ञान नहीं रहता। उसमें असत्य भाषण करने का साहस आ जाता है, वह सत्य को असत्य और असत्य को सत्य समझने लगता है। इस मदान्ध करने वाली वस्तु के स्पर्श-मात्र से ही पाप लगता है, बुद्धि मलिन होती है, कष्ट और व्याधि बढ़ती हैं। यह समस्त अपराधों की जननी है, उज्ज्वल मन का भयानक अंधकार है, जिसकी तीक्ष्ण ज्वाला शीतल हृदय पर सदैव धधक-धधक कर दहकती रहती है। जो इसके प्रभाव में होकर अपने माता-पिता, स्त्री, भगिनी, भ्राता और बच्चों का हंसते-हंसते बध कर सकता है, ऐसी यह मद्य है। हे प्रजा के राजा, यह पेय तुम्हारे प्रतापी कण्ठ से नीचे उतरने योग्य है, तुम इसे खरीद कर पान करो।

"इस मद्य को जरा देखो तो, इसका माणिक की भांति हल्का लाल रंग है। सुन्दरियों की उंगलियों का स्पर्श पाते ही इसकी मादकता और भी तीव्र हो उठती है। इसे पीकर मनुष्य पशु बन जाता है, यह नरक की खान है।"

प्रभु ने मद्य का यह बखान करके चारों ओर देखा। सब स्तब्ध थे। उस नीरव दरबार में एकाएक गर्जन हुआ, राजा ने तेजी से उठकर अपने मद्य-पात्रों को दीवार से टकरा कर चूर-चूर कर डाला। और "हाय ! पिशाचिनी, मायाविनी मद्य, तू जा ! जा ! मुझे छोड़ !" कहकर प्रभु के चरणों में गिर पड़े।

मद्य-दोष

क्लिटनवेन क्राफट ने शराब का वर्णन इस प्रकार किया है, "मैं आग हूं, मैं भस्म करती हूं और नाश करती हूं। मैं रोग हूं और असाध्य हूं। मैं चिन्ता हूं, राजाओं की चमकीली पोशाक, प्रतिष्ठित पुरुषों के भारी-भारी वेश, सजीली रानियों के रेशमी वस्त्र मेरी अमिट भूख मिटाया करते हैं। मेरा नाश जब भयंकर ऊंचाई पर पहुंच जाता है तब मैं थोड़ी देर के लिए सुलगती हू। मेरी ज्वाला अचानक धधक उठती है और सर्वस्व को भस्म करना शुरू कर देती है, यहां तक कि कुछ भी नही छोडती। मैं अग्नि का समुद्र हूं, कोई जिह्वा मुझसे प्यास नही बुझा सकती। मैं वह अग्नि हूं जो कभी जल से शान्त नही होती।"

पाश्चात्य सभ्यता ने संसार को जो सबसे भयानक वस्तु दी है, वह शराब है। यह शरीर और आत्मा दोनों ही के लिए समान रीति से घातक है। गत महायुद्ध में एक करोड प्राण युद्ध के द्वारा, डेढ़ करोड़ महामारी के द्वारा, २ करोड़ शराब के द्वारा नष्ट हुए। भारत में ज्यों-ज्यों पाश्चात्य सभ्यता बढी है, मदिरा का प्रचार व्यापक होता गया है। अमीर और गरीब सभी इसके चंगुल मे फंसे हैं। पश्चिम मे मद्य के विरोध मे अब भारी आन्दोलन प्रारम्भ हो गया है। अमेरिका ने शराब का सार्वजनिक प्रयोग त्याग दिया है। वहां के वैज्ञानिकों और डाक्टरों ने आन्दोलन मचा रखा है कि शराब उनके देश और राष्ट्र का, उनके समाज का सत्यानाश कर रही है। विद्वान् लोग सर्व-साधारण को चेता रहे हैं कि मद्यपान से बल घटता है, पुरुषार्थ कम होता है, शरीर मे रोग प्रवेश करते हैं और आयु कम हो जाती है। शराब मांस को गला डालती है। इससे दिमाग खराब हो जाता है, बुद्धि मलिन हो जाती है। अन्य योरोपीय राष्ट्र भी समस्त संसार से इसको नष्ट कर देने का उद्योग कर रहे हैं। इंग्लैंड के प्रख्यात महामन्त्री मिस्टर ग्लेडस्टन ने एक बार कहा था—"मनुष्य-जाति पर असयम-द्वारा जितनी विपत्तिया पड़ी हैं, उतनी बड़ी-से-बड़ी तीन ऐति-

हासिक विपत्तियां अर्थात् युद्ध, महामारी और अकाल द्वारा भी नहीं पड़ीं।"

कुछ दिन पूर्व ब्रिटेन और भारत के डाक्टरों ने मिलकर एक विज्ञप्ति निकाली थी, जिसका अभिप्राय यह था : १. यह वैज्ञानिक रीति से निश्चित हो गया है कि शराब, कोकिन, अफीम और अन्य मादक द्रव्य विष हैं। २. भारत-जैसे गरम देश में इनका थोड़ा भी व्यवहार स्थायी रूप से हानिकारक है। ३. बहुत दशाओं में शराब संतान के लिए हानिकारक है। ४. प्लेग, मलेरिया और क्षय को रोकने में शराब व्यर्थ है। ५. यही बात अन्य नशों के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है।

कलकत्ते के प्रसिद्ध डाक्टर सर लियोवर्ड राँजर्ज ने वर्षों पहले कहा था कि "बंगाल के जिगर के फोड़े के ७० फीसदी रोगियों का कारण शराब का पीना ही है। स्त्रियों में यह रोग बहुत कम पाया जाता है, क्योंकि वे शराब नहीं पीतीं। मुसलमानों में भी यह रोग कम है क्योंकि बंगाल में हिन्दू ही ज्यादा शराब पीते हैं।"

अमेरिका के प्रसिद्ध चिकित्सक और मेडिसन रिसर्च ऐशोसियेशन के भूतपूर्व सभापति डाक्टर हार्वी वेली कहते हैं—"औषध-तत्त्वसार के पारंगत सभी विद्वान जिन्होंने शराब के प्रभाव का अन्वेषण किया है, एकमत से सहमत हैं कि शराब पौष्टिक पदार्थ नहीं है। यह एक निरा विषैला पदार्थ है, इसलिए ह्विस्की और ब्रान्डी दोनों ही औषधि की श्रेणी में से अलग कर दी गई हैं।"

योरोप के अस्पतालों में ४०-५० वर्ष पहले शराब का औषधि की भांति बहुतायत से प्रयोग होता था। चीर-फाड़ के बाद बहुत-से अस्पतालों में ब्रान्डी हृदय को उत्तेजना देने के लिए काम में लाई जाती थी, पर अब इसका प्रयोग बन्द कर दिया गया है। आस्ट्रेलिया के एक अस्पताल में सन् १८९१ में १००० पौंड से अधिक मूल्य की शराब रोगियों पर खर्च की गई थी। उसी अस्पताल में सन् १९१४ में केवल ४ पौंड मूल्य की शराब खर्च की गई।

शराब पाचन-शक्ति को नष्ट करने वाली, सनक और दीवानापन लाने वाली, कलेजा, गुर्दा, आमाशय और रक्त स्नायुओं को भीतर-ही-भीतर घुलाने वाली, अस्वाभाविक रीति से रोग-जंतुओं को शरीर में पहुंचाने वाली है, जिससे शरीर-अवयव और ज्ञान-तन्तु बिगड़ जाते हैं। निमोनिया, श्वास, क्षय, शोष आदि सांघातिक रोग उत्पन्न होने लगते हैं और फिर पुश्तैनी हो जाते हैं।

शराब काम-शक्ति को असाधारण रीति से प्रबल कर देती है। संयम की शक्ति जाती रहती है। यह जनन-शक्ति को भी नष्ट कर देती है। इसका परिणाम यह होता है कि बांझ और नपुंसकता के रोग उत्पन्न हो जाते हैं और मनुष्य शीघ्र ही निर्वीर्य और वृद्ध हो जाता है। अल्पकाल ही में उसकी समस्त इंद्रियां बेकार हो जाती हैं। शराबियों में प्रतिशत २७.१ मस्तिष्क-रोग से, २३.३ अपच रोग से और २६.६६ फेफड़े के रोग से मरते हैं। भारत के पागलखानों में ६० प्रतिशत पागल मादक द्रव्य सेवन करनेवाले हैं। बढ़ती हुई वेश्या वृत्ति का मुख्य कारण सुरापान है। मादक द्रव्यों से बेहोश करके कितने ही दुराचारी अनेक दुष्कर्म करते हैं।

प्राचीन भारत में मद्य-निषेध

शुक्राचार्य पहिले व्यक्ति थे जिन्होने मद्यनिषेध की आवाज उठाई थी। मनु ने मद्यनिषेध के लिये अत्यन्त कठोर नियम बनाये थे। उनका कहना था कि किसी भी राजा के राज्य में शराबी होना भयंकर कलंक है। जो शराब पीते थे उन्हें राज्य का त्याग करना पड़ता था। उनके सिर पर एक तिकोनी टोपी रहती थी जिससे उन्हें पहचाना जा सकता था। वे जब तक प्रायश्चित नही कर लेते थे उन्हें समाज और मित्रों से बहिष्कृत रखा जाता था। वे कोई भी धार्मिक कृत्य नही कर सकते थे। मनु को इतनी ही दण्ड-व्यवस्था से सन्तोष न था। जो स्त्री शराब पीती थी वह गृहणी के पद से च्युत कर दी जाती थी, उसकी मृत्यु के उपरान्त उसका एक भी मृतकर्म नहीं किया जा सकता था। मृत्यु-समय ब्राह्मण उसे श्राप देते थे कि तू अगले जन्म में गीदड़ अथवा अन्य किसी नीच पशु-योनि में जन्म ले। जन्म न ले तो नरक में पड़ी सड़ती रहे। मनु ने इन नियमों को कागज पर लिखकर और विधान बना कर ही नही छोड़ दिया था, बल्कि तत्परता से पालन कराया था। यदि किसी विद्यार्थी को शराबी अपने हाथ से छूकर भोजन की भिक्षा दे देता था तो विद्यार्थी को वह भोजन खाना वर्जित था, उसके खा लेने पर उसे दण्डित किया जाता था। यदि किसी कल्लाल से ऋण-धन लेना होता था तो उससे शराब की बिक्री का रुपया नहीं लिया जाता था, उस रुपये को छू लेने पर भी दण्ड मिलता था। मनु देव-पूजा में सोमरस आदि मद्य-पदार्थों द्वारा अर्चन को भी अपराध समझते थे। इसलिये सोमरस का बेचने वाला नीची श्रेणी में (शूद्रों में) गिना जाने लगा।

मनु के बाद अपस्तम्ब और गौतम ने भी मद्यनिषेध के लिये कठोर से कठोर नियम बनाये थे। अपस्तम्ब ने तो यह घोषणा कर दी थी कि तमाम

मादक द्रव्यों का पीना वर्जित है। और जो कोई भी शराब पीयेगा उसका एकमात्र प्रायश्चित यही है कि वह इतनी अधिक गरमागरम शराब पिये कि पीते-पीते उसका प्राणान्त हो जाय। गौतम का सिद्धान्त था कि एक शराबी ब्राह्मण शराब पीने के पाप से केवल मृत्यु के बाद ही मुक्त हो सकता है। शराबी को शराब का त्याग करके प्रायश्चित करना पड़ता था जिसमें उसे पहले तीन दिन तक गरम-गरम दूध, गरम घी और गरम पानी पीना पड़ता था। उसे सांस भी गरम हवा में लेना पड़ता था।

मनु ने लोगों के इस अन्धविश्वास को कि मद्य-अर्चन से देवता प्रसन्न होते हैं अथवा हमारे प्राचीन धर्म-ग्रन्थ मादक द्रव्यों के पीने का निषेध नहीं करते हैं दूर करने की बहुत चेष्टा की थी। उन्होंने दृढ़तापूर्वक मद्य-सेवन को बुरा व्यसन कहा।

प्राचीन काल में दस प्रकार की शराबों का वर्णन है जो इन पदार्थों से बनाई जाती थी—(१) खाड (२) महुआ के खिले हुए फूल (३) आटा (४) राब, शीरा (५) टंका वृक्ष के फल (६) जुजुबे वृक्ष के फल (७) कारागुरा वृक्ष के फल (८) रोटफल वृक्ष के फल (९) अंगूर (१०) नारियल वृक्ष का दूध।

पुलस्त्य ऋषि इन नामों से पृथक बारह नाम और गिनाते हैं।

(१) पनस मद्य। इसके बनाने की विधि मत्स्यसुक तन्त्र में लिखी है, कच्चे पनासा को एक पात्र में रख कर नित्य कच्चे दूध की धार उस पर डालो, उसमे थोड़ा कच्चा मांस बारीक करके प्रति तीसरे दिन मिलाते जाओ। इसमें भाग की हरी पत्तिया भी डालो। खाने का चूना बुरको। और जब यह भली-भाति सड़ जाय तब छान कर सुराहियों में भर कर रक्खो। (२) मधुका : शहद से बनती थी। (३) तला : ताड़ से बनती थी। (४) ऐक्षवा (५) सैरा : काली मिर्च से बनती थी। (६) आरिष्ट (७) सुरा (८) वारुणी (९) पैष्टी आदि।

श्री बुद्ध की अहिंसा और मद्य-निषेध

बौद्ध काल से पहले ब्राह्मणों का सर्वत्र मान था। वे जैसा कहते थे राजा-रंक सभी उसे मानते थे। वे यज्ञों मे पशु-बलि और मद्य का भी उपयोग करते थे। बुद्ध ने हिंसावृत्ति को बुरा बताया। उसने मद्यपान को दोष कहा। उसके असंख्य शिष्यो ने इन आज्ञाओं को शिरोधार्य करके उनका प्रचार किया। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने शासन मे मांस खाना, मद्य पीना, बुरे आचरण करना, असत्य बोलना अपराध घोषित कर दिये थे।

कौटिल्य ने मद्यपान की दूकानों पर उत्तम स्वादिष्ट भोजन रखवा दिये। जब कोई व्यक्ति मदिरालय में पहुंचता था तो उसे पहले सुगन्धित फूलों के बीच मे सजाकर भोजन-पात्र पेश किया जाता था। ये भोजन प्रत्येक ऋतु के अनुसार अलग-अलग प्रकार के होते थे, और इनका मूल्य बहुत ही सस्ता होता था। वह व्यक्ति इस पात्र को ही ग्रहण करता था और शराब का व्यसन उससे छूटता जाता था। ब्राह्मणों को तो मद्य छूने मे भी दण्ड दिया जाता था। जो धनिक व्यक्ति शराब की दूकान पर आता था, उसकी सम्पत्ति, उसके कण्ठहार, कुण्डल, अंगूठी आदि आभूषणो की जाच की जाती थी। यदि वह चोरी की सिद्ध होती तो दुकानदार को भी उस आभूषण के मूल्य के बराबर अर्थ-दण्ड दिया जाता था।

सम्राट अशोक ने चन्द्रगुप्त के कार्य को पूर्ण रूप से पूरा किया। वह स्वयं भी मद्य पीने वालों की निगरानी रखता था। उसने अपनी राजसत्ता का प्रयोग बौद्ध धर्म के नियमों का पालन कराने मे किया। उसने अपने शासन के तीस वर्षों मे मद्यपान का बहुत कठोरता से दमन किया। आज हिन्दुओं में जो इतनी शुद्धता और पवित्रता देखने में आती है यह उसी का परिणाम है। यह सुधार इतनी दृढता से किया गया था कि अशोक के बाद सैकड़ों वर्षों तक भी मद्य-पान लोक-प्रचलित नही हो सका। जब सन् ३९९ ईस्वी मे प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान भारत मे आया तब उसने बहुत प्रसन्न होकर अपनेयात्रा-विवरण में यह लिखा कि 'इसदेश केनिवासी

न जीव हत्या करते हैं न मद्य अथवा मादकपदार्थ का सेवनकरते हैं। वे मृत जीवों का व्यवसाय भी नहीं करते। मद्य कीकोई दूकान मुझे नहीं दीखी।' दूसरा प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वानसांग भारत में सन् ६३० ई० में आया था और १६ वर्ष तक यहां रहा, वह लिखता है कि मैंने राजा हर्ष से लेकर साधारण किसान तक के जीवन का समीप सेअध्ययन किया है, मैंने सबको शुद्ध, पवित्र और मितव्ययी पाया। यह सब बुद्ध के अहिंसा धर्म का प्रताप था।

बुद्ध ने कहा कि वेश्या और सुरापान दोनों ही अप्रिय हैं, दोनों ही त्याज्य हैं। वेश्या धन का और सुरा परिवार का हरण करके मनुष्य को ऐसा बना देती है कि उसका मूल्य शून्य जितना भी नहीं रह जाता। मनुष्य-समाज के कल्याण के लिए नैतिक तथा सामाजिक दृष्टि से इस अभिशाप का अन्त करना ही चाहिए। संसार में मदिरा मनुष्य-मात्र की प्रसिद्ध शत्रु है।

"मनुष्यो, तुम सिंह के सम्मुख आते भयभीत न होना—वह पराक्रम की परीक्षा है, तुम तलवार के नीचे सिर झुकाने से भयभीत न होना—वह बलिदान की कसौटी है, तुम पर्वत-शिखर से पाताल में पड़ने से भयभीत न होना—वह तप की साधना है, तुम दहकती ज्वालाओं से विचलित न होना—वह स्वर्ण-परीक्षा है, पर सुरा देवी से सदैव भयभीत रहना, क्योंकि यह पाप और अनाचारों की जननी है।"

जिस राजा के राज्य में सुरा देवी आदर प्राप्त करेगी वह राज्य काल-वेदि पर नष्ट होगा। वहां न औषधि उपजेगी, न अनाज होगा, न वृष्टि होगी, न सृष्टि। यह महा हिंसा है।

मुस्लिम राज्यों में मद्य-निषेध :

अब से हज़ार वर्ष पहले नवीं शताब्दी में अरब का प्रख्यात सौदागर सुलेमान जब भारत में आया तो उसने देखा कि भारत में कहीं भी शराब की दूकान नहीं है। उसने यह बात बड़े आश्चर्य से अपने यात्रा-विवरण में लिखी है।

बादशाह जहांगीर ने शराब-खोरी के विरुद्ध घोषणाएं जारी की थीं।

पहला योरोपियन यात्री वास्कोडिगामा जब भारतीय तट पर जहाज से उतरा तब उसने भी भारत को शराब से रहित पाया।

अलाउद्दीन खिलजी को एक दिन अपने पापों, दुष्कर्मों और क्रूरता पर इतना पश्चात्ताप हुआ था कि उसने इन सबकी जड़ को शराब समझा। वह बहुत शराब पीता था। उसने तुरन्त ही सेवकों को आज्ञा दी कि मेरी शराब की सुराही लाओ। सुराही सामने आने पर उसने बड़े क्रोध से उसे जमीन पर दे मारा। इसके बाद उसने महल के तमाम कीमती प्याले और सुराहियों को मंगवाकर अपने सामने तोड़ डालने की आज्ञा दी। इतिहासकार लिखता है कि बदायूं दरवाजे पर कीमती और लजीज शराब को बहा दिया गया और बर्तनों को तोड़-फोड़कर नष्ट कर दिया गया। उस स्थान में ऐसी कीचड़ हो गई जैसे कि मेंह बरसने के बाद हो जाती है। वहीं पर बड़े-बड़े गड्ढे खोदे गये और शराब पीने वालों को उनमें गाड़ दिया गया। उन पर ऐसी क्रूरता की गई कि बहुत-से तो तुरन्त मर गये। इस घटना से लोगों ने शराब पीनी छोड़ दी।

अकबर ने शराब के विरुद्ध आदेश कर दिये थे। कुरान में शराब पीने की आज्ञा नहीं है। हिन्दू, पारसी, ईसाई सभी की धर्म-पुस्तकों में शराब की निन्दा लिखी है। जिस प्रकार शराबी मनुष्य हिन्दू धर्म में आर्य या द्विज नहीं कहा जा सकता, उसी प्रकार शराबी मुसलमान शरअ की रू से मुसलमान नहीं कहा जा सकता। मुगल सम्राट् औरंगजेब के समय में प्रसिद्ध फ्रांसीसी डाक्टर बर्नियर ने जो औरंगजेब के दरबार में बहुत दिन रहा था, स्पष्ट लिखा है कि दिल्ली में शराब की एक भी दूकान न थी। वह लिखता है, "मदिरा जो हमारे यहां भोजन का प्रधान अंग है, दिल्ली की किसी भी दूकान में नहीं मिलती। जो मदिरा यहां देसी अंगूर की बन सकती है, वह भी नहीं मिलती, क्योंकि मुसलमानों की कुरान और हिन्दुओं के शास्त्रों में उसका पीना वर्जित है। मुगल राज्य में भी जो मदिरा शीराज वा कनारी टापू से आती है, अच्छी होती है। शीराजी मदिरा ईरान से खुश्की के रास्ते—'बन्दर अब्बास' और वहां से जहाज द्वारा सूरत में

पहुंचती और फिर वहां से दिल्ली आती है। शीराज से दिल्ली तक मदिरा आने में कई दिन लगते हैं। कनारी टापू से मदिरा सूरत होती हुई दिल्ली आती है। पर यह दोनों मदिरायें इतनी महंगी होती हैं कि इनका मूल्य ही इन्हें बदमजा कर देता है। एक शीशी पन्द्रह या अठारह रुपये में आती है। जो मदिरा इस देश मे बनती है, जिसे ये लोग 'अर्क' कहते हैं वह बहुत ही तेज होती है। यह भभके से खीचकर गुड़ से बनाई जाती है और बाज़ार मे नही बिकने पाती। धर्म के विरुद्ध होने के कारण अंग्रेजों व ईसाइयो के अतिरिक्त इसे कोई नही पी सकता। यह अर्क ठीक वैसा ही है जैसा कि पोलैण्ड के लोग अनाज से बनाते हैं और जिसे परिमाण से जरा भी अधिक पी जाने से मनुष्य बीमार पड़ जाता है। समझदार आदमी तो यहां सादा पानी पियेगा, या नीबू का शरबत, जो यहां सहज ही मिल जाता है और जो हानिकारक नही होता। इस गर्म देश में लोगो को मदिरा की आवश्यकता नही होती। मदिरा न पीने और बराबर पसीने आते रहने के कारण यहां के लोग सर्दी, बुखार, पीठका दर्द आदि अनेक रोगो से बचे रहते हैं।"

मुगलों के राज्य का पतन कुछ बादशाहों की बढती शराब-परस्ती ही थी। इतिहास में इसकी एक झलक मिलती है : बहादुरशाह के पोते मुहम्मदशाह दिल्ली के तख्त पर राज्य करते थे। यह वह समय था जबकि नादिरशाह ने भारत पर आक्रमण किया, वह पश्चिम के मार्ग से भारत के प्रान्तो को लूटता हुआ दिल्ली तक आ धमका। उसने दिल्ली के निकट पहुचकर बादशाह को लिखा, "दो करोड़ रुपये दो वरना दिल्ली की ईंट से ईंट बजा दूगा।"

जब यह दूत दरबार में पहुंचा तो बादशाह शराब पी रहे थे और शेरें तथा गजलें गाई जा रही थी। बादशाह स्वयं अपनी कवितायें सुना रहे थे, और अमीर-उमराव उन्हे 'क्लामुल्मुलूक लूकुलक्लाम' कहकर झुक-झुककर सलामे अदा कर रहे थे। दूत ने खत दिया तो बादशाह ने वजीर से कहा, 'पढो क्या है ?' वजीर ने पढ़ा और कहा, "हुजूर ऐसे गुस्ताखी के अल्फाज हैं कि जहांपनाह के सुनने काबिल नही।" बादशाह ने कहा, 'ताहम पढो।' खत सुनकर कहा, "क्या यह मुमकिन है कि यह शख्स दिल्ली की ईंट-से-ईंट

बचा दे?" खुशामदी दरबारियों ने कहा, "हुजूर, कतई नामुमकिन है।" तब बादशाह ने हुक्म दिया, "यह खत शराब की सुराही में डुबो दिया जाय और इसके नाम पर एक-एक दौर और चले?" जब दौर खतम हुआ तो दूत ने कहा, 'हुजूर बन्दे को क्या इरशाद है।' बादशाह ने हुक्म दिया, "पांच सौ अशर्फी और एक दुशाला इसे इनाम दिया जाय।"

दूत चला गया और नादिरशाह तूफान की भांति दिल्ली में घुस आया। उसने तीन दिन तक कत्लेआम किया और असंख्य हीरे-जवाहरात लूट ले गया। वह तख्तेताऊस भी लूट ले गया। इस लूट में उसे तख्त के अलावा दस करोड़ का माल मिला था।



शराब व अल्कोहल का परीक्षण

शराब अस्वाभाविक रीति से गेहूं, मक्का, ज्वार, चावल, महुआ, जौ, अंगूर और खजूर के रस से सड़ाकर बनाई जाती है। इसमें अल्कोहल का प्राधान्य रहता है। १०६ औंस शराब में ७० औंस तक अल्कोहल रहता है। यह अल्कोहल भयानक विष है। यदि अल्कोहल थोड़ा भी एक मनुष्य को दिया जाय तो वह उसे मारने को काफी है। यदि जल में सौवां भाग अल्कोहल मिलाकर उसमें मछली को डाल दिया जाय तो वह मर जायगी। यदि अंडे की सफेदी को उसमें डालो तो वह तुरन्त सिमट जायगी तथा कड़ी हो जायगी।

हम अपने दैनिक जीवन में अनेक तरल पेय पदार्थों का उपयोग करते रहते हैं, जैसे दूध, पानी, लेमन, सोडा, बरफ, काफी, कोको आदि। इनमें अल्कोहल नहीं होता। इसके सिवा दूसरी श्रेणी के पेय हैं जैसे बीयर, विस्की, घर की बनी शराब, विलायती शराब, स्प्रिट, ताड़ी, दारू आदि ये सब नशा करती हैं क्योंकि इन सब में नशे की जीवात्मा 'अल्कोहल' होता है।

अल्कोहल के परीक्षण का साधारण उपाय यह है कि मद्य को किसी रकाबी में रखकर नीचे हल्की आंच जलाओ तो रकाबी भभक उठेगी। भभक से जल उठना अल्कोहल का प्रमाण है।

किसी भी तरल पदार्थ को उबाला जाय तो उसकी भाप बनने लगेगी। पानी २१२ एफ० डिगरी तक गरम करने पर भाप बनने लगती है। अल्कोहल केवल १७२ एफ० डिगरी में ही भाप बनकर उड़ने लगता है। यदि हम थोड़ी-सी शराब को एक कांच के गिलास में रखकर गरम करें

तो वह तुरन्त गरम होकर गिलास के मुंह पर लौ बनने लगेगा। चूंकि पानी की भाप लौ बनकर जल नहीं सकती, और शराब में अन्य पदार्थों का मिश्रण नहीं है. इसलिए वह लौ अल्कोहल को प्रमाणित करती है। पानी का तनिक भी अंश उसमें होता तो वह लौ को जलने से अवश्य रोकता।

अल्कोहल के सही माप का एक यन्त्र अल्कोहोलोमीटर भी आता है। आबकारी विभाग में घनत्व की माप भी की जाती है, और यही सही जांच है।

आबकारी विभाग अल्कोहल की वस्तुओं पर चुंगी प्रूफस्प्रिट के हिसाब से लगाते हैं। आधा पानी आधा अल्कोहल से प्रूफस्प्रिट बनती है। प्रूफस्प्रिट में अनुपात से पानी का वजन ५०.७६ और अल्कोहल का वजन ४९.२४ प्रतिशत होता है। दोनों समान वजन के हों तो प्रूफस्प्रिट नहीं बन सकती क्योंकि अल्कोहल का घनत्व पानी से हल्का होता है। क्षेत्रफल के हिसाब से प्रूफस्प्रिट में अनुपात से प्रतिशत ५७.०६ भाग अल्कोहल और ४२.९४ प्रतिशत भाग पानी होता है।

यदि घनत्व ०.९८८५ हो तो उसमे ६.७५ खालिस अल्कोहल और १४.७३ प्रतिशत प्रूफस्प्रिट का वज़न होगा। इससे यह सिद्धान्त निकला कि प्रूफस्प्रिट खालिस अल्कोहल से दूनी से थोड़ी ज्यादा होती है, और खालिस अल्कोहल की शक्ति में आधी से भी कुछ कम होती है। जिस तरल पदार्थ में २ प्रतिशत प्रूफ स्प्रिट होती है उस पर आबकारी चुंगी नहीं लगती, इससे अधिक पर लगती है। अल्कोहल में कितना पानी है इसका साधारण परिमाण इस प्रकार किया जा सकता है। दो चीनी के प्यालों में थोड़ी-थोड़ी बारूद भरो। उनमें से एक में पानी-मिली अल्कोहल छिड़क दो। दूसरी में खालिस अल्कोहल छिड़क दो। दोनों के नीचे आंच जलाओ। दोनों जलेंगे। लेकिन (१) में अल्कोहल अंश तो जलकर उड़ जायगा, पानी का अंश बारूद में समा हुआ रह जायगा और वह गीली मालूम होगी। (२) में अल्कोहल जलेगा पर चूंकि उसमें पानी का अंश नहीं है

इसलिए वह जलकर बारूद को भी जलाना शुरू कर देगी और बारूद गरम और सूखी मालूम होगी।

अब हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि अल्कोहल कहां से आती है। अल्कोहल प्राकृतिक रूप में किसी भी पदार्थ मे नहीं बनती। वह रासायनिक विधि से सड़ाकर पैदा की जाती है और उससे शराब बनती है। जैसे जौ से बीयर, अंगूरों से वाइन, सेब से साइडर, नासपाती से पेरी, शहद से मीड इत्यादि। इन शराबों की उत्तमता का यदि हम इसलिए बखान करें कि ये इतने सुन्दर फलों से बनी हैं तो यह मिथ्या है। क्योंकि दोनों के गुण भिन्न-भिन्न होते हैं। जिस प्रकार पानी, पानी की भाप, पानी की बरफ एक ही वस्तु की बनी होने पर भी भिन्न-भिन्न गुण रखती हैं इसी प्रकार शराब को भी समझना चाहिए।

शराब कैसे बनाई जाती है :

शराब किस प्रकार सड़ाकर बनाई जाती है इसका हम विस्तारपूर्वक वर्णन करते हैं।

जौ की शराब

जौ से बीयर बनाई जाती है। सबसे पहले अनाज को माल्ट किया जाता है, जिसकी विधि यह है : जौ की पौद मे जब किल्ले (अंकुर) फूट आते हैं तब उसमे रासायनिक परिवर्तन आरम्भ होता है। इस शिशु पौदे में स्टार्च बहुत अधिक मात्रा मे होता है, यदि जौ की ऐसी पौदी को छाया मे सुखाकर सावधानी से रखा जाय तो बहुत दिनो तक उसका यह गुण बना रहेगा।

जब पौदा नमी को जज्ब करने लगता है तब यह बढ़ना आरम्भ होता है, और कुछ समय तक स्टार्च ही रासायनिक परिवर्तन से एक प्रकार की शक्कर बनकर इसे पोषक तत्त्व देता है। नीचे की नोक फैलकर जड़ हो जाती है, पत्तियां पनपने लगती हैं। फिर ज्यों-ज्यों पौदा बड़ा होता है, त्यों-त्यों पत्तियों द्वारा हवा में से और जड़ों द्वारा जमीन मे से भोजन लेने

लगता है। विकास होने पर जड़ें नीचे जमीन में घसती जाती हैं और पत्तियां ऊपर ताजी हवा और रोशनी में फैलने लगती हैं।

स्टार्च बहुत ही शक्तिशाली पदार्थ है, यह तेज गरम पानी अथवा रासायनिक क्रिया से ही घुल सकता है। स्टार्च को रासायनिक उपायों से शक्कर बनाकर बाजार में ग्लूकोज नाम से बेचते है। ग्लूकोज एक पोषक तत्त्व है, बच्चों और मरीजों के लिए पथ्य है। यह कई प्रकार के होते हैं।

इस बात से हमें ज्ञात हुआ कि जौ में 'जौ की शक्कर' एक महत्त्वपूर्ण वस्तु है। इस शक्कर से ही शराब बनती है। शराब बनाने के लिए पहले जौ का माल्ट बनाते हैं, क्योंकि सूखे जौ में से स्टार्च को शक्कर के रूप में बदल देने की यही एकमात्र विधि है। अकेले सूखे जौ से शराब नही बन सकती। माल्ट विधि की चार क्रियाएं है—१. भिगोना, २. ढेर करना, ३. किल्ले फूटना और ४. सुखाना। जौ को एक बर्तन में डालकर उसमें पानी भर देना चाहिए जिससे वे डूब जायं। ४८ घंटे तक डूबे रहने चाहिएँ। जौ पानी को जज्ब करेंगे और फूल जावेंगे। इन जौ को पानी में से निकालकर ढेर बना देना चाहिए। गीला ढेर बनने से थोड़ी गरमी पैदा होगी, और उनको गरमाई पहुंचेगी, इसी गरमाई से उनमें किल्ले फूटेंगे। किल्ले फूटने की आसानी के लिए ढेर को धीरे-धीरे फर्श पर फैला देना चाहिए और उलट-पुलट करते रहना चाहिए, थोड़े दिन बाद ही कुल्ले फूट आवेंगे। जब कुल्ले पूर्णतया फूट आयं, तब और अधिक अंकुर न बढ़ने देने चाहिएँ। उनको फिर भट्ठी की मंदी आंच से गरम करके सुखाना चाहिए। आंच इतनी ही हो कि वे थोड़ा सूख जायं, बहुत सूखें नहीं, जलें नहीं, स्टार्च नष्ट होवे नहीं। माल्ट की सारी विधि बन्द कमरे में होनी चाहिए, खुली धूप में नहीं। शराब के कारखानों में माल्ट करने के कमरे बहुत लम्बे होते हैं और वे खुले नहीं होते।

ऐसे माल्ट हुए जौ में पाचक-शक्ति कम नही होती। बच्चों और मरीजों को डाक्टर लोग माल्ट अनाज की रोटी खाना बतलाते हैं। क्योंकि

उनकी पाचन-शक्ति कमजोर होती है। ऐसा अनाज मुंह की राल को उत्पन्न करता और उसके अभाव को पूर्ण करता है। भोजन खूब चबाकर निगलने का नियम इसीलिए है कि उसमें मुंह की लार का बहुत-सा अंश मिलकर पेट में पहुंचे। माल्ट किया हुआ अनाज पाचन-शक्ति को सुधार देता है।

माल्ट करने से जौ का वजन २० प्रतिशत घट जाता है। १०० किलो वजन ८० किलो ही रह जायगा। क्योंकि २ प्रतिशत भिगोने में (घुलने वाला पदार्थ पानी में घुल जायगा), २ प्रतिशत फ़र्श पर सुखाने में (कार्बन द्विओषित उड़ जायगी), ४ प्रतिशत अंकुरों अथवा कुल्लों के घिसने अथवा छीज जाने में और १२ प्रतिशत भट्टी की आंच से भाप बनकर उड़ जाने में कम हो जाता है।

सन् १९२१ में अमेरिका में २,०००,००० एकड़ भूमि पर जौ की खेती शराब बनाने के लिए होती थी, जिसमें ६,०००,००० Cwts. जौ पैदा होते थे। और १६,०००,००० Cwts. जौ बाहर अन्य देशों से खरीदे गए थे।

जौ में प्रतिशत निम्न पदार्थ होते हैं :

जल (water)	१२.०
शक्कर (Dextrin & Sugar)	६.२
स्टार्च (Starch)	६२.६
ऐल्बुमिनेइस (Albumenoids)	११.२
ऐश (Ash)	२.८
काष्ठ्य (Woody fibre)	०.६
चर्बी (Fats)	२.६
	१००.०

शराब बनाने में आठ विधि करनी पड़ती हैं—माल्ट को कुचलना, मथना, पकाना, ठंडा करना, सड़ाना, साफ करना; शराब घुमाना और

शुद्ध करना।

मथने में १७५° डिग्री फारेनहाइट गरम पानी प्रयोग में आता है, इससे स्टार्च की शुगर अच्छी तरह बनने लगती है। बड़ी-बड़ी मशीनों में पूरे चार घंटे तक एक धान की मथाई होती है, यहां तक कि स्टार्च की शक्कर बन जाती है। जौ को अलग निकालकर पशुओं को चारे के काम में ले लेते हैं और स्टार्च की शक्कर के तरल पदार्थ को पकाकर शराब बनाते हैं। माल्ट बनाने में जो २०% कम हो गया था। अब मथने में जो पृथक होने से ५०% और कम हो गया।

उस शक्कर के तरल पदार्थ को बड़े-बड़े टैंकों में भरकर सड़ाते हैं। सड़कर उसमें फेन पैदा होते हैं। शराब के कारखानों में बहुत दूर तक फैले हुए तरल पदार्थ के ऊपर ये फेन श्वेत समुद्र की भांति दीखते हैं। इन फेनों को सावधानी से उत्पन्न करके उनको एक बर्तन में संग्रह किया जाता है। इन फेनों से शराब चुआई जाती है। ये फेन कई प्रकार के बनते है। तरल पदार्थ की नीची तह में भी फेन उत्पन्न होते हैं, इनकी बनी शराब कुछ कमजोर होती है। ऊपरी सतह के फेनों की शराब ही प्रायः सर्वत्र बनाई जाती है और श्रेष्ठ समझी जाती है।

फेन एक बार ही नहीं आते, वह एक बार उतार लेने पर दूसरी बार और तीसरी बार भी आते हैं। एक प्रकार से उस तरल पदार्थ की यह पौध है, इसमें बहुत सावधानी रखनी पड़ती है। जितने अधिक फेन आयेंगे उतना ही अधिक सडान समझना चाहिए। टैंकों में अनुकूल टेम्प्रेचर रखने के लिए यन्त्र लगे रहते हैं। सड़ान का रासायनिक काम यह हुआ कि शक्कर की अल्कोहल और कार्बन द्विओषित दो चीजें बनी। फेन का फारमूला यह है :—



$C^6 H_{12} O_6 + Yeast = 2 (C_2H^5 HO) + 2 (CO_2)$

Sugar झाग Alcohal Carbon Dioxide

ज्यों-ज्यों फेन बनते हैं, कार्बन द्विओषित हवा मे उड जाती है और अल्कोहल रह जाती है। इस प्रकार शराब में खालिस अल्कोहल ही है।

शराब और डबलरोटी

कुछ लोगों की यह दलील है कि जो की डबल रोटी भी इसी प्रकार खमीर उठाकर बनाई जाती है, जब उसमें हानि नही तब शराब में क्यो है? हम अभी बता चुके हैं कि शराब मे, माल्ट और सड़ने मे ७० प्रतिशत जो कम हो चुके है और फेन लेने में तो और भी कमी हुई होगी, तब यह निश्चय मान लेना चाहिए कि डबल रोटी के एक पैसे के टुकड़े मे जितने पोषक तत्त्व मिले होंगे उतने पाच रुपये के शराब के गिलास में भी न होंगे। पश्चिम के एक प्रसिद्ध केमिस्ट बैबेरोन लीबिग ने एक बार कहा था कि हम इस बात को गणित द्वारा प्रमाणित कर सकते हैं कि खाने की मेज पर पड़ी हुई छुरी की नोक पर ही इतना पोषक तत्त्व पाया जा सकता है जितना नौ गुनी सबसे अच्छी 'बवेरियन बीयर' मे भी नही होता।

आधी पौंड रोटी में २८६ ग्रेन नसों को पुष्ट करने वाला पदार्थ रहता है। आधा पिन्ट दूध मे १७६ ग्रेन पौष्टिक तत्त्व रहता है। आधा पिन्ट बीयर में केवल २० ग्रेन ही पौष्टिक तत्त्व रहता है। एग्रीकल्चर हाल लन्दन में पहली नेशनल ब्रीवर्स एग्ज़ीबिशन के अवसर पर बरटन शराब का एक पीपा दिखाया गया था जिसमे शराब का भाग-विभंजन दिखाया गया था। पीपे मे ३६ गैलन अथवा १४४ क्वार्टर्स शराब का विभंजन इस प्रकार था :

१३० क्वार्ट जल (Water)
७॥ ,, अल्कोहल (Alcohal)
३॥ ,, डेक्सट्रीन (Dextrin & C)
२ ,, शूगर (Sugar)
१ ,, एल्बूमिनेड (Albumenoid)

इसमें आप देखेंगे कि भोज्य पदार्थ केवल पिछली दो वस्तुएं ही हैं।

रोटी और बीयर में अब यह भेद हुआ कि रोटी में वे सब गुण कायम हैं जो प्रकृति ने अनाज के पौदे में दिये थे जबकि बीयर में से ये गुण कुचलने और सड़ाने में रासायनिक परिवर्तन होने पर जाते रहे। यहां हम इस बात को प्रमाणित करते हैं कि रोटी में पौद के गुण कायम हैं।

एक तश्तरी में थोड़े-से जो अथवा गेहूं कुचल कर रखो, तश्तरी को गरम करो। अनाज पहले काला पड़ेगा और फिर जलने लगेगा और यदि तेज आंच बराबर जारी रहे तो यह जलकर कोयला हो जायगा। अब इन कोयलों को और भी तेज आंच से जलाओ। धीरे-धीरे कालापन चला जायगा, क्योंकि अधिक टेम्प्रेचर की वजह से कार्बन हवा की ऑक्सीजन से मिलकर कार्बन डाइआक्साइड बन गया। जब तमाम कालापन मिट जायगा तब वे दाने सफेद भस्मी हो जायेंगे। इस भस्मी में अनाज के खनिज क्षार मिले हैं। अब इसी प्रकार रोटी को जलाइये तो अन्त में उसकी भी सफेद भस्मी में वही खनिज क्षार मिलेंगे। दोनों एक ही चीज हैं। दोनों के गुणों में कोई तब्दीली नहीं हुई। इससे यह बात प्रमाणित हुई कि अनाज की रोटी बनाने से अनाज के पौष्टिक तत्त्व नष्ट नहीं हुए। रोटी और बीयर का भेद इस प्रकार है :

रोटी

पानी	प्रतिशत	३७.०
Albumenoid	,,	८.१
शक्कर	,,	३.६
Fat	,,	१.६
खनिज	,,	२.३
स्टार्च	,,	४७.४
		१००.०

बीयर

पानी	प्रतिशत	८३.१२५
Albuminoid	,,	०.६१३
शक्कर	,,	१.७७०
खनिज	,,	०.४१२
Extractive	,,	८.१९०
अल्कोहल	,,	५.८९०
		१००.०००

शराब उसी में से बन सकती है जिसमें स्टार्च या शक्कर होगी। प्रकृति के दिये हुए मधुर और पके हुए फलों को नष्ट करके हम शराब बनाते हैं जो भयंकर नशा है। यहां हम एक तालिका देते हैं जिससे यह प्रकट होगा कि कौन कैसी शराब बनाते हैं।

कौन जाति बनाती-पीती है	नाम शराब	किससे बनाते हैं
हिन्दू, मलाया निवासी	अर्क	चावल, सुपारी (खालियां)
ग्रीक, तुर्क	राकी	चावल
हिन्दू	ताड़ी	नारियल, ताड़ी
मराठे	बोजा	Eleusine Corocana
चीनी	शमशू	चावल
जापानी	साके	चावल
पैसेफिक टापू	कैवा	Macropipeo
मैक्सीकन्स	पुलक्ये	Agaue
दक्षिणी अमेरिकन	चीका	मक्का, ज्वार
तातारी	कौमिस	घोड़ी का दूध
रूसी, पोल (प्र.व) के निवासी	वोदका राड़ा	आलू
अबेसीनियन	ताम्बा	बाजरा, कोदई, कटुनी

इनके अलावा शराब भी जैसे करन्ट, रसभरी, रूहुबर्ब, गूजबेरी, आदि विभिन्न देशों में बनाई जाती है परन्तु किसी भी फल में प्रकृति ने अल्कोहल प्रदान नहीं किया, मनुष्य ने उन्हें सड़ाकर अल्कोहल उत्पन्न किया है।

सड़न

अंग्रेजी कोष में वाइन का अर्थ अंगूरों का सड़ा हुआ रस है। इसके बाद इसमें और भी अर्थ सम्मिलित कर लिये गये। प्राचीन काल में रस और शरबत को शराब समझते और कहते थे। इस रस और शरबत से नशा नहीं होता था, बल्कि मन और शरीर पुष्ट होते थे। आजकल रस और शरबत शराब से भिन्न वस्तु हो गये हैं और जो जितनी अधिक बढ़िया शराब पीकर नशा करता है वह उतना ही अमीर समझा जाता है।

कुछ लोग कहते हैं कि घर की बनी शराब से नशा नहीं होता, क्योंकि इसमें अल्कोहल कहां से आया, हमने तो मिलाया नहीं। अल्कोहल या स्प्रिट मिलाई नहीं जाती, वह तो सड़ान से स्वतः रासायनिक रूप में उत्पन्न होती और बनती है। हम इस बात को प्रयोग द्वारा बतलाते हैं :

एक चौड़े मुंह की बोतल में दो बड़े चम्मच शक्कर डालो और बोतल का एक तिहाई भाग गुनगुने पानी से भर दो। खूब हिलाओ। फिर उसमें थोड़े से सूखे फेन या ताजे फेन डालकर और हिला दो। ऊपर से बोतल का मुंह कार्ड बोर्ड से ढक दो। इस बोतल में तीन ही चीजें हैं, स्प्रिट या अल्कोहल नहीं है। कुछ ही घंटों बाद उसमें अल्कोहल पैदा होने लगेगी। यह अल्कोहल कहां से आई ? सड़ाव से। सड़ने के बाद शक्कर की अल्कोहल और कार्बनडाइआक्साइड बन गई। यदि हम बोतल को और भी १-२ घंटे तक देखते रहें तो उसमें सड़न की गंध आने लगेगी और छोटे-छोटे बबूले उठते हुए नजर आयेंगे। यदि हम ढक्कन हटाकर एक

या बत्ती जलाकर एकदम अन्दर ले जावें तो वह बुझ जायगी। इससे यह प्रमाणित हुआ कि बोतल में साफ हवा नही है, बल्कि कार्बन डाइआक्साइड है जिसने बत्ती को बुझा दिया। अब इस बोतल का थोड़ा मिश्रण डिस्टिलिंग यन्त्र मे डालकर परीक्षण करें तो अल्कोहल भी प्रमाणित हो जायगी।

ऐसे ही फेनों को एकत्र करके भट्टी मे चुआ कर शराब बनाते और फिल्टर करके बोतलों में भरते हैं जैसा कि अगले प्रकरणो में वर्णन किया जायगा।

अंगूरी शराब

शराब बनाने के लिए अंगूर जैसे श्रेष्ठ फल को भी नष्ट किया जाता है। शराब बनने पर अंगूर के बहुतसे गुण नष्ट हो जाते हैं। यहां हम अंगूर और वाइन (अगूर की शराब) के गुण अलग-अलग लिखते हैं :

पानी	८०.०	पानी	७८.०
खार	०.४	खार	०.२
Albumen	०.७	Albumen	०.३
चीनी	१३.०	चीनी	३.५
Cellulose	५.१	अल्कोहल	१७.५
Tartaric acid	०.८	Refuse	०.५
	१००.०		१००.०

अंगूरों में भी प्रकृति ने अल्कोहल नही दिया। अंगूर सर्वप्रिय फल है और उसकी अनेक जातियां हैं। योरोप मे दो हजार प्रकार के अंगूरों की पौद होती है। और सभी देशों में लोग इसे जानते हैं। कवियों ने इसकी तुलना में अपनी कविता को रंग दिया है। अंगूर का कोई भाग व्यर्थ नहीं जाता, यह देखने में आकर्षक, खाने में स्वादिष्ट, और गुणों में पोषक तत्व है। काबुल से परे इसे सुखाकर मुनक्के और किसमिश बनाते हैं, और वहां

के निवासियों का यही भोजन है। यह ऐसी जमीन में पैदा होता है, जहां अन्य पौद नहीं हो सकती। खूब रोशनी हो, पहाड़ी प्रदेश की ढालू और दरदरी मिट्टी हो। अंगूर के पौदे को जितना प्रकाश और हवा मिलेगी उतना ही वह पनपेगा।

अंगूर की ऊपरी तह पर खुर्दबीन से फेन के सूक्ष्म परमाणु देखे जा सकते हैं। ये परमाणु यदि अन्दर की तह तक पहुंच सकते तो अंगूर में स्वतः अल्कोहल होती परन्तु अंगूर छिलके में बन्द रहता है उसमें न पानी प्रवेश कर सकता है न हवा, इसलिए ऊपरी सतह पर रहने वाले परमाणु अन्दर प्रवेश नहीं कर पाते। छिलका कट जाने अथवा फट जाने से जिन अंगूरों में ये प्रवेश कर लेते हैं वे अंगूर सड़ जाते हैं।

शराब बनाने के लिये पहले अंगूरों को मथ कर रस निकालते हैं। यह रस प्राचीन समय मे पैरो से कुचल कर निकाला जाता था, अब मशीनो से निकाला जाता है। इस रस को मस्ट कहते हैं। मस्ट मे अंगूर के समस्त गुण और पोषक गुण उपस्थित रहते है। फिर इसे सड़ाते और फेन उत्पन्न करके शराब चुआते है। सड़ने पर उसके सभी गुण नष्ट हो जाते हैं और फिर अंगूर-अंगूर नहीं रह जाता।

दुनियां में शराब बनाने के अनेक बड़े-बड़े कारखाने हैं। पेरिस की नुमायश में दुनिया के प्रत्येक भाग से ६५०० कलाल अपनी-अपनी शराबों के ३५००० भिन्न-भिन्न नमूने लेकर आये थे।

यदि हम अंगूरो का ताजा रस निकाल कर पियें तो वह एक शक्ति-शाली पेय है। अंगूरो के रस को बहुत दिनों तक रखने और सड़न से बचाने के कुछ उपाय हम यहा बतलाते हैं:—

१. उसे थोड़ी गरमी पहुंचाई जाय (६० या १४० डिग्री फेरेनहाइट से ऊपर तापमान की गरमाई मे उसमें सड़न नही होगी।)
२. उसे ठंडक पहुचाई जाय। (५ या ४० डिग्री फेरेनहाइट से कम तापमान की ठंड मे उसमें सडन नही होगी।)
३. उसका शर्बत बना कर रखा जाय, या उसे पकाकर सुखा लिया

जाय।

४. उसमें इतनी शक्कर मिलाओ कि वह गाढ़ा शरबत हो जाय।

५. उसमें सड़न रोकने वाली चीजें मिलाई जायं, जैसे salicylic Boric, sulphurous, Ben2aic and cinnamic acids,

६. रस के सार को अलग कर दिया जाय।

७. उसे मूर्छित करके रख दो जहां वायु का प्रवेश न हो।

प्राचीन काल में लोग इन उपायों को भली-भांति जानते थे, और जहां तक हमारा विश्वास है वे इन्ही उपायों से रखे हुए रसो का पान करते थे। इनमे अल्कोहल न होने की वजह से इन्हें शराब नहीं कहा जा सकता। अब भी किन्हीं पाश्चात्य देशों में बिना सड़ाव की शराब बनाई जाती है। उसमें रस को थोड़ा गरम करके, जिससे उसमें फेन के परमाणु मर जायं, हवा बन्द बोतलो में भर कर रख देते हैं। ऐसी शराब धार्मिक व्यवहार मे लाई जाती है। मेसर्स फ्रेन्क रिट, मण्डे एण्ड कम्पनी, केन्सिंगटन ने इसी प्रकार की शराब बनाकर बहुत बड़ा व्यवसाय फैला लिया था। वे डाक्टरी शराब भी बनाते हैं जिसमे अल्कोहल नहीं होता। स्वीटजरलैंड में 'हेल्त-अल्कोहल-वाइन कम्पनी' ने बिना अल्कोहल की शराब बना कर अपने देश में इसी को पीने की लोगों से प्रेरणा की है। ऐसा ही प्रयत्न Ararat, victia, austrlia ने भी किया है। वहां इस प्रयत्न के सफल होने की पूर्ण आशा है क्योंकि वहां अंगूर बहुत पैदा होते हैं। इन देशो में ऐसी शराब बनाने के बहुत बड़े कारखाने हैं, अंगूरो के ढेरो को मशीन में कुचल कर रस निकालते हैं, फिर इस रस को नितार कर गरम करते हैं, गरम करके हवाबन्द बड़ी-बड़ी जारों में रख देते हैं जिससे इनमें सड़न न हो। एक वर्ष बाद इसे खोल कर फिल्टर करके बोतलो में भर कर बाजार मे बेचते हैं। इनका विज्ञापन ही यह होता है—"Grape Juice the best drink", अर्थात 'श्रेष्ठ पेय—अंगूर का रस'।

यहां हम एक प्रयोग मूर्छित करने का बतलाते हैं :—

एक साफ बोतल में थोड़ा ताजा दूध भरो और गरम करो, यहां तक

कि वह उबलने लगे। बोतल में से भाप निकलेगी, भाप के साथ बोतल की हवा भी निकलेगी गरमी से बोतल के या दूध के परमाणु मर जायेंगे। दूध गरम करने से पहले, ऊनी या रूयेदार कपड़े के दो-चार छोटे टुकड़े चूल्हे पर गरम होने को रख देने चाहिएं। ये अच्छी तरह गरम तो हो जायं किन्तु जलें नहीं। गरम होने से इनकी हवा निकल जायगी तथा इनके परमाणु भी नष्ट हो जायेंगे। जब दूध उबल रहा हो, तब इन गरम कपड़ों के टुकड़ों को दूध की बोतल में डाट की तरह भर दो और बोतल को ठंडा होने के लिये रख दो। कपड़ों की डाट के मार्ग द्वारा हवा बोतल में प्रवेश कर सकती है, पर इसके सब परमाणु कपड़े मे ही अटके रहेंगे, अन्दर दूध में नहीं जा सकेंगे। इस प्रकार दूध एक-दो वर्ष तक मीठा और स्वादिष्ट बना रह सकता है। पर इतना ध्यान रखिये कि दूध को प्रतिदिन एक बार थोड़ा उबाल देना चाहिए। यह सत्य है कि दूध नित्य उबाले जाने से एक दिन अवश्य गाढ़ा हो जायगा, परन्तु यह बिगड़ेगा नहीं, सड़ेगा नहीं। इसे आप चाहें जब पी सकते हैं, वही स्वाद रहेगा। हम अपने घरों में एक-दो दिन भी दूध को सुरक्षित नहीं रख सकते क्योंकि हवा के परमाणु उसमे पहुंचकर उसे बिगाड़ देते हैं।

शराब बनाने का थोड़ा ज्ञान हमें ज्ञात हो चुका है। शराबों में अल्कोहल की मात्रा एकसी नहीं होती, ६ प्रतिशत से २४ प्रतिशत तक होती है।

Claret शराब में सबसे कम अल्कोहल होती है इसलिए वह सबसे कमजोर शराब होती है। Port और Marsala शराब सबसे तेज होती हैं। जिस शराब मे १४% से अधिक अल्कोहल होती है, उसे तेज समझ लेना चाहिये। क्योंकि सड़ाव में से १४प्रतिशत अल्कोहल बन चुकने पर फेन बनने बन्द हो जाते हैं। ब्रिटिश वाइन, जैसे ओरंज वाईन, रसभरी वाइन आदि इनमें १० से १२ प्रतिशत अल्कोहल होता है। सेव की Cider, और नाशपाती की Perry शराब में ५ से १० प्रतिशत तक अल्कोहल होता है।

चुआना

सभी प्रकार की अल्कोहली शराब चुआ कर बनाई जाती हैं। अर्थात सड़न के बाद उस पदार्थ को भाप द्वारा पानी बनाते हैं। चुआना अथवा अर्क खीचना अति प्राचीन पद्धति है। कहते हैं कि सबसे पहले यह पद्धति चीनियों को ज्ञात थी। चीनियों से और लोगों ने सीखी। प्रसिद्ध रासायनिक आइकेसिस को एक ऐसा अर्क तैयार करना पड़ा जो जीवन को अमर बनाने वाला था, उसी अर्क के लिये उसने इस पद्धति को चलाया। प्राचीन भभके का आकार-प्रकार बहुत ही भद्दे ढंग का था। ज्यों-ज्यों सभ्यता बढ़ती गई त्यों-त्यों नये रूप बनते गये। आधुनिक काल में ये भभके मशीन की शक्ल में बनाये जाते हैं जिसमें आंख मीच कर अर्क खींच सकते हैं। बारम्बार आग ठीक करने और ठंडा पानी बदलने का झंझट नहीं करना पड़ता। आयरलैंड और स्काटलैंड में इन यन्त्रों द्वारा अल्कोहल और ईथर दोनों ही खीची जाती हैं। तेज अल्कोहल और ईथर में से स्प्रिट खींची जाती हैं।[1] स्प्रिट खीचना बहुत सावधानीऔर फुर्ती का काम है। Coffey के कारखाने मे इस प्रकार की आधुनिक मशीन लगी हुई है जिसमे दो अथवा अधिक आंच एक ही साथ खिंच जाती हैं। Coffey की भट्टी एक स्टैंडर्ड भट्टी मानी जाती है। इस भट्टी में ६५ डिग्री से ६७ डिग्री तक की एकसी स्प्रिट तैयारहोती रहती है। चुआने के बाद शराब तैयार हो जाती है। उसे फिल्टर करके हवा-बन्द बोतलों मे भर कर रख देते हैं। पुरानी होने पर व्यवहार मे लाते हैं, जितनी पुरानी होगी उतनी ही 'अच्छी' मानी जाती है।

यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन एक पिन्ट बीयर पीये तो एक वर्ष मे दो गैलन अल्कोहल उसके पेट में पहुंचेगी।

---

१. यहां स्प्रिट का अर्थ औषध मे प्रयोग आने वाली वस्तु 'सार' है। जलाने की स्प्रिट इससे भिन्न होती है।

बहुत-सी स्प्रिट इस प्रकार बनती हैं :

(१) ब्रान्डी : यह वाइन से अथवा वाइन के बचे हुए तलछट और मसालेसे बनती है। एक हजार गैलन वाइनमें १००-१५०गैलन तक वाइन स्प्रिट निकल आती है। (२)रम : रमशक्कर को जोश देकर और सड़ाकर बनाई जाती है। शक्कर के झाग और मैल में पानी मिलाकर, सड़ा कर खींचने से साधारण रम तैयार होती है। (३) विस्की और जिन : इन्हें अनाज को सड़ा कर बनाते हैं, लेकिन आलू, शक्कर, शक्कर का मैल और चुकन्दर की जड़ से भी बनती हैं। सौ पौंड माल में चालीस पौंड प्रूफ स्प्रिट बैठती है। एक बुशल माल्ट अनाज में दो गैलन प्रूफ स्प्रिट बैठती है। आठ बुशल सड़े हुए माल्ट में बीस गैलन प्रूफ स्प्रिट बनती है।

ब्रान्डी को डाक्टरी उपयोग में इसलिए लाते हैं कि इसके गुण डाक्टरी उपचार में आ सकने योग्य हैं। और इस बात की चेष्टा की जा रही है कि ब्रांडी के गुण और उपचार सर्वत्र समान हो जायं जिससे डाक्टरों और मरीजों को 'अल्कोहलशक्ति' का निर्धारित ज्ञान हो सके। और भी कुछ पदार्थ हैं जो ब्रांडी के समान ही लाभ करते हैं और जो अल्कोहल के दोष से रहित हैं। डाक्टर जे० जे० रिज बेहोशी, धड़कन और दर्दों को हरने के लिये ब्रांडी के बदले में इन उपायों का प्रयोग बताते हैं :

१. पानी, जितना गरम पिया जा सके, थोड़ी शक्कर मिलाकर या ऐसा ही चूस-चूस कर घूंट-घूंट पीजिये। ठंडा पानी भी चुस्की ले-लेकर पी सकते हैं। यह दिल की चाल को बढ़ाकर ठीक करता है।

२. अदरक—६ माशे अदरक को कुचल कर दो छटाक उबलते हुए पानी में डालो, और उतार कर छान लो। फिर थोड़ी शक्कर मिलाकर गरम-गरम घूट पीओ।

३. पोदीने को कुचल कर उबलते पानी मे डालो। छान कर थोड़ी शक्कर मिलाकर गरम-गरम घूट पीजिये।

अल्कोहल और पानी

अल्कोहल देखने में पानी के समान है, परन्तु इसके गुण उससे सर्वथा भिन्न हैं। पानी का जो उपयोग हो सकता है, वह अल्कोहल का नहीं हो सकता। यदि पानी का घनत्व १ मान लिया जाय तो अल्कोहल का घनत्व .८०६५ होगा। इससे यह सिद्ध हुआ कि पानी से अल्कोहल हल्की और पतली है।

एक कांच की ट्यूब में थोड़ा अल्कोहल भरो और किसी हल्के रंग से रंग दो। एक दूसरी ट्यूब में थोड़ा पानी भरो और इसमें पहली ट्यूब में से धीरे से अल्कोहल डालो। अल्कोहल पानी मे डूबेगी नही, पर यदि उसे हिला कर मिलाओ तो मिल जायगी। चूंकि एक चीज हल्की है दूसरी भारी, इसलिए एक पिन्ट अल्कोहल और एक पिन्ट पानी मिलकर एक क्वार्ट नही हो सकेंगे। ऐसा १०० क्वार्ट मिश्रण बनाने के लिये ४६ क्वार्ट पानी और ५५ क्वार्ट अल्कोहल मिलाना पड़ेगा। यों तो ४६ और ५५ मिलकर १०४ होते हैं। परन्तु वह मिश्रण १०० ही बनेगा। दोनों तरल वास्तव मे एक-दूसरे में घुले हैं, मिले नही।

यदि हम कांच के एक गिलास मे बराबर-बराबर मात्रा मे अल्कोहल और पानी मिलावें और अच्छी तरह मिला दें तो हमे तीन बातें दीखेंगी—

१. छोटे-छोटे बबूले निकलते नजर आयेंगे। पानी मे हवा मिली रहती है, और अल्कोहल के मिश्रण से हवा के बबूले बनने शुरू होते हैं।

२. दोनों में मिलने से गरमी उत्पन्न होगी और गिलास छूने से कुछ गर्म प्रतीत होगा।

३. दोनों तरल पदार्थ बराबर-बराबर हैं फिर भी गिलास मे उन्होने दूनी जगह से कम जगह घेरी है।

सब पदार्थ अपने-अपने कार्य मे अच्छे हैं। परन्तु विपरीत कार्य करने से वे विष के समान हो जाते हैं। पानी पेट और अंतड़ियों के लिये अच्छी

चीज है और वह दिन-भर में बहुत-सा हमारे पेट में पहुंचता है, परन्तु यह फेफड़ों के लिये हानिप्रद है। यदि यह फेफड़ों में रम जाय तो कुछ ही मिनटों में मृत्यु हो जायगी। carbon dioxide पेड़ों के पनपने के लिये जीवनमूल है, पर यदि कोई जीव या जानवर इसमे सांस ले तो वह समाप्त हो जायगा। अल्कोहल भी ऐसी ही चीज है, यह हमेशा भयानक और खतरनाक है।

इस बात को सदैव ध्यान मे रखना चाहिये कि अल्कोहल जितनी भी अधिक पी जायगी उतनी ही अधिक यह विष है।

अल्कोहल मे यह विशेषता है कि वह किसी भी वस्तु को सख्त और बेघुली बनाये रखेगी। हम अजायबघरों और मेडिकल कालिजों मे बड़ी-बड़ी कांच की जारों में भरे हुए जानवरों, पक्षियों और मनुष्य-शरीर के हिस्सों को अल्कोहल में डूबे हुए देखते हैं। ये चीजें कई वर्ष तक बिना बिगड़ी बनी रहती हैं। एक बार एक डाक्टर ने कहा था "कि यदि तुम किसी मृतक शरीर को चिरकाल तक रखना चाहते हो तो उसे अल्कोहल मे डुबो कर रखो, पर यदि तुम जीवित शरीर को मारना चाहते हो तो उसे अल्कोहल पीने को दो।"

पांच कांच की ट्यूबें लो, एक में मछली, दूसरी मे मांस, तीसरी में रोटी, चौथी में शक्कर और पांचवी में मुनक्के डालकर उनमें अल्कोहल भरकर डाट कस दो, और बहुत दिनों तक रखा रहने दो। आप जब भी देखेंगे सब चीजें ज्यों-की-त्यों पायेंगे, वे घुलेंगी नही। इससे सिद्ध हुआ कि यदि हम भोजन में अल्कोहल का व्यवहार करें तो यह भोजन के पचने में बाधा डालती है।

दो ट्यूबों में नमक डालो। एक में पानी और दूसरी में अल्कोहल भर दो। थोड़ी देर बाद देखने से पता लगेगा कि पानी ने नमक को घोल दिया है, अल्कोहल ने नहीं। इसी प्रकार शक्कर को भी देखो। शक्कर पानी में घुल जायगी, अल्कोहल मे नहीं।

कांच के दो गिलास लो, एक में पानी भरो दूसरे में अल्कोहल, दोनों

में मिश्री की एक-एक डली को रंगकर धागे से लटका दो। ध्यान से देखने पर मालूम होगा कि पानी ने रंग भी घोला है और मिश्री भी। किन्तु अल्कोहल ने रंग को घोला, मिश्री को नहीं।

अल्कोहल भोजन को पचने से रोकती ही नहीं बल्कि वह घुले हुए भोज्य रस को अलग भी कर देती है। एक गिलास मे नमक का घोल बनाओ। पानी को गरम करके उसमें नमक घोलो, वह घुल जाय तब और डालो, जब तक घुलता जाय तब तक घुलाते रहो, जब घुलना बन्द हो जाय और नमक तली में बेघुला बैठने लगे, तब घोलना बन्द कर दो। ऐसे घोल को ठंडा करके नितारकर दूसरे गिलास में ले लो। अब यदि इस घोल में थोड़ा अल्कोहल डालो तो देखोगे कि घुला हुआ नमक अलग होकर नीचे गाद की भांति बैठ गया है। जो काम पानी ने किया था उस काम को अल्कोहल ने विफल कर दिया है।

दो गिलास और लो। एक में अल्कोहल भरो और दूसरे में पानी। दोनों में अंडे की सफेदी डालो। अल्कोहल में अंडे की सफेदी सिमटकर कड़ी हो जायगी, पानी में वह थोड़ी घुलेगी। पानी में गरम करके अंडे को पकाते हैं, तब भी वह कड़ी तो हो जाती है परन्तु सुपथ्य रहती है। अंडे को धीमी आंच से इतना पकाना चाहिए कि वह अधिक कड़ा न हो जाय। बहुत तेज १८० डिग्री फारेनहाइट और २१२ डिग्री फारेनहाइट पकाने से वह कड़ा और अपथ्य हो जाता है। इन प्रयोगों से यह प्रमाणित होता है कि अल्कोहल पानी की तुलना मे भोजन नहीं अपितु विष है। वह पचे हुए भोजन में भी बाधा डालता है। प्रकृति ने हमें पानी दिया है और हमें जब-जब प्यास लगती है तब-तब हम पानी पीते हैं, अन्य पेय उसकी बराबरी नहीं कर सकते। अधिक पानी पीना पेट को निर्मल और शुद्ध ही करता है। जिस प्रकार प्रकाश और अंधेरा, गरमी और ठंडक, आग और पानी एक-दूसरे के विपरीत और शत्रु है, उसी प्रकार अल्कोहल और पानी परस्पर विपरीत और शत्रु हैं।

जिस प्रकार हवा हमें जीवित रखने के लिए आवश्यक है उसी प्रकार

पानी भी आवश्यक है। बिना पानी हम जीवित नहीं रह सकते। मनुष्य-शरीर के लगभग ६० प्रतिशत अवयव यानी रगों और पुट्ठों के लिए पानी परमावश्यक है। हड्डी में २२ प्रतिशत, नसों में ७६ प्रतिशत, रक्त मे ७० प्रतिशत, अंतड़ियों के रस मे ९७ प्रतिशत पानी का अंश रहता है। यदि हमें पेय पदार्थों में केवल पानी ही मिलता रहे तो हमारा शरीर कभी रोगी नहीं हो सकेगा।

एक बार मैराण्डा पहाड़ियों की एक खान में चार आदमी और एक लड़का कैद करके बन्द कर दिये गये। उन्हे खाने को कुछ नहीं दिया गया, केवल पानी का एक स्रोत उसमें बहता था। इनमे से एक आदमी के पास चोरी से शराब की एक बोतल छिपी रह गई थी। दस दिन के बाद जब उन्हे छोड़ देने के लिए निकाला गया तो पता चला कि उस व्यक्ति ने पानी को छुआ भी नहीं, शराब ही पी, वह आठवें दिन ही मर चुका था। शेष सबने पानी-ही-पानी पिया और वे जीवित निकले।

अल्कोहल एक विष है

अल्कोहल पानी के विपरीत ही नहीं, बल्कि एक तीव्र विष है। भोजन में यह गुण होना चाहिए कि वह शरीर का पोषण करे, नसों को बढ़ावे और शक्ति उत्पन्न करे। लेकिन विष मे यह गुण नहीं होते। भोजन जीवन देता है, विष जीवन लेता है। डाक्टर लेयवे विष की परिभाषा इस प्रकार करते हैं—"जो पदार्थ जीवित शरीर की नसों की चेतन शक्ति को नष्ट करता है अथवा जीवन का ह्रास करता है वह विष है।"

अल्कोहल के विषैले प्रभाव इस प्रकार हैं।

१. नशा करती है। मस्तिष्क मे उत्तेजना और व्याकुलता उत्पन्न करती है, मस्तिष्क के विकास को रोकती है, ज्ञान तन्तुओं को समेटती है।
२. नसों और पुट्ठों की छोटी सेलों को नष्ट करके उनका बढ़ना रोक देती है।

३. आक्सीजन के प्रचार को रोकती है जिससे चरबी बढ़ने लगती है।

कुछ लोग कहते हैं कि शराब नशा करती है इसलिए इसे विष कहते हैं, परन्तु शराब तो सोसायटी की एक दिलचस्प चीज़ है यह विष नहीं हो सकती। किन्तु हम वैज्ञानिक प्रयोग द्वारा इसकी अन्य विषों से तुलना करके बतायेंगे कि यह घातक विष है।

चार ट्यूबों में बराबर कच्चे अंडे की सफेदी डालो। एक ट्यूब में Nitric acid और दूसरी में Carbolic acid, तीसरी में Carrosive Sublimate और चौथी में अल्कोहल भरो। सबको हिला-हिलाकर रख दो। थोड़ी देर बाद देखोगे कि सब में अंडे की सफेदी एक ही तरह से जम गई है। यद्यपि चारों पदार्थ भिन्न-भिन्न गुणों वाले हैं परन्तु सबका रासायनिक प्रभाव एक है। इससे यह सिद्ध हुआ कि अल्कोहल भी शेष तीनों जैसे गुण रखती है। ये तीनों चीजें विष हैं। इसलिए अल्कोहल भी विष हुई। पौधों और पशु-पक्षियों पर अल्कोहल के अनेक प्रयोग करके देखे गये हैं और बराबर यह प्रमाणित हुआ कि अल्कोहल विष है। अमेरिकन डाक्टर सर बी० डब्लू० रिचर्डसन ने एक बार महूसा मछली पर यह प्रयोग किया। क्यूगार्डन्स के तालाब विक्टोरिया रेजिया में पानी का टेम्प्रेचर ८० डिग्री फारेनहाइट रखा जाता है, उसमें महूसा मछली पलती है। पानी के दो बर्तन लिए गये, प्रत्येक में १००० ग्रेन तालाब का पानी भरा गया। एक बर्तन में एक ग्रेन अल्कोहल डालकर अच्छी तरह मिला दी गई। फिर दोनों में एक-एक महूसा मछली डाली गई। अल्कोहल का तत्काल प्रभाव देखने में आया, दो मिनट में ही मछली की हरकतें जो एक मिनट में ७४ गिनी गई थीं बन्द हो गई, और वह नीचे बैठती गई। वह बहुत सिकुड़ गई थी। पाच मिनट के बाद वह बिल्कुल पेंदी में गिर पड़ी और जड़वत् हो गई। इसे तुरन्त निकालकर, एक-दूसरे बर्तन में जिसमें खाली टैंक का पानी भरा था, डाला गया और २४ घंटे तक उसी में पड़ी रहने दी गई, पर वह अच्छी नहीं हुई। जबकि दूसरे बर्तन वाली मछली बराबर एक-सी

हरकत करती और खेलती रही। इससे यह प्रमाणित हुआ कि १०००वें पानी में अल्कोहल का १वां भाग भी जीवन के लिए कितना भयानक है। डाक्टर रिचर्डसन कहते हैं कि मछुआ पर यह प्रयोग मैंने अनेक प्रकार से करके देखा, मनुष्यों पर भी करके देखा, प्रत्येक अवस्था में अल्कोहल का विषैला प्रभाव हुआ।

डाक्टर जे० जे० रेजे ने वनस्पतियों पर अल्कोहल के प्रयोग किये थे। उन्होंने बीजों को अल्कोहल और पानी के समीप रखा और धूप, रोशनी तथा खाद की एक-सी व्यवस्था की। परन्तु अल्कोहल ने उन्हें पनपने नहीं दिया, अधिक अल्कोहल के कारण वे मर गये। डाक्टर एफ० डब्लू० डेव-स्थन ने प्याज पर प्रयोग करके देखा। उन्होंने प्याज को पानी और अल्कोहल दोनों मिलाकर बोया। अल्कोहल ने प्याज को बढ़ने नहीं दिया। यदि अल्कोहल अधिक डाली गई तो प्याज बिल्कुल ही मर गई। आलू और गेहूं पर भी इसी प्रकार के प्रयोग किये गये और सबका एक ही परिणाम रहा। सड़न में सेजो १४ प्रतिशत से अधिक अल्कोहल उत्पन्न नहीं होती, सो भी इसी कारण से, क्योंकि जब १४ प्रतिशत अल्कोहल बन चुकती है तब वह फेनों की सेलों को मार देती है।

अल्कोहल के विष होने का सबसे मुख्य प्रमाण तो यह है कि वह मारती है। अल्कोहल पर आज तक जितनी पुस्तकें लिखी गई हैं, वे सभी इसे विष सिद्ध करती हैं। ब्रिटिश मेडीकल एशोसियेशन के सम्मुख अपना निबन्ध पढ़ते हुए डाक्टर आर्चडाल रेड ने कहा था कि मेरी दूसरी तजवीज यह है कि अल्कोहल एक विष है और इससे प्रति वर्ष अनेक मृत्यु होती हैं, मुझे आशा है कि मेरी इस तजवीज पर वाद-विवाद नहीं किया जायगा क्योंकि सभी व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में इसका अनुभव करते हैं। बीमा कम्पनियों ने इसके आंकड़े भी दिये हैं। मैं तो एक ही बात दोहराऊंगा कि जो अधिक सुरापान करते हैं वे अधिक विष पीते हैं।"

डाक्टर एवर्ट, सीनियर फिजिशियन एट सेन्ट जार्जहोस्पिटल, ने अपने लेक्चर में कहा था कि "अल्कोहल का नाम उन विषों में सबसे पहले दर्ज

है जिन्हें जनता अधिक-से-अधिक खा-पी सकती है।" डाक्टर प्रोफेसर सिम्वुड हेड स्पष्ट कहते हैं कि "मैं बहुत काल से इस बात का अनुभव करता आया हूं कि अल्कोहल केवल शारीरिक विष ही नही है बल्कि वह रोग-उपचार में जब अन्य औपचारिक विषों के साथ दिया जाता है तब वह उन सब विषों के प्राकृतिक गुणों को नष्ट कर डालता है और उन्हें और भी अधिक कातिल विष बनाकर रोगी को स्वस्थ करने मे बाधा डालता है।"

स्वर्गीय डाक्टर नारमनकर ने हिसाब लगाकर बताया था कि "अल्कोहल के उपचार और आक्रमण से एक वर्ष मे ४०,००० व्यक्ति मरे थे। यो प्रति वर्ष १७०० मृत्यु की खानापूरी तो सरकारी रजिस्टरो में भी दर्ज होती है।" पुराने कुछ पत्रों की सूचनाएं देखिये :—

Daily Chronicle—(२७ जनवरी १८९९) "वाल्टर सेच पैम्बरटम, आयु ४५ वर्ष, एक बीमा कम्पनी के इन्सपेक्टर, एक होटल के कमरे में मरे पाये गये। ज्यूरी ने अधिक शराब पीने का परिणाम निर्णय किया।"

Daily Chronicle—(२ फरवरी १८९९) "एडवर्ड जी० टामसेट, एक ट्रेन मे मरे पाये गये। डाक्टर निकल ने पोस्टमार्टम करके बताया कि अधिक शराब ने इन्हे मार डाला।"

Westminister—(२६ मार्च १९०२) "एक ६ वर्षीय लड़का जिसका नाम थोमस टरने था, अपने पिता की रखी हुई शराब चखने के विचार से पीते ही मर गया।"

इसी मे दूसरा समाचार यह भी था, सैंटमवार्ट मे एक जर्मन मजदूर ने होड़ में आकर तीन गिल 'नीट ब्रान्डी' पी ली। पीते ही मर गया।"

Daily Chronicle—(२५ मई १८९९) "मिस्टर जी० पी० व्याट, इंग्लैंड के कोरोनर ने घोषणा की है कि १० में से ९ मृत्यु जिनकी मैंने छानबीन की अल्कोहल के कारण थीं।"

Western Daily Mail—(२३ जून १८९९) "मिस्टर आर० के०

राइस को एक तीन वर्ष के बच्चे मेरी-खान-ईवान्स की मृत्यु की जांच करते समय ज्ञात हुआ कि उसने अपने पिता की शराब रसोई में खेलते हुए पी ली थी।"

Daily Chronicle—(४ नवम्बर १८६६) "डाक्टर ए० एम्ब्रोस ने एक ३१ वर्षीय अध्यापिका एलिजाबेथ की लाश की जांच करके ज्यूरी को बताया कि अल्कोहल के विष से यह मृत्यु हुई है।"

Daily Chronicle—(११ अक्टूबर १९०४) "न्यूयार्क शहर में पिछले ११ दिनों के अन्दर २५ आकस्मिक मौत हुई हैं। जांच करने पर पता चला कि एक दूकान्दार ने दूकान उठाने के लिए विस्की को सस्ती बेच दिया। लोगों ने खरीद कर पी। पुलिस ने पता चलाया कि वह विस्की लकड़ी की सेलों में बनाई गई थी जिससे इसमें लकड़ी की अल्कोहल का अंश आ गया था। यह विस्की चोरी से बनी थी। काफी दौड़-धूप के बाद बनाने वाले पकड़े गये हैं।"

सन् १९२१ की बम्बई के एक शराबी रईस की घटना है :

"एक प्रख्यात करोड़पति का इकलौता पुत्र करोड़ों की सम्पदा और एक १८ वर्षीय सगर्भा स्त्री को छोड़कर मरा। मृत्यु के समय उसकी आयु २४ वर्ष की थी। उसका शरीर काला, रूखा और अत्यन्त घृणित हो गया था। मुख से साफ शब्द नहीं निकालता था, गद्‌गद् वाणी से हकलाकर बोलता और उसका प्रतिक्षण प्रत्येक अंग कांपता था।"

सन् १९२३ की एक शराबी राजा की घटना इस प्रकार है :

"·········के अत्यन्त सुन्दर राजा २६ वर्ष की आयु में मर गये। उनका शरीर पीला हल्दी के समान हो गया था, नेत्र भी पीले थे, जिगर और गुर्दे फूलकर सूख गये थे, एक-एक बूंद पेशाब कष्ट से उतरता था, शरीर सूखकर हड्डी का ढांचा रह गया था, दस्त दो-चार दिन तक न उतरता था। फेफड़ा गलकर सड़ गया था। पांच-पांच मिनट में जुबान ऐंठती थी और वे शराब के सिवा कुछ न पीते थे, वे बचने के लिए आतुर थे, पर चीख-चीख कर प्राण निकल गये।"

अल्कोहल का प्रयोग

अभी तक हमने यही देखा है कि अल्कोहल बनाने में अनेक खाद्य-पदार्थों को नष्ट किया जाता है और यह भयानक विष है। अब प्रश्न यह उठता है कि अल्कोहल किसी प्रयोग में आ भी सकती है या नहीं? इसलिए हमें इसके गुणों का भी परीक्षण करना चाहिए।

अल्कोहल भी काम में आती है। यह विष तो अवश्य है परन्तु भोजन बना लेने पर। वैज्ञानिक प्रयोगों में यह बहुत अच्छी वस्तु है। अल्कोहल के विरुद्ध जितने भी आन्दोलन चले हैं सभी ने इस नशीली चीज को पीने और भोजन बना लेने का विरोध किया है, पर बाहरी उपचारों का नहीं। विज्ञान हमें बताता है कि अल्कोहल जीवित शरीर के बाहरी प्रयोग में आ सकता है, अन्दर नहीं।

अल्कोहल और पानी में भेद :

अल्कोहल	पानी
० १७२° डिग्री फारेनहाइट पर उबलती है।	२१२° डिग्री फारेनहाइट पर उबलता है।
० जमती नहीं।	जम जाता है।
० आसानी से आंच पकड़ लेती है।	नहीं जल सकता।
० आंच को भड़काती है।	आंच को बुझाता है।
० ईथर की गन्ध आती है।	गन्धरहित होता है।
० जलने योग्य है।	जलने योग्य नहीं है।
० चमड़ी को जलाकर झुलसा देता है।	चमड़ी को शीतल और ताजा बनाता है।
० जीवन के लिए अनावश्यक है।	जीवन के लिए आवश्यक है।
० बीजों को मार देता है।	बीजों को उपजाता है।
० भोजन को घोलती नहीं।	भोजन को मुलायम बनाता है।

▪ विष है	स्वयं भोजन है।
○ नशीली है।	नशा नहीं है।
○ शरीर को हानि पहुंचाती है।	शरीर को लाभ पहुंचाता है।
○ मल को रोकती है।	मल को निकालता है।
○ किसी भी भोजन में पैदा नहीं होती।	भोजन मे मिला रहता है।
○ प्यास पैदा करती है।	प्यास बुझाता है।

अल्कोहल में राल, चमड़ी, गोंद, कपूर आदि चीजें, घुल सकती हैं इसलिए इससे वार्निश, पालिश और सैन्ट तैयार होते हैं। बाजारों में जो उड़ने वाले बढ़िया सैन्ट बिकते हैं उनमें अल्कोहल ही उड़ती है। अल्कोहल में बहुत-सी चीजों को डुबोकर रख सकते हैं। स्कूलों, कॉलिजों, अस्पतालों और म्युजिमों में जो मरे हुए जानवर तथा अंग रखे रहते हैं, वे अल्कोहल के कारण बिगड़ने नहीं पाते।

अल्कोहल का दूसरा सुन्दर उपयोग ईथर बनाना है। ५ भाग तेज अल्कोहल और ९ भाग तेज गन्धक के तेजाब को गरम करो तो भाप को नली द्वारा किसी बर्तन मे संग्रह करते जाओ, यही ईथर है। ईथर बनाना बहुत ही नाजुक है, सावधानी से बनानी चाहिए।

क्लोरोफार्म जो शस्त्र-चिकित्सा मे मनुष्य समाज के लिए सबसे अधिक उपयोगी वस्तु है, अल्कोहल से बनता है। अल्कोहल मे ब्लीचिंग पाउडर मिलाकर चुआ लो। फिर इसे शुद्ध कर लो, और दुबारा चुआओ। ऐसा कई बार करो। यही क्लोरोफार्म है।

और इसी प्रकार कीअन्य ओषधियाँ जो डाक्टरी काम में अधिक उपयोगी साबित हुई हैं सब अल्कोहल से बनती हैं।

तीसरी खास चीज अल्कोहल से Methylated Spirit बनती है जो नित्य बहुत काम मे आती है। मैथेलेटेड स्प्रिट में ९० प्रतिशत अल्कोहल और १० प्रतिशत Wood Spirit होती है। इस Wood Spirit में Paraffin या मिट्टी के तेल का अंश होता है, इसलिए स्प्रिट पीने के काम मे नहीं आती है। अल्कोहल से टिंचर भी बनते हैं। अल्कोहल मोटर और

मोटर-साइकिलों मे पेट्रोल के बदले में भी काम आ सकती है।

संसार में तरल पदार्थों मे सबसे प्रधान पानी है, पानी के बाद दूध, दूध के बाद गन्धक का तेजाव, तेजाब के बाद अल्कोहल है। अल्कोहल अनेक रूप मे अनेक प्रकार से बनती और व्यवहार मे आती है। पाठकों में से बहुत कम अल्कोहल के इस विस्तृत क्षेत्र को जानते होंगे।

यहां हम अल्कोहल के तीन फारमूले बताते [redacted] :—

(i) Methyl Alchohal or Wood spirit—$CH_3 HO$

(ii) Ethyl Alchohal—$C_2H_5 HC$

(iii) Amyl Alchohal or Potato Alchohal—$C_5H_{11} HO$

तीनों प्रकार की अल्कोहलों को टीन की प्लेटों में रख कर नीचे आंच जलाओ तो तीनों जलने लगेंगी। पहली का धुआ रंगरहित होगा, दूसरी मे थोड़ी चमक होगी, तीसरी मे अधिक चमक और धुआं होगा। यह सब कार्बन की कम-ज्यादा मात्रा के कारण है। इनमें से पहली और तीसरी पीने में व्यवहृत नहीं होती, दूसरी होती है। अब भोजन और अल्कोहल की तुलना देखिये :

भोजन	अल्कोहल
१. एकसी मात्रा सदैव एकसा ही प्रभाव करती है।	१. एकसा प्रभाव करने के लिये प्रतिदिनमात्राबढानी पड़तीहै।
२. स्वाभाविक आहार मात्रा से अधिक लेने की इच्छा नहीं होती।	२. इसकी आहारइच्छा कभी तृप्त नहीं होती, बढ़ती ही जाती है।
३. अचानक भोजन न मिलने स्नायुमंडल डूबता पर नहीं।	३. इसका अभ्यास हो जाने पर फिर एक बार न मिलने पर स्नायुमंडल डूब जायेगा।
४. खाना देर तक खुला रखा जा सकता है।	४. अल्कोहल खुली नहीं रह सकती।
५. खाना शरीर मे जमा होता है।	५. अल्कोहल शरीर मे जमा नहीं होती।

६. भोजन में पोषक तत्त्व हैं।	६. अल्कोहल में नहीं।
७. भोजन स्वस्थ शरीर का आहार है।	७. अल्कोहल रोगी अवस्था में काम में लाते हैं।
८. चिकित्सक स्वस्थ अवस्था में भोजन त्यागने की सम्मति नहीं देगा।	८. चिकित्सक स्वस्थ अवस्था में अल्कोहल कभी न पीने देगा।
९. खाली पेट में भोजन कर सकते हैं।	९. खाली पेट अल्कोहल नहीं ले सकते।
१०. युवावस्था में खूब खाओ।	१०. युवावस्था में अल्कोहल छूना भी नहीं चाहिये।
११. भोजन खाने के पश्चात कभी सरूर नहीं होता।	११. पीने के बाद सरूर होता है।
१२. भोजन की मात्रा, मांस-पेशियों की बढ़ती के अनुसार बढ़ती है।	१२. अल्कोहल की मात्रा मांस-पेशियों के क्षीण होने पर बढ़ती है।

पानी भोजन है

भोजन का अधिक अंश पानी है। इससे शरीर के बहुत से अवयव बढ़ते और बनते हैं। शरीर में निम्न परिमाण से पानी होता है :

Bones	2[illegible]%	Skin	72%
Fatty Tissues	30	Brain	75
Cartilage	55	Muscles	76
Liver	69	Lungs	79
Marrow	70	Kidneys	83
Blood	79	Intestipal Juice	97
Bile	86	Tears	98
Pancreatic Juice	88	Gastric Juice	99
Chyle	93	Saliva	99.5
Lymph	96	Sweat	99.5

एक स्वस्थ युवा आदमी चौबीस घंटों में चमड़ी, फेफड़े और गुर्दों के द्वारा ८० से १०० औंस तक पानी खोता रहता है। इस कमी की पूर्ति के लिये प्रतिदिन ३॥ से ५ पिन्ट तक पानी की आवश्यकता है। अल्कोहल इस कमी का सूक्ष्मांश भी दूर नहीं कर सकती। प्रकृति ने पानी के सिवा अन्य कोई पदार्थ इस कमी को पूरा करने के लिये नहीं बनाया। यदि हम प्यास बुझाने के लिये दूध, कोको, काफी, चाय, लेमनेड आदि पीते हैं तो इन पेय पदार्थों में जो पानी मिला है, वही प्यास को बुझाने में सफल होता है अन्य अवयव नहीं। यह कहा जा सकता है कि जितना पानी निकल जाता है उतना पानी तो हम कभी पीते भी नहीं। परन्तु यह बात नहीं है, हम जितना असली पानी पीते हैं उतना तो पीते ही हैं, परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से भी भोजन आदि के द्वारा भी कुछ पानी पेट में पहुंचता है। नीचे हम भोजन में पानी का अंश बताते हैं :

Oat meal	5%	केला	74%
Butter	10	मछली	74
Barley meal	14	आलू	75
Haricot Beans	14	अंगूर	80
Lentiles	14	Persnips	81
Maize	14	Beat root	82
Peas	14	सेब	83
Wheaten flour	14	Peaches	85
Rice	15	Gooseberries	86
Figs	17	Milk	86
Bacon	22	Oranges	86
Cheese	34	Cabbages	89
Bread	40	Carrots	89
Walnuts Fresh	44	Tomatoes	89
Eggs	72	Mushrooms	90
Fowl	73	Onions	91
Lean meat	73	Celery	93
Water cress	93	Sea kale	93
Pears	94	Rhubarb	95
Vegetable Marrow	94	Cucumber	96
Lattuce	96		

यह न समझ लेना चाहिये कि ऊपर वर्णित पानी का अंश इन पदार्थों में पानी के रूप में ही है। यह भिन्न-भिन्न अंगों और अवयवों के सूत्रों में आबद्ध है। अब यह भली-भांति प्रकट हो जाता है कि पानी जीवन के साथ कितना अधिक सम्बन्धित है। पानी अंगों का निर्माण करता, उन्हें पुष्ट करता और स्वच्छ करके, उनके मल को निकाल कर बाहर फेंक देता है। शरीर के प्रत्येक भाग से—नसों में से, रक्त नालियों में से, अन्तड़ियों में से, मेदे में से, पेट में से, मस्तिष्क में से मल छटता रहता है। सभी अंग नित्य स्वच्छ होते रहते और मल को त्यागते रहते हैं। यदि वह मल न निकले तो हम बीमार पड़ जायं। एक मात्र पानी ही इस मल को बहाकर शरीर से बाहर करता है। अधिक मलावरोध से मृत्यु तक हो सकती है। हमारे शरीर में से प्रतिदिन यदि ३ पिन्ट पानी निकलता हो तो इसमें 1½ औंस मल जरूर मिला होगा।

अल्कोहल इस क्रिया को नहीं कर सकती। बल्कि वह शरीर के प्रत्येक अवयव को अवरोध कर देगी। शराबियो के गुर्दे प्रायः रोगी और बढ़े हुए होते हैं। ये गुर्दे झुर्रीदार और खुरदरे होते हैं। इनका रंग पीला जर्द होता है।

स्वस्थ गुर्दे का रंग गहरा लाल होगा। यह सम्भव नहीं कि प्रत्येक शराबी का पहले गुर्दा ही बिगड़े, क्योंकि शराब पहले किसी और अवयव को भी पकड़ लेती है और फिर धीरे-धीरे वहां तक पहुंचती है।

हमारे शरीर से चौबीस घंटों में हमारे फेफड़ों से १२ औंस पानी सांस की भांप द्वारा निकलता है। इस पानी में फेफड़ों का मल कार्बन डिओषित के रूप में मिला रहता है। शरीर का दूषित पानी पसीना बनकर भी निकलता रहता है। समस्त शरीर में दो लाख श्वेत-ग्रन्थियां हैं। परिपूर्ण शरीर में पसीना बहने की नाली चौथाई इंच लम्बी होती है। शरीर की सब नालियों को मिलाकर लम्बा रख दिया जाय तो इनकी लम्बाई १० से २० मील लम्बी तक हो सकती है। चमड़ी में से भाप बनकर प्रतिदिन दो पौंड पानी उड़ता है। यदि चमड़ी इतनी क्रिया नहीं कर पाती तो इस क्रिया

का भार फेफड़ों और गुर्दों पर आ पड़ता है। जिस प्रकार फेफड़ो और रक्त के लिये ताजा हवा की आवश्यकता है, उसी प्रकार चमड़ी को ठीक क्रिया मे रखने के लिये शरीर के भीतर और बाहर स्वच्छ और अधिक पानी की आवश्यकता है। इस तमाम पानी का सिंचन, जो गुर्दों, फेफड़ो और चमड़ी के द्वारा बाहर निकलता है, रक्त में से होता है, क्योंकि रक्त-वाहिनी नालियो में रक्त इन तीनो अवयवों के पास से होकर गुजरता है। इस प्रकार रक्त निरन्तर व्यय होता रहता है, इस व्यय की पूर्ति शरीर में पानी को अधिक मात्रा में पहुचाने से हो सकती है। इसीलिये पानी को आहार मे गिना गया है।

शरीर में निम्न भागो में रक्त की कमी इस प्रकार देखी जा सकती है :

१. फेफड़े	अधिक पानी
	अधिक कारबनडिओक्साइड
२. चमड़ी	अधिक पानी
	थोड़ी कारबनडिओक्साइड
	थोड़ा मल
३. गुर्दे	अधिक पानी
	अधिक मल
	थोड़ी यूरिक एसिड

प्यास

हमे प्यास उस समय लगती है जब शरीर मे से प्रतिदिन $\frac{1}{6}$ भाग मल बाहर निकल चुकता है। अधिक शारीरिक परिश्रम करने वाले मजदूरो को प्यास अधिक लगती है क्योंकि शरीर मे से पानी जल्दी-जल्दी खर्च होता है। अधिक नमक खाने से भी प्यास अधिक लगती है। प्रत्येक अवस्था मे प्यास लगने पर सदैव बिलकुल शुद्ध और निर्मल जल पीना चाहिये। जितना श्रेष्ठ जल होगा उतना ही श्रेष्ठ रक्त बनेगा, जितना श्रेष्ठ रक्त होगा उतना ही श्रेष्ठ शरीर और मस्तिष्क का विकास होगा।

यदि हम शरीर के किसी स्थान पर चमड़ी के ऊपर अल्कोहल मे डूबा हुआ ब्लाटिंग पेपर रख दें और उसे दबा दें, तो थोड़ी देर में ही उस स्थान पर झुर्रियां पड़ जायेंगी और वह लाल हो जायगा। अर्थात अल्कोहल चमड़ी के छेदों में प्रवेश करके रक्तवाहिनी नालियों में पहुंच गई। इसीलिये रोगी जिसे शराब का अभ्यास नहीं है, अल्कोहलके उपचार से सुधरने की अपेक्षा बिगड़ जाता है क्योंकि अल्कोहल शरीर के परमाणुओं को समेट कर गतिहीन बना देती है। अल्कोहल ने ज्यों ही रक्त में प्रवेश किया कि उसने तुरन्त स्वाभाविक क्रियाओं को बिगाड़ना आरम्भ किया। वह पहले नसों के जोड़ों को निर्जीव करती है, जिससे मांस-पेशियों पर नसों का अधिकार कम हो जाता है। परिणाम यह होता है कि रक्त की गति धीमी पड़ जाती है और रक्त ज्यों-ज्यों चमड़ी के समीप आता है, त्यों-त्यों शराब पीने वाले के चेहरे पर उत्तेजना और लाली झलकती है। यही क्रिया मन को चेतनाहीन और मग्न कर देती है।

दिल पर अल्कोहल का क्या प्रभाव पड़ता है? डाक्टर पारकेस और डाक्टर वूलोविज ने सबसे पहले इसका परीक्षण किया था। उन्होंने पानी और अल्कोहल की अलग-अलग खुराक पर एक स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट आदमी को रक्खा। अल्कोहल के दिनों में दिल की चाल बहुत बढ़ गई थी। यों, स्वस्थ अवस्था में २४ घंटों में दिल की धड़कन १००,००० होनी चाहिये। दिल की दो कोठरियां होती हैं, जिनमें ६ औंस रक्त का प्रवाह रहता है। यह रक्त इतनी तेजी से आता-जाता है कि यदि खुली हवा में यह छूटे तो ५ या ६ फिट की दूरी पर जाकर पड़े। दिल को यह परिश्रम १ फुट ऊंचा ११६ टन बोझ उठाने के समान पड़ता है। एक औंस अल्कोहल से ४,३०० अधिक धड़कन होती हैं, दो औंस से ८,६०० और तीन औंस से १२,९००।

इस अधिक धड़कन का यह अर्थ हुआ कि दिल को अधिक परिश्रम करना पड़ा। और यह परिश्रम निरर्थक होता है। इससे शक्ति का व्यय बढ़ता है। डाक्टर लोग जानते हैं कि दिल की चाल बढ़ जाने से रक्त के

प्रवाह में कमी आ जाती है। शरीर के प्रत्येक अवयव के लिये एक कोष होता है जिसमें रिजर्व शक्ति जमा रहती है। यह शक्ति तब काम आती है जब मूल शक्ति में कमी होती है। इसी प्रकार दिल के कोष में भी रिजर्व शक्ति होती है। अल्कोहल के प्रयोग से यह शक्ति खर्च होने लगती है। निरन्तर शराब पीने वाले व्यक्तियों का यह कोष खाली हो जाता है, कोष

जब मूल शक्ति में कमी होती है। इसी प्रकार दिल के कोष में [illegible]
का एक बूंद भी न रहने पर हार्ट फेल हो जाता है।

रक्त की सेलो में और भी अति सूक्ष्म सेलें होती हैं जो ओक्सीजन को खींचती हैं। अल्कोहल इन सेलों को सिकोड़ देती है जिससे वे ओक्सीजन खींचने में कम समर्थ होने लगती हैं। यदि अधिक अल्कोहल प्रयोग किया जाय तो वे बिल्कुल ही ओक्सीजन ग्रहण न कर सकेंगी। जितनी कम ओक्सीजन मिलेगी, उतना ही शरीर निर्बल होता जायगा, रक्त में रद्दी पदार्थ एकत्र होते जायेंगे। इससे रोग उत्पन्न होंगे। डाक्टर फ्रेंक वेसायर ने मेंढकों पर यह प्रयोग करके देखा, उन्होंने अनेक मेंढकों को टांग, दिल और सिर के बल अल्कोहल में रखा और खुर्दबीन से उनकी क्रियाओं का परीक्षण किया। सब का यही परिणाम निकला।

पचन पर अल्कोहल का प्रभाव

पुरानी कहावत है कि रक्त ही जीवन है। यदि रक्त शुद्ध और पुष्ट है तो शरीर भी पुष्ट और स्वस्थ है। रक्त का आधार भोजन है। प्रत्येक भोजन का रक्त बनता है। रक्त से मांस, मज्जा, अस्थि इत्यादि शरीर के अवयव पोषित होते हैं। भोजन रक्त बनने से प्रथम एक क्रिया करता है जिसे पचन कहते हैं। मुंह, दांत, कण्ठ, पेट, लीवर और अन्य छोटे अवयव इस क्रिया के कर्त्ता हैं।

कुछ लोगों का विश्वास है कि अल्कोहली पेय पदार्थ पचन-क्रिया को

शक्ति देते हैं। यह उनका भ्रम है। शराबी भोजन के बाद शराब पीकर कुछ गर्माई प्रतीत करता है और भोजन का भार पेट पर रखा मालूम नहीं होता, इसी आभास से वह शराब को पाचक समझता है। शराब पाचन-क्रिया को और भी दबा देती है। पचन का अर्थ यह है कि भोजन तरल पदार्थ में बदलकर रक्त में रम जाय। रासायनिक विधि, गर्मी और क्रिया इन तीन बातों से रक्त बनता है। इस विधि के लिए चार प्रकार के रस चाहियें :

१. मुंह की लार, जो स्टार्च को शक्कर बनाती है।
२. पेट का रस, जो भोजन में क्षार उत्पन्न करके उसे पचने योग्य करता है।
३. लीवर का रस, जो मल और अपथ पदार्थ को निकालकर बाहर करता है।
४. मेदे का रस (Pencreas), जो इन तीनों के बचे हुए कार्य की पूर्ति करता है।

इन सब रसों की क्रिया का यह काम है कि ये भोजन को रक्त बना दें। हम जितना भोजन करते हैं, हमें अपनी खुराक की उतनी ही मात्रा नहीं मान लेनी चाहिए। हम भली प्रकार जितना भोजन पचा सकें, वही मात्रा होती है। अधिक भोजन से हानि होती है क्योंकि आंतों को इससे निबटने के लिए अधिक शक्ति और श्रम करना पड़ता है। बाजार में बहुत-से बने हुए खाद्य-पदार्थ बिकते हैं, जिनमें उपरोक्त रसों की भांति काम करनेवाले परमाणु रहते हैं। जो शरीर में उन रसों के न रहने पर भी वैसा ही प्रभाव करते हैं। इन पदार्थों का सेवन करनेवाले की अंतड़ियां अपने स्वाभाविक कार्य को भूल जाती हैं और वे भविष्य में अपना प्राकृतिक कार्य करने के योग्य नहीं रहतीं। शरीर के इन चारों पाचक रसों में कितना पानी अंश रहता है, यह इस गणना से ज्ञात होगा :

मुंह की लार	पानी	994·1
	खनिज क्षार	2·3
	अन्य पदार्थ	3 6
		1000·0
पेट का रस	पानी	994.4
	Papsin	3·2
	Salt	1·5
	Hydrochloric acid	0 2
	Potassium chloride	0 5
	Calcium chloride	0·1
	Phosphates of Calcium, Magnesium and iron	0·1
		1000·0
लीवर का रस	Water	859·2
	Bilin	91·5
	Fat	9·2
	Cholesterin	2 3
	Mucus & colouring matter	29 8
	Salts	7 7
		1000·0
मंदे का रस	Water	980 5
	Pancreatin, Amylopsin	12·7
	Trypsin·inorganic salts	6·8
		1000 0

पेट में भोजन पहुंचने पर मांस-पेशियों का कार्य शुरू हो जाता है। कोई भोजन देर में रस बनता है, कोई जल्दी। औसतन ३-४ घंटे का समय लगता है। यहां हम इसकी एक तालिका देते हैं कि कौन भोजन कितने समय में पचकर रस बनने लगता है :

भोजन	घण्टे	भोजन	घण्टे
उबले चावल	१	गो मांस का कबाब	३
Boiled Trie	१	उबला भेड़ का मांस	३
कच्चे सेब	१॥	उबली गाजर	३।
उबली सलमन मछली	१॥	भेड़ का कबाब	३।
उबला साबूदाना	१॥।	रोटी	३॥
उबली कॉड मछली	२	उबले आलू	३॥
उबली सेम	२॥	उबली सलजम	३॥
खजला	२॥	पनीर	३॥
आलू का शाक	२॥	उबले अंडे (सख्त)	३॥
हंस का कबाब	२॥	भुने हुए अंडे	३॥
उबला Gelatine	२॥	उबली मुर्गी का कबाब	४
उबला भेड़ के बच्चे का मांस	२॥	उबला करमकल्ला	४॥
उबला गो मांस	२॥।	सूअर का कबाब	५।
कढ़ी	३	उबली कुर्री	५॥

शराब पीने से भी पेट का रस बनता है, लेकिन यह रस सुपाच्य नहीं होता। असल में इस रस में Pepsin बहुत ही कम बनती है क्योंकि रस की Pepsin सेलों को धोने में खर्च हो जाती है, और नई Pepsin बनने में अल्कोहल बाधा देती है। इसलिए शराब पीकर जो पेट का रस एकदम बढ़ता है, वह पचने की क्रिया नहीं है। शराब धीरे-धीरे पेट की रस-ग्रंथियों को क्रियारहित कर देती है।

जैनेवा यूनीवर्सिटी के विख्यात प्रोफेसर डाक्टर एल० रेविलियोड और डाक्टर पालविनेट ने इस बात की बहुत खोज की है। वे कहते हैं कि

शराब पीने वालों का पेट अन्दर की ओर सिकुड़कर मौजे की शक्ल का हो जाता है। उसमें चर्बी बढ़ जाती है। इसी प्रकारके प्रयोग डाक्टर बीयूमोन्ट ने किये थे और एक पुस्तक छपाई थी, जिस पर एक नोट डाक्टर एन्ड्र कूम्बे ने लिखा था जो सम्राज्ञी विक्टोरिया के चिकित्सक थे और बैलजियम्स के राजा-रानी के परामर्शदाता थे। डाक्टर बीयूमोन्ट एक ही लाइन लिखते हैं कि *"शराब पीने वालों को पेट की एक-न-एक शिकायत बनी रहेगी।"*

डाक्टर मुनरो ने एक प्रयोग करके यह स्पष्ट कर दिया है कि पानी भोजन को गलाता है और अल्कोहल इसके विपरीत करती है। यह प्रयोग इस प्रकार था :

गौ मांस को बारीक कूटकर किमाम करके तीन बोतलों में डाला, इनमें थोड़ा-थोड़ा 'पेट का रस' भी एक बछड़े के पेट में से निकालकर मिलाया गया। अब पहली बोतल में पानी, दूसरी में अल्कोहल और तीसरी में पीली शराब (Paleale) डालकर हिलाकर रख दिया गया। सब का टेम्प्रेचर १०० डिग्री रखा गया। तीनों में पेट की भांति निम्नलिखित क्रिया हुई :

मांस में किसमें मिलाया	चौथे घंटे बाद प्रभाव	आठवें घंटे बाद प्रभाव	दसवें घंटे बाद प्रभाव
पहली बोतल पेट का रस और पानी	पचन क्रिया आरम्भ	बारीक रेशे बन गये	घुलकर रस बन गया
दूसरी बोतल पेट का रस और अल्कोहल	रंग धुंधला हो गया, मांस में क्रिया नहीं हुई	मांस में अब भी क्रिया नहीं हुई	मांस ऐंठ कर सिकुड़ गया, पेपसिन तल में बैठ गई।
तीसरी बोतल पेट का रस और पीली शराब	मांस पर रूएं जमकर बादल-से बन गये	जरा-सा मांस कम हुआ	पेपसिन तल में बैठ गई पचन क्रिया नहीं हुई

यह क्रिया बिल्कुल मनुष्य शरीर-क्रिया जैसी थी क्योंकि डाक्टर मुनरो ने शरीर-यन्त्र जैसे ही यन्त्र लगाये थे। इससे यह स्पष्ट है कि पीली शराब में अल्कोहल का अंश थोड़ा भी होते हुए पचन-क्रिया नहीं हुई। 'पेट के रस' में पेपसिन एक अंश है, इसे भी अल्कोहल ने निकालकर अलग कर दिया।

सर विलियम राबर्ट्स ने पेट पर अल्कोहल के अनेक प्रयोग करके देखे थे, उनका कहना है कि ५ प्रतिशत 'शेरी' और १० प्रतिशत 'बरटन एल' शराब निश्चय ही पचन-क्रिया को रोकने में समर्थ होती है। येल यूनीवर्सिटी के डाक्टर चिटेन्डन और मेन्डेल कहते हैं कि २ प्रतिशत अल्कोहल पचन-क्रिया को सदैव नष्ट कर देगी। डाक्टर ई० लेबोरडे अमेरिका के एक मासिक पत्र 'जर्नल आफ फारमेसी' में अपने प्रयोग का परीक्षण इस प्रकार लिखते हैं, कि मैंने एक बोतल में मांस को चार घंटे तक ४० डिग्री के टेम्प्रेचर पर २ प्रतिशत अल्कोहल डालकर रखा। पानी ने जब-जब पचन क्रिया आरम्भ की, अल्कोहल ने उसे तुरन्त रोक दिया। रायल मेडीकल सोसायटी एडिनबर्ग के भूतपूर्व प्रेसीडेन्ट डाक्टर जेम्सम्यूरहोवे इस प्रकार कहते हैं, 'कुछ व्यक्ति भोजन के बाद शराब पीते हैं और समझते हैं कि यह पाचन करेगी, परन्तु यह सब धोखा है क्योंकि जिस प्रभाव को वे पाचन-क्रिया अनुभव करते हैं वह पेट की नसों पर अल्कोहल की गर्मी और नशे की सुरसुराहट है। अल्कोहल निश्चय ही बदहज्मी पैदा करती है। मदिरा जब पहले-पहल पी जाती है तो आमाशय उसे बाहर फेंक देता है और उल्टी हो जाती है।

अल्कोहल पेट में पहुचने के बाद तुरन्त ही रक्त मे मिलनी शुरू हो जाती है, और चूंकि रक्त बहुत तेजी से नसों का दौरा करता है, इसलिए अल्कोहल भी तेजी से नसों पर प्रभाव डालने लगती है। लीवर (जिगर) पर इसका प्रभाव बहुत ही बुरा होता है क्योंकि लीवर की सेलें अत्यन्त कोमल होती हैं, वे इसकी गन्ध-मात्र से ही मुर्झाने लगती हैं। सेलों के निकम्मे होने से लीवर अपना काम करने में असमर्थ होने लगता है। तेज

या अधिक शराब पीने वालों का लीवर सिकुड़कर ऐंठ जाता है। शरीर में लीवर सबसे बड़ा अवयव है। स्वस्थ लीवर का वजन ५० से ६० औंस तक होता है। वह चिकना और लाल होता है। शराबियों का लीवर खुरदरा, काला और मुड़ा हुआ होता है। शराबियों को मदैव लीवर की बीमारी हो जाती है। वे व्यक्ति जिन्हें शराब बनानी या बेचनी पड़ती है और जिन्हें शराब पीने के सरल साधन प्राप्त हैं, वे शीघ्र मर जाते हैं। डाक्टर सर बेनजामिन वार्ड रिचार्डसन रक्त में अल्कोहल के प्रभाव का इस प्रकार वर्णन करते हैं :

"अल्कोहल का प्रभाव रक्त पर भयानक और नाजुक है, क्योंकि जब सूक्ष्म सेलें मर जाती हैं तो स्वाभाविक क्रिया बन्द हो जाती है और स्वाभाविक शरीर का पोषण रुक जाता है। शरीर में रक्त की ये सेलें लाखों होती हैं। यदि इन सेलों को ऊपर-नीचे रखकर एक पाई के बराबर गोलाई में चुना जाय तो एक इंच ऊंचाई में १२००० सेलें रखी जा सकती हैं। यदि इन सेलों को बिछा दिया जाय तो कई स्क्वायर गज जगह घिरेगी। ये सेलें रक्त के लिए ऑक्सीजन ग्रहण करती रहती हैं। इसलिए इनमें से एक भी शरीर की तन्दरुस्ती के लिए बहुत कीमती है।

कुछ लोगों का ख्याल है कि 'पोर्ट वाइन' का माणिक-जैसा लाल रंग होता है, इसलिए वह अवश्य रक्त को बढ़ाती होगी। परीक्षण करके देखा गया कि यह ख्याल भी मिथ्या है। एक छोटा चम्मच Animal Charcoal में आधा वाइन गिलास 'पोर्ट वाइन' मिलाओ और उसे फिल्टर होने के लिए रख दो। वाइन फिल्टर होकर पानी की भांति निकल जायेगी। वाइन का लाल रंग चारकोल में मिल गया परन्तु किसी भी पदार्थ के गुणों में तब्दीली नहीं हुई। तब फिर वह २-४ बूंद रंग भला क्या रक्त लाल करेगा?

किस शराब में कितना मादक द्रव्य होता है :

बीयर	५ प्रतिशत	बरमथ	१५ प्रतिशत
एल	७ "	क्र्यूडीम्यूथी	३२ "
पार्लर	७ "	काकटेल्स	३५ "
हार्ड सैड	६ "	बिटर्स	४६ "
फूट वाइन	८ "	कीमनल	४२ "
कैरेट	८ "	रम	४५ "
मस्केरल	८ "	ब्रान्डी	५० "
शैंपन	१० "	जिन	५० "
सैनटर्न	१२ "	व्हिस्की	५० "
शेरी	१४ "	वोडाका	५० "
पोर्ट	१४ "	एब्सिथ	६० "

शरीर की गर्मी पर अल्कोहल का प्रभाव

हमारे भोजन का परिणाम मांस, रक्त और मज्जा का बनना और शरीर की गर्मी को सही टेम्प्रेचर में रखना भी है। प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि हमारा शरीर गरम है। संसार के प्रत्येक भाग, ध्रुवों और भूमध्य रेखा के निवासियों की शरीर गरमी का एकसा ही परिमाण है। हमारे शरीर मे गरमी होने का प्रयोग Water Hammer यन्त्र से करके देखा जा सकता है। इस यन्त्र में पानी की थोडी-सी बूदे होती हैं, हाथ मे मुट्ठी बांधकर पकड़ने से पानी की बूदें भाप बनकर ऊपर को उड़ती प्रतीत होती हैं। साथ ही मुंह में जीभ के नीचे थरमामीटर लगाकर देखिये तो टेम्प्रेचर में कोई घटी-बढी नही होगी। इससे यह ज्ञात होता है कि हमारे शरीर में गर्मी बनती और निकलती रहती है।

स्टार्च वाले भोजन जैसे चावल,आलू, साबूदाना, अरारोट, रोटी और शक्करसार जैसे, गन्ने से चीनी, अंगूरों से ग्लूकोज, दूध मे लेकटोज, मधु (शहद) से लिवूलोज आदि लेने से शरीर की गरमी ठीक बनी रहती है।

अल्कोहल शरीर की प्राकृतिक गरमी को बाहर फेंकने की क्रिया करती है। एक औंस स्टार्च में एक औंस शराब से अधिक गरमी है, और शराब पचास गुणा अधिक महंगी पड़ती है।

नीचे लिखी वस्तुओं में शक्कर इस प्रकार होती है :

गन्ने की चीनी में	९६.०	प्रतिशत
गुड़ में	७६.०	"
अजीर में	६२.५	"
चेरी में	१८.१	"
खुर्मानी में	११.६	"
आड़ू में	१६.५	"
नाशपाती में	६.४	"

यह गरमी भोजन के कारबन में से आती है। कारबन जलता रहता है, यही गरमी है। निम्न फारमूले से आप देखेंगे कि शक्कर से अधिक कार्बन अल्कोहल में है :

ETHYL ALCOHAL $C_2 H_5 HO$ Sugar $C_{12} H_{22} O_{11}$

कार्बन	५२.१७४	कार्बन	४२.१०६
हाइड्रोजन	१३.०४३	हाइड्रोजन	६.४३२
ओक्सीजन	३४.७८३	ओक्सीजन	५१.४६२

इस हिसाब से अल्कोहल शराब की गरमी के लिए बहुत ही लाभकारी होनी चाहिए, परन्तु ऐसा नहीं है। शराब पीने वाला गरमी को प्रतीत अवश्य करता है, परन्तु यह गरमी धोका है। डाक्टर विन्ड ने इसके अनेक प्रयोग किये हैं। वे कहते हैं कि अल्कोहल पीने से आराम-सा लगता है, यह पेट और चमड़ी की रक्त-नालियों को फैलाती है। इस वर्तन में गरमी चारों ओर बिखरती है, बिखरकर वह भागती है। इस भागने को गरमी समझ लिया जाता है। डाक्टर विन्ड ने १२६ प्रयोगों को थरमामीटर द्वारा परीक्षण किया है। बहुत थोड़ी मात्रा ने तो टेम्प्रेचर कम नहीं किया। बीच

दर्जे की मात्रा ने ०.३ से ०.६ तक कम किया और अधिक मात्रा ने कई डिग्री कम कर दिया। जो साधारण मात्रा में शराब पीते हैं उनका टेम्प्रेचर एक डिग्री कम रहेगा। प्रोफेसर रेमसन कहते हैं कि .05 से २ डिग्री तक टेम्प्रेचर कम रहता है, यद्यपि गरमी-सी लगी रहती है। डाक्टर सर बी० डब्लू० रिचर्डसन अपने प्रयोग को इस प्रकार वर्णन करते हैं :

"एक गरम खून के पशु का शराब पिलाकर बेहोशी की हालत में एक कमरे में रखा गया, इस कमरे का टेम्प्रेचर १० डिग्री कम कर दिया गया। उसी के साथ इसी कमरे में एक अन्य पशु को शराब पिलाये भी रखा गया। दोनों सोये रहे। पहला सोकर उठा ही नहीं, मर गया। दूसरा स्वस्थ रहा।" समुद्र में सदैव रहने वाले गोतेखोर तथा व्हेल मछली आदि जल-जन्तुओं के शिकारी जिन्हें सदैव पानी और ठंड में रहना पड़ता है, कभी शराब नहीं पीते। एक बार रूस में कैथेराइन दी ग्रेट के शासन काल में एक बड़ा भारी जल्सा हुआ, और उसमें प्रत्येक व्यक्ति को शराब पीने की खुली छुट्टी दे दी गई। सबने मनमानी पी। प्रातःकाल देखा गया कि हजारों व्यक्ति शरीर की गरमी कम हो जाने की वजह से सुन्न हो गये और मर गये।

मस्तिष्क पर अल्कोहल का प्रभाव

समस्त शरीर का राजा और नियन्त्रणकर्ता मस्तिष्क है। प्रकृति ने इसे सबसे ऊपर सावधानी से ढककर रखा है। हम कुछ भी देखें, अनुभव करें, विचारें, जानें, ये सब क्रियाएँ मस्तिष्क करता है। यह मस्तिष्क इतना समझदार और उत्तरदायित्वपूर्ण भार ग्रहण किये हुए है कि हम जब सो जाते हैं तब भी यह शरीर को शान देता रहता है। यदि सिर में चोट लग जाती है और हम बेहोश पड़े होते हैं तब भी मस्तिष्क शरीर के अन्य अंगों की गति का संचालन करता रहता है। यदि मस्तिष्क में सांघातिक चोट लग जाय और वह बिलकुल ही निर्जीव हो जाय तो शरीर की सभी क्रियायें बन्द हो जायेंगी और प्राणी मर जायेगा।

इसलिए मस्तिष्क बहुत महत्त्वपूर्ण अंग है। लोग समझते हैं कि अल्कोहल मस्तिष्क को सहायता प्रदान करता है, किन्तु यह गलत है। प्रोफेसर क्रेपलिन और डाक्टर लोडर ब्रन्टन अपने प्रयोगों के परिणाम में कहते हैं, "कि अल्कोहल का शारीरिक प्रभाव अद्भुत है क्योंकि वह ज्यों-ज्यों प्राणी की गति को हीन बनाता है त्यों-त्यों वह इन्हें सतेज और अधिक कर्मशील अनुभव करता है।" इसके और भी प्रयोग किये गये हैं। डाक्टर जे० जे० रिज ने स्पर्श-ज्ञान, तौल-ज्ञान, दृष्टि-ज्ञान और निर्णय-ज्ञान पर अलग-अलग परीक्षण किये और सभी को दूषित पाया। ये प्रयोग बहुत विस्तृत हैं और इनकी सम्पूर्ण विधि वर्णित है। साढ़े तीन माशे अल्कोहल पीने के बाद स्पर्श-ज्ञान में ५ प्रतिशत कमी हुई। तौल-ज्ञान में २८ प्रतिशत कमी हुई। दृष्टि-ज्ञान में ६ प्रतिशत कमी हुई। और निर्णय-ज्ञान में १४ प्रतिशत गलती हुई। प्रयोग काल मे निम्न इन्द्रियो का इस प्रकार ह्रास हुआ :—

१. हाथों की मजबूती में कमी।
२. दृष्टि की तेजी मे कमी।
३. निर्णय मे यथार्थ ज्ञान की कमी।
४. विचारो के दौड़ान मे कमी।
५. नसो की तेजी मे कमी।
६. स्वयं नियन्त्रण-शक्ति मे कमी।

अधिक मात्रा देने से उन्हें नशा हो गया। बेहोश होने से पहले शराबी इधर-उधर झूमता, बहकी बातें करता, अन्तरिक्ष में कल्पना देखता और पागलों-जैसी चेष्टाएं करता रहता है। पूरे प्रभाव मे मस्तिष्क शून्य और चुप होकर पड़ रहता है। अमेरिका मे एक शराब नियन्त्रण बोर्ड है, जिसके रक्षागृह में शराब की व्याधियों से पीड़ित व्यक्ति आश्रय पाते हैं। सन् १९१५-१९ काल में ६० प्रतिशत व्यक्ति मस्तिष्क रोग से पीड़ित थे।

मस्तिष्क एक ऐसा केन्द्र है जहां हृदय, फेफड़े, स्नायु, ज्ञान-तन्तु और रीढ़ की संचालन शक्ति स्थिर है। इसलिए जिस व्यक्ति का मस्तिष्क

ठीक क्रिया में नहीं रहता, उसे हम पागल कहते हैं। शराब कंठ से उतरते ही ज्ञान-तन्तुओं द्वारा मस्तिष्क पर प्रभाव करती है, दस मिनट बाद ही वह उसमे हलचल उत्पन्न कर देती है, मस्तिष्क में विचारों का तांता लग जाता और पीने वाला व्यक्ति अपने को बहुत ही व्यस्त समझता है। धीरे-धीरे स्नायुमंडल मे विषैला प्रभाव उत्पन्न होकर संज्ञा नष्ट होने लगती है। जिसका परिणाम होता है, कि (१) इच्छा-शक्ति प्रभावहीन हो जाती है। (२) वाणी काबू से बाहर हो जाती है। (३) चालीस प्रतिशत व्यक्ति आत्मघात करते हैं। (४) विवेक और ज्ञान नहीं रहता, (५) कार्य-शक्ति का ह्रास हो जाता है। (६) पाप वासना प्रबल हो जाती है।

मांस-पेशियों पर अल्कोहल का प्रभाव

शरीर के बल का माप उसकी मांसल पेशियां हैं। मनुष्य का पराक्रम, शौर्य और वीरता सब-कुछ मांस-पेशियों पर निर्भर है। पेशियां जितनी दृढ़ और पुष्ट होंगी, उतना ही मनुष्य शक्तिवान समझा जायगा। मासपेशियां दो प्रकार की होती हैं:

१. जो अपनी इच्छा से कार्य करती हैं। जैसे, बांहों की।
२. जो अपनी इच्छा से कार्य नहीं करती। जैसे, दिल और पेट की।

दोनों प्रकार की पेशियों का संचालन मस्तिष्क करता है। दोनों का परस्पर गहरा सम्बन्ध है, और इनका शक्तिशाली बनना परमावश्यक है। अल्कोहल पेशियों पर भी बुरा प्रभाव डालती है। डाक्टर सर बी० डब्लू० रिचर्डसन ने मेंढकों पर प्रयोग करके देखे थे, जिसमे अल्कोहल ने पेशियों को टेढ़ा करके सिकोड़ दिया। डाक्टर जे० जे० नौरिस, डाक्टर प्रो० डेस्ट्री और प्रो० क्रेपलिन सबने प्रयोग करके देखा है कि २० ग्राम अल्कोहल से एक व्यक्ति की पेशियों की शक्ति एक दिन में २२३३० किलोमीटर से घटकर १४६३५ किलोमीटर रह गई। पहलवान लोग शराब से बचे रहते हैं।

अल्कोहल और जीवन

इस बात को सभी स्वीकार करेंगे कि अल्कोहल और शराब जीवन का दुखमय अन्त करती हैं। वह मनुष्य को मतवाला, पागल, जीवन रोगी बनाकर मृत्यु के द्वार तक ही नहीं ले जाती बल्कि अनेक घरों में कंगाली, दरिद्रता और सर्वनाश की पूर्णाहुति भी करती है।

शराब जीव के लिए तनिक भी आवश्यक नहीं। कुछ लोग इसे आनंद और भोग-विलास के लिए पीते हैं, कुछ संग-सोहबत के प्रभाव में पीने लगते हैं, परन्तु सभी इसके भयानक चरित्र को जानते हैं।

संसार में मद्य का जबरदस्त चक्र है। स्काट लोग विस्की पीते हैं, अंगरेज और जरमन बीयर पीते हैं। लेटिन लोग वाइन पीते हैं। पूर्वी अफ्रीका निवासी जिन पीते हैं। चीनी अफीम पीते हैं। आधुनिक अमेरिकन कोकीन पसन्द करते हैं। कुछ खास व्यक्ति खास रसों को सड़ाकर पीते हैं।

यह सब इसकी मादकता की महिमा है। इस मादक विष को हमें विद्वानों की इन सम्मतियों में ढूंढना चाहिए :—

"अल्कोहल जो भ्रमात्मक आनन्द, क्रिया और शक्ति प्रदान करने वाला पदार्थ है, कब्र में दफनाये जाने योग्य है। किसी कवि, चिकित्सक धर्म-पुरोहित और चित्रकार ने इससे प्रबल शैतान को नहीं देखा।

—डाक्टर बी० डब्लू० रिचर्डसन एम० डी०, एफ० आर० एस०

"अल्कोहल डाक्टरों के लिए भी योग्य नहीं है। भोजन भी नहीं है।"

—सर विक्टर होसले एफ० आर० एस०

"मैं कहता हूं कि देश को नष्ट करने में अल्कोहल प्रबल योद्धा है।"

—सर यमगम बार्ट, एम० डी०

"अल्कोहल मस्तिष्क को नष्ट कर देती है।"

—ई० मेकडोवेल कासग्रेव, एम० डी०, एफ० आर० सी० पी०

"शरीर को अल्कोहल से कभी लाभ नहीं हो सकता।"

—सर एन्ड्र क्लार्क वार्ट, एम० डी०

"शराबी और शराब वेचने वाले जब इच्छानुसार पीते हैं तब समाज और राजनीति दोनों ही के संगठन को नष्ट करते हैं।"

—प्रेसिडेन्ट रूज़वेल्ट

"शराब शरीर की बची हुई शक्तियों को भी उत्तेजित करके काम मे लगा देती है, फिर उसके खर्च हो जाने पर शरीर काम के लायक नही रहता।"

—सर फ्रेडरिक स्ट्रीवस वार्ट, (सम्राट् जार्ज के गृह-चिकित्सक)

"जिनके अधिकार मे बिजली और भाप की मशीनें रहे, उन्हें शराब के चंगुल में जरा-सा भी फंसने का मौका देना अति भयानक है।"

—मि० डेनियल्स (अमेरिका के जंगी जहाजों के मंत्री)

अफीम

अफीम एक महत्त्वपूर्ण औषध है, पर यह तभी अच्छी है जब तक इसे चिकित्सारूप में लिया जाय। संसार के प्रसिद्ध और अनुभवी चिकित्सकों की भी यही सम्मति है कि रोग की प्रत्येक अवस्था में अफीम हुक्मी असर रखती है, बढ़ते हुए सांघातिक लक्षणों को रोकती है और विशेषकर दर्द की वेदना को हरने में तो बेजोड़ वस्तु है परन्तु साथ ही साथ इसका स्वाभाविक प्रभाव नसों को सुस्त कर देना है। इससे हमें यही समझ लेना चाहिए कि अफीम औषध ही है, और यह नित्यप्रति व्यवहार में लाने वाली गिजा नहीं हो सकती। यदि हम इसके अभ्यासी बनते हैं तो हमारे स्नायुमण्डल का सदैव के लिए निर्जीव हो जाना अवश्यम्भावी परिणाम है। अफीम मस्तिष्क को मंद करके ज्ञान-तंतुओं को मूर्छित कर देती है। जब मस्तिष्क चेतनाहीन होता है, तब श्रवण शक्ति, स्वादेन्द्रिय और दृष्टि पर भी उसका हीन प्रभाव पड़ता है। पीनक उसी अवस्था का नाम है, जब मस्तिष्क और ज्ञान-तंतुओं का सम्बन्ध भिन्न-भिन्न हो जाता है। अफीम से ये रोग लग जाते हैं : १—कब्ज होता है। २—पाचन शक्ति नष्ट हो जाती है। ३—श्वास रोग। ४—मंद बुद्धि। ५—चिड़चिड़ापन।

राजपूताने में अब भी ब्याह-शादी, दावतों और आदर-सत्कार में ठाकुर लोग अफीम घोल कर पिलाते हैं। गुजरात के काठियावाड़ प्रदेश में पहले इतनी अफीम खाई जाती थी कि अफीमचियों की विष्ठा से पशुओं की रक्षा के लिए जंगल में आदमी नियत किये गये थे।

ऐतिहासिक दृष्टि से पूर्वीय देशों में अफीम का प्रचार पिछली सदियों में ही बढ़ा है और इसका कारण पश्चिमी व्यापारी हैं जिन्होंने पूर्व में

मादक द्रव्यों का व्यवसाय करके उसे बहुत ही लाभदायक व्यापार दिखा दिया। इस ध्येय को लेकर मादक द्रव्यो की समस्या और भी विस्तृत होती गई है और प्रत्येक नगर में दुकानदारों ने मनुष्य की नैतिक दुर्बलता की ओट मे इसे पूर्ण रूप से स्थायी बना दिया है।

मिलो मे तथा अन्यत्र दिन-भर काम करने वाली मजदूर मातायें अपने बच्चों को चुपचाप पड़े रहने के लिए अफीम पिला देती हैं। जिन देशो में अफीम नही मिल सकती वहां दूसरी कोई नशीली वस्तु दे देती हैं। शहरो मे ही नही, गांवों में भी खेतो पर काम करने वाली माताएँ बच्चों को अफीम देती हैं। बूढ़ी और समझदार स्त्रियां इस अभ्यास को अपनी बहुओं को भी सिखा जाती हैं। एक बार एक अंग्रेज डाक्टर ने नागपुर के समीप एक गांव का निरीक्षण किया, वहा एक हिन्दू बूढी दादी अपने पौत्र को अफीम दे रही थी। डाक्टर ने इस पर आपत्ति की, परन्तु बुढिया ने अधिकारपूर्वक उत्तर दिया, "इससे यह रोयेगा नहीं, चुपचाप पड़ा रहेगा, साथ ही इसके हरे-पीले दस्तों में भी लाभ होगा।"

एक दूसरा बच्चा जिसका पेट बढ़ा हुआ था और शरीर पीला था, बाहर से खेलता हुआ अन्दर आया, डाक्टर ने उसे देखकर पूछा, "क्या इसे भी शिशुअवस्था मे अफीम दी गई थी ?" बूढ़ी ने उसे अधिकारपूर्वक उत्तर दिया, "हा, पर इसकी भूख न जाने कहां चली गई है, यह कभी भूखा ही नही होता। आप डाक्टर हैं, इसकी पाचन-शक्ति को ठीक करिये न ?"

डाक्टर की ताड़ना देने पर भी वह अफीम को बुरा नहीं मान सकी। उस गांव के दूसरे भाग में ईसाई लोग भी रहते थे, डाक्टर ने वहां के बच्चों को इस पापविष से मुक्त पाया। उनकी माताओ ने बताया कि अफीम देने का हम विचार भी नही लाती, हमारे बच्चे बिल्कुल स्वस्थ हैं। वे समय पर सोते और समय पर जागते हैं। हमने उनका दैनिक क्रम इस ढग पर डाल दिया है कि वे अपने खिलौनों से घटों खेलते रहते हैं, उन्हें रोना और चिल्लाना नही पडता। यद्यपि इन लोगो को भी खेतों में अधिक समय देना पडता था। इन उदाहरणो से गरीबी और अज्ञानता के मूढ

कारण प्रकट हैं।

एक कहावत प्रसिद्ध है कि अफीम बच्चों को शक्ति प्रदान करती है, युवकों को नष्ट करती है और बूढ़ों को सहारा देती है। यह बात सत्य भी हो तब भी अन्धविश्वास की ओर धकेलने वाली है। अफीम की लत पारस्परिक सहयोग, उठने-बैठने और संग-सोहबत से पड़ती है। जहां दस-पांच अफीमचियो का संघ हुआ और एकाध उपचार की चर्चा हुई कि अफीम का आनन्द और उसमे डूबकर मधुर स्वप्न देखने का असत्य प्रलोभन नये ग्राहकों को फांस लेता है। फिर वे उसमें हमेशा के लिए तैरते रहते हैं। यूनानी और वैद्यक मे अफीम का प्रयोग बिल्कुल सही अवस्थाओं मे होता है, लेकिन अताई चिकित्सक इसका प्रयोग निर्भय होकर प्रत्येक अवस्था मे करते रहते हैं। ठंड, सर्दी और मलेरिया के आक्रमण से बचने के लिए इसका प्रयोग करने मे अब डाक्टरों का विश्वास नही रहा। गरीब आदमी अपनी भूख मारने के लिए और सर्दी के दिनों में बच्चे को गरम रखने के लिए अब भी अफीम व्यवहार में लाते हैं। लेकिन अफीम की सबसे अधिक खपत इन उपचारों मे नही होती बल्कि वहां होती है जहा अफीमचियों की सोसायटी और पीनक में झूमने की लालसा अधिक रहती है। डाक्टर कर्नल आर० एन० चोपड़ा जिन्हें भारत सरकार ने अफीम के शिकारों की दुर्दशा जांचने के लिए नियुक्त किया था, लिखते हैं कि अफीमचियों की सोहबत ने अफीम का प्रचार बढाया है। आसाम में अफीम की लत बुरी तरह लोगों मे लगी हुई है। यद्यपि इस प्रान्त का जलवायु मलेरिया-उत्पादक है। ब्रह्मपुत्र के प्रान्तों मे भी अफीम का अधिक प्रचार है, जबकि वहा का जलवायु मलेरिया-उत्पादक नही है। उड़ीसा मे अफीम की बेहद खपत होती है, वहाँ पहाडी जिलो में तो प्रचार है पर नीचे के जिलो में बिल्कुल भी नही है। कर्नल चोपड़ा इसका कारण अफीमचियों की सोहबत ही बताते हैं। पंजाब के विषय में भी उनकी यही धारणा है।

कहते है कि मुसलमानोमे अफीम का अधिक सेवन किया जाता हैक्योंकि कुरान में शराब पीना वर्जित है। लेकिन पूर्वी बंगाल (अब बंगला देश) में

जहां मुसलमानों की ही आबादी है अफीम की खपत कम है क्योंकि वहां अफीमी सोसाइटी का संसर्ग नहीं है। बहुत-से लोग गहरी नींद सोने के लिये अफीम की मात्रा लेते हैं। हांगकांग में व्यापारी और दुकानदार लोग पहले तो अफीम खा लेते हैं और पीछे से 'जिन' (शराब) की थोड़ी मात्रा पीते हैं जिससे उनकी आंखों में अफीम की पीनक नहीं दिखाई देती, ग्राहकों को उनके अफीम-सेवन का आभास नहीं मिलता।

अब हमें इस प्रश्न पर विचार करना चाहिये कि अफीम की लत कहां तक लाभदायक है और कहां तक भयानक है। तम्बाकू और चाय भी तो इसी श्रेणी के विष हैं। कुछ लोग वर्षों तक अफीम खाने के अभ्यासी रहे हैं और तम्बाकू भी पीते रहे हैं, फिर भी उनमें कोई खास बुराई देखने को नहीं मिलती। ऐसे लोग काम करते रहने के योग्य तो होते हैं पर उनके ज्ञान-तंतु सर्वथा नष्ट हो चुके होते हैं। तम्बाकू पीना उतना हानिप्रद नहीं है जितना अफीम लेना। तम्बाकू के अभ्यास को तो छोड़ा भी जा सकता है, पर अफीम का चस्का छूटना कठिन है। और जो लोग इसे छोड़ देते हैं, उन्हें रोग, चोट और अन्य आकस्मिक दुर्घटनायें अनायास ही अपनी चपेट में ले लेती हैं। अफीम छोड़ने के लिए अधिक-से-अधिक मानसिक शक्ति की आवश्यकता होती है। अफीमची को पारिवारिक सुख कदापि प्राप्त नहीं हो सकता। ब्रिटिश फौज में यदि कोई सैनिक अफीम का सेवन करते देखा जाता है तो उसे नौकरी से बरखास्त कर दिया जाता है, क्योंकि उसकी वफादारी सन्देहमयी हो जाती है। भारत के गांवों की अनेक मृत्यु सरकारी रजिस्टरों में दर्ज होती हैं और ये मृत्यु अधिकतर अफीम का परिणाम होती हैं। अफीम की बिक्री के लिए रजिस्टर्ड लाइसेंस दिये जाते हैं और महीने में बेचने की तोल भी सीमित है फिर भी चुपका-चोरी से मनों अफीम बिकती है। आसाम में एक भिखारी युवक जो अफीम का जर्जरित शिकार था और जो अपने पैरों खड़ा भी नहीं हो सकता था, कमर में एक मटमैला थैला लिए फिरते देखा गया, इसके थैले में वही अफीम थी जो सरकारी होती है और इसे वह बेच रहा था। कलकत्ते में

अफीम की सबसे बड़ी दुकान हावड़ा पुल के समीप है, उस दुकान पर सब से अधिक बिक्री शाम को होती है जबकि हजारो आदमी अपनी नौकरी पूरी करके जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाये स्टेशन की ओर ट्रेन पकड़ने जाते हैं और झट से पैसे फेंककर अफीम की पुड़िया जेब मे डालते हैं।

आजकल भारत मे अफीम बनारस एजेन्सी में सरकार की कड़ी निगरानी में बोई जाती है और तैयार होती है।

फिर भी इसके विषम परिणाम को सरकार ने अनुभव किया और वह प्रति वर्ष इसकी काश्त के लाइसेंस देनेमे कमी करती गई। सन १६२०-२१ में काश्त के लाइसेंसो की संख्या ४३११५१ थी और वह घटते-घटते सन् १६२५-२६ में २८१६६४ ही रह गई। पहले १८६६८६ बीघा जमीन मे काश्त होती थी, वह ११३६६१ बीघा ही रह गई। इस कमी का कारण कुछ तो सरकार की नीति मे परिवर्तन और कुछ पहले स्टाक का बचा पड़े रहना था। सन् १६२०-२१मे १४३४० मन अफीम पैदा हुई,सन् १६२४-२५ मे २८२५४ मन और सन् १६२५-२६ मे केवल १३०३० मन हीहुई।

हिन्दू धर्म मे अफीम की काश्त करना वर्जित है,लेकिन सरकार काश्तकारों को पेशगी रुपया देकर प्रोत्साहन देती रही है। ३१ अक्तूबर १६२६ मे अफीम के लिए ७००६१० रुपये, भांग के लिए ८६०० रुपये और सिंचाई के कुओ के लिए १०३४८ रुपये पेशगी दिये गये। फसल पकने पर पौदो की डोडों मे छेद करके उसमे से दूध को बर्तनो मे संग्रह किया जाता है। एक डोडे में से थोड़ा-थोड़ा नित्य दूध निकलता है। जब तक वे दूध देकर सूख न जायें तब तक दूध निकाला जाता है। सूखे डोडे बाजारो मे पोस्त के डोडे के नाम से बिकते हैं। पोस्त इन्ही मे से निकलती है। यह दूध कुछ सूख जाता है तब इसे कच्ची अफीम कहते हैं। काश्तकारो से कच्ची अफीम को एकत्र करने मे भी बहुत सावधानी और निगरानी रखी जाती है, अप्रैल से जून तक तमाम माल गाजीपुर सरकारी अफीम फैक्टरी मे पहुंचाया जाता है। यह फैक्टरी हिन्दुस्तान मे सब से बडी है। सन् १६०७ से जबकि चीन को अफीम जानी बन्द हो गयी इसमें ज्यादा अफीम

नहीं बनती। फैक्टरी में कच्ची अफीम को बड़े-बड़े चौकोर हौदों में इकट्ठा करके सड़ाते हैं। कुछ दिन बाद उसके ऊपर काली पपड़ी जम जाती है। इस पपड़ी में बुलबुले उठने लगते हैं। फिर उसे पकाते हैं। पकाकर धूप में सुखाते हैं। जो कर्मचारी इस काम को करते हैं उन्हें धुएं और परमाणुओं की गन्ध के कारण प्रति दसवें दिन अवकाश लेना पड़ता है। सारी निर्माण-विधि पर कठोर नियंत्रण है। प्रत्येक कर्मचारी की बहुत बारीकी से आते-जाते तलाशी ली जाती है। गाजीपुर में अफीम चार प्रकार की बनती है : एक तो योरोप के लिए, जो हाई कमिश्नर लन्दन की संरक्षता में डाक्टरी औषध के लिए भेजी जाती थी। दूसरी भारत के लिए ही डाक्टरी औषध के रूप में व्यवहार करने के लिए पहली से थोड़ी भिन्न बनती है। तीसरी, आबकारी विभाग के लिए बनती है जो भारत में सर्वसाधारण के खाने में आती हैं। और चौथी, उन देशों के लिए बनती है जहां इसका सेवन खाने में नहीं, पीने में करते हैं। गाजीपुर का रासायनिक विभाग अफीम का सत (मारफिया) भी निकालता है।

आसाम में सबसे अधिक अफीम का प्रचार है। यद्यपि वहां के सभ्य व्यक्ति तथा अफसर लोग भी इस भयंकर अभ्यास को कम करने की चेष्टा करतेर हे हैं, परन्तु किसी ने भी सफलता प्राप्त नहीं की। फिर भी सन् १६२१ और उसके बाद जो सफलता मिली, तो वह महात्मा गांधी तथा कांग्रेस-नेताओं को। महात्मा गांधी ने अगस्त १६२१ में आसाम का दौरा किया था और जनता को समझाया कि वे जब तक मादक द्रव्यों का सेवन न त्याग देंगे, तब तक स्वराज्य नहीं ले सकेंगे। महात्मा जी जानते थे कि इस अभ्यास को तोड़ना आसामवासियों के लिए कितना कठिन है, फिर भी उन्होंने उनको बारम्बार यही कहा कि "तुम लोग अवश्य इन वस्तुओं को छोड़ सकते हो। अफीम छोड़ना बहुत ही सहज बात है, ईश्वर में विश्वास रखो।" बहुतों ने इस उपदेश को हृदयंगम किया और अफीम की पुरानी लत को छोड़ दिया। अगस्त से नवम्बर तक सैकड़ों नवयुवकों ने उत्साहित होकर मादक-द्रव्य निषेध का कार्य अपने हाथ में लिया।

आसाम की भयानक स्थिति के बाद उड़ीसा का नम्बर है। उड़ीसा में भी अफीम का अभिशाप है। अब से दो-ढाई सौ वर्ष पहले उड़ीसा बहुत ही वैभवशाली देश था, अंग्रेजों ने प्रारम्भ में यही से बड़े-बड़े व्यापार किये थे। परन्तु अफीम की लत ने उसे अब नष्ट कर दिया है। एक तो वहाँ वैसे भी भयकर बाढ़ें आती और खेत मे खड़ी फसलो तथा धन-जन को बहा ले जाती हैं।

उड़ीसा को उन्नत करने के लिए उसे बिहार प्रान्त में सम्मिलित कर दिया गया था फिर भी उसे विशेष लाभ नही हुआ। एक बार इंडिया आफिस की आज्ञा से एक अफीम जांच कमेटी उड़ीसा में बैठी थी। इसमें एक भी सदस्य योग्य नही था। उसका निम्नांकित नं० २ प्रश्न देखिये :

(२) (i) किसी शारीरिक व्याधि के लिए प्रयोग पर लोग विश्वास करते हैं? अगर ऐसा है तो किन व्याधियों पर ?

(ii) क्या लोग इसके शक्तिवर्द्धक पदार्थ होने पर विश्वास करते है ?

(iii) क्या अफीम गठिया के दर्द और अन्य रोगों के आराम करने में बाहरी प्रयोग में आती है? किन-किन रोगों पर ?

इन प्रश्नों से साफ प्रकट है कि अफीम की खपत के आधार क्या हैं। कमेटी ने ऐसा कोई प्रश्न नहीं किया जैसे, आपकी राय मे अफीम व्यवहार में आने के असली क्या कारण हैं ? इसके प्रमाण में आप क्या विवरण पेश करते हैं ? कमेटी का आगे चलकर पांचवां प्रश्न यह था—

(५) क्या लोगों को शारीरिक विशेष व्याधियों को रोकने के लिए, अथवा शक्तिवर्द्धक पदार्थ के रूप में, मादक द्रव्य की थोड़ी मात्रा लेना आवश्यक है ?

सातवां प्रश्न अफीम की खुराक के सम्बन्ध मे था—

(७) क्या आपको कोई ऐसा उदाहरण ज्ञात है जिसमें अफीम अधिक

मानसिक तथा शारीरिक क्रिया में नुकसान हुआ हो ?

यह प्रश्न इस बात के समर्थन का संकेत करता है कि जो व्यक्ति डाक्टरी उपचार के सिवा वैसे अफीम का शौक करते हैं, उन्हें अफीम हानिप्रद नहीं है। बालासोर के एक डाक्टर के पास बीस प्रश्न दो दिन के अन्दर-अन्दर उत्तर देने के लिए भेजे गये। यह डाक्टर बहुत ही व्यस्त अफसर थे और वे प्रश्नों पर भी विचार करने के लिए यथेष्ट समय चाहते थे। इन डाक्टर महोदय ने जो उत्तर जल्दी में दो दिन समाप्त होने पर भेजे थे, उनमें से एक तो उनके भाव से बिल्कुल ही विपरीत लिखा था। एक अमरीकन मिशनरी को, जिन्हें मादक द्रव्यों का विशेष अनुभव और ज्ञान था, इस कमेटी के समक्ष गवाही देने के लिए पेश किया गया, पर उन्हें यह कहकर इन्कार कर दिया गया कि आप देर से आये हैं।

मिस्टर सी० एफ० एन्ड्रू़ज, जिन्हें भारत के गांवों का विशेष ज्ञान है और डाक्टर चोपड़ा, दोनों की यही सम्मति है कि देश के कल्याण के लिए अफीमी सोसाइटियां नष्ट होनी चाहिये। यही एकमात्र उपाय अफीम छुड़ाने का है।

कोकीन

कोकीन दक्षिणी अमेरिका के पीरू प्रदेश मे कोका के पेड़ से बनती है। यह अफीम से भी बनती है। भयानक प्रभाव लाने तथा सुन्न करने में कोकीन सब नशोंसे बढ़कर है। इसका प्रभाव आनन्दयुक्त मुस्ती होता है, पर अन्त में मस्तिष्क, शरीर और आत्मा के तेज का इससे नाश होता है। भारत में सम्पट नर-पशु इसे पान मे रखकर खाते हैं। इसका प्रचार भारत में १९१४ से बढा है। यद्यपि सरकार की इस पर कड़ी दृष्टि है फिर भी चोरी-छिपे लाखों रुपयों की बिकती है।

कोकीन के नशे से क्षण-भर एक आनन्द का अनुभव होता है, पर जब नशा उतर जाता है तब उसे मालूम होता है कि वह घोर नरक में गिर गया। उसे भय, भ्रम, भूल, अनिद्रा, मन्दाग्नि, शूल आदि रोग लग जाते

हैं। उसकी आयु नष्ट हो जाती है।

पेटेन्ट दवाइयों मे बहुधा दूषित द्रव्यो, जैसे अफीम, कोकीन, मद्य आदि का ससर्ग रहता है। सिर दर्द की टिकिया जो अधिकतर काम में लाई जाती है, प्रायः उनमें काफीन फेनेस्टीन होता है, यदि उनकी मात्रा भूल से अधिक ले ली जाय तो बहुधा मृत्यु हो जाती है। अमेरिका के प्रसिद्ध डा० ओलीवरवेनडेल होलास का कहना है, "यदि ये सब दवाइयां समुद्र में फेंक दी जायं तो इससे मनुष्य जाति का उतना ही फायदा हो सकता है जितना कि मछलियों का नुकसान।"

भांग, गांजा और चरस

भाग दक्षिणी और मध्य भारत में लाइसेन्स लेकर बोई जाती है। उत्तर मे पंजाब से लेकर आसाम तक हिमालय की तलेहटी मे जंगली भांग बहुत लगी रहती है। इस जंगली भांग पर भी नियन्त्रण रखने की चेष्टा की जा रही है। भांग के तीन रूप होते हैं, चरस, गांजा और भांग। मादा पौधे का फूल खिलने से पहले ही उसके डोंडे मे से चरस तैयार होता है। यह पजाब होकर मध्य एशिया से आता है। गांजा भी ऐसे ही बनता है, पर यह उतना तेज नही होता। यह बगाल के नौ गांव में लाइसेन्स लेकर बनाया जाता है और इसके बेचने का सर्वाधिकार 'नोगाव गाजा कल्टीवेटर्स कापरेटिव सोसायटी' के हाथों मे है। अहमदाबाद के समीप भी लाइसेन्स लेकर गांजा बनाया जाता है। किन्ही-किन्ही प्रान्तो में जहा चरस पी जाती है, वहा गांजे की मनाही है। भांग हरी-हरी पत्तियो की बनाई जाती है और यह घोटकर पी जाती है। भांग अफीम जैसी भयप्रद नही होती। चरस और गाजा मतवाला बना देते हैं और पीने वाले की वृत्ति हिंसक हो जाती है। चरस के पीने वाले प्राय पागल हो जाते हैं।

बर्मा मे भाग को लोग अधिक नही जानते। दक्षिणी भारत मे इसे कम व्यवहार करते हैं। सबसे अधिक खपत सिंध में होती है। सन् १९२६-२७ मे यू० पी० सरकार ने बहुत अधिक नाजायज चरस पकड़ी थी।

इसकी खरीद का मूल्य ६ रु० से १० रु० प्रति किलो था और बेचने का भाव १२० रु० प्रति किलो।

भाग की पौध साल मे एक बारहोती है। पौध दो प्रकार की होती है— नर और मादा। नर पौधा मादा से छोटा होता है और इसमे घन के पत्ते नही लगते। पौध में तीन चीजें होती है . १ पतली शाखाए। २. चिकने बीज(जिनमे से तेल भी निकल सकता है।) ३ पसेव (रतूबत जो पत्तियो और फूलो के सिरो पर रहता है) यह तीसरी चीज ही आबकारी की आमदनी है। पौधे मे से तीनो चीजें बनती है।

१. गांजा—मादा पौध के फलो से गाजा बनता है।

२. चरस—पसेव की बनती है, जैसे अफीम बनती है। इसमे पौध के मूल अवयव सबसे अधिक होते हैं।

३. भांग—नर और मादा दोनों पौध की पत्तियो को सुखाकर बनती है।

ये पदार्थ अति सूक्ष्म मात्रा मे भूख को बढाने वाले, तथा सूक्ष्म मात्रा में नींद और खुमारी को लाने वाले हैं। खुमारी की अवस्था मे मनुष्य सुख का अनुभव करता है। ज्यो-ज्यो नशा बढ़ता है, वह स्वप्न देखना, कल्पनाओं में उड़ता और विवेकहीन होकर अनर्गल बकने लगता है। उसका स्नायु मंडल ढीला पड़ जाता है, और वह अनेक रोगों का शिकार बना रहता है। इन वस्तुओं के सेवन करने वाले सिड़ी, दीवाने, क्रोधी और आचारागर्द हो जाते हैं।

आजकल LSD आदि गोलियां तथा अन्य नशीली दवाइयो के सेवन की लत भी शहरी युवक-युवतियों मे खूब बढी-चढी है। चरस या hashish का प्रयोग बहुत बढ़ रहा है। मार्जुआना (marijuana) भी युवको मे प्रिय है। मैंड्रैक्स (Mandrax) नामक एक कृत्रिम दवाई तो बहुत ही लोकप्रिय हो रही है। सभवत : इसलिए कि यह थोडी कीमत मे सहज प्राप्य है। यह एक आनन्दप्रद उत्तेजना उत्पन्न करती है। ये नशीली दवाइयां अधिक-

तर सिगरेट में लपेट कर या चिलम में पी जाती हैं, पान में डाल कर तथा गोलियों के रूप में भी सेवन की जाती हैं। कुछ लोगों को इनका इन्जेक्शन लेने की लत पड़ जाती है। दिल्ली विश्वविद्यालय के कालेजों तथा होस्टलों में इन मादक द्रव्यों के सेवन की एक भारी समस्या उत्पन्न हो गई है। भारत में बढ़ती हुई हिप्पी कल्ट ने यह व्यसन बहुत बढ़ा दिया है।



तम्बाखू

तम्बाखू अमेरिका की देन है। यह सबसे पहले वहीं देखा गया। वनस्पति के भौगोलिक आधार पर यह प्रकट किया गया है कि चीनियों में इसे पीने की बहुत प्राचीन पद्धति थी। पश्चिमी निवासियों ने इसे चीन से सीखा। परन्तु और भी गहरी छानबीन करने से यही परिणाम निकलता है कि योरोप अथवा एशिया में तम्बाकू पहले नहीं होता था। कोलम्बस ने क्यूबा के टापू में लोगों को मक्का के पत्तों में लपेटकर सूखा तम्बाकू पीते देखा था। डाक्टर पारसेवोस्त अपने इतिहास में लिखते हैं कि अमेरिका के पास किसी टापू में उन्होंने लोगों को एक नली में रखकर सूखी पत्तियां पीते देखा जिसे वे तम्बाकू कहते थे।

योरोप में सबसे प्रथम स्पेन निवासी गोन्जालो-हरनान्डेज ने तम्बाकू की पौद सोविया में बोई थी, परन्तु कुछ दिन बाद वहीं के डाक्टर निकोलस मनारडेस ने एक दिन इसमें डाक्टरी उपचार के गुणों की प्रशंसा की। परन्तु और भी अनुसंधान करने पर ज्ञात हुआ कि तम्बाकू डाक्टरी उपचारों के योग्य नहीं है।

तम्बाकू की पौध के लिए गरम आबोहवा की आवश्यकता पड़ती है। फिर भी तम्बाकू की भिन्न-भिन्न जातियों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की जमीन और आबोहवा का होना आवश्यक होता है। 'वर्जिनिया तम्बाकू', जो पश्चिमी देशों का प्रसिद्ध तम्बाकू है और जिसकी बढ़िया सिगरेटें संसार-भर में जगह-जगह पर बिकती हैं, साधारणतया चार से छः फुट ऊंचा होता है। इसकी पत्तियों की लम्बाई अठारह इंच और चौड़ाई दस इंच तक होती है। पत्ती की बनावट अण्डाकार होती है और फूल का

हल्का गुलाबी होता है। तम्बाखू की कच्ची पौध को कोई नही खाता। जब पौध पकने लगती है, तभी उसे तोड़ लेते हैं, पूरा पकने से वह खाने के योग्य नही रहता। क्योकि पूरा पकने की क्रिया में उसके समस्त गुण पत्तियो में से निकलकर बीजों मे सग्रहित होने लगते हैं, यदि बीज ही बनाना हो तब तो पौध को पहले तोड़ने की आवश्यकता नही। पत्ती जितनी अधिक मोटी और भारी होगी उतनी ही अधिक उसकी कीमत होगी और वह उतना ही अधिक नशीला होगा। परशिया के शीराज तम्बाखू की बहुत प्रशंसा की जाती है। तम्बाखू की स्थायी रूप से खेती सबसे पहले अमेरिका मे होनी आरम्भ हुई थी। सन् १६०७ ईस्वी मे जेम्सटाऊन नगर मे 'विरजिनिया कोलानी' में तम्बाखू बोया गया। आठ वर्ष बाद उसके बोने मे और भी विस्तार किया गया। तेरह वर्ष के बाद सन् १६२० में तम्बाखू व्यापार की महत्त्वपूर्ण वस्तु बन गई। और इसकी इतनी प्रतिष्ठा हुई कि १०० पौंड तम्बाखू के बदले एक क्वारी कन्या ब्याह ली जाने लगी। सन् १६२०में ही ऐसे ६० ब्याह रजिस्टर मे दर्ज किये गये थे। अगले वर्ष सन् १६२१ मे यह भाव बढ गया अर्थात् १५० पौंड तम्बाकू के बदले एक क्वारी कन्या दी जाने लगी। इस वर्ष ६०विवाह हुए थे। ये विवाह नीच और अर्द्ध-शिक्षित जातियों मे हुए थे।

शीघ्र ही धूम्रपान की प्रथा फैलने लगी। अंग्रेजों ने इसे कलापूर्ण ढंग से पीना आरम्भ किया। उन्होने एक नली बनाई, उसमे तम्बाकू को चूर्ण करके दबा-दबाकर भरा और फिर सुलगाकर पिया। दबाकर भरने से तम्बाकू जल्दी नही जल जाता, धीरे-धीरे कश खिचता है। ओर भी अधिक शौक से पीने वालों ने पत्तियों की नसों और गर्द-मिट्टी को साफ करके चूरे मे सुगन्ध डालकर पिया।

इग्लैड मे सबसे पहले महारानी एलीजाबेथ के शासन काल मे सर वाल्टर रेले ने तम्बाखू को श्रेष्ठ उपहार समझकर इसे एलीजाबेथ को भेंट किया। रानी ने उसे सादर स्वीकार किया, उन्होंने इसके दो-तीन घूट ही पिये थे कि उनके पेट में दर्द होने लगा और कष्ट बढ़ गया। दरबारियों

में कानाफूंसी होने लगी कि सर वाल्टर ने निश्चय ही महारानी को विष-पान कराया है, परन्तु वे कुछ ही घंटे के बाद स्वस्थ हो गईं।
डाक्टर रिचर्डसन तम्बाखू पीने पर निम्न परिणाम बतलाते हैं।

१. पीली भाप बनती है।
२. कार्बन बनती है। कार्बन गले में तथा गले और कलेजे की नालियों में जम जाती है।
३. अमोनिया उत्पन्न होता हैजो अधिककाल तक पीतेरहने से जिह्वा को फाड़ डालता है, गले को खुश्क करता है जिससे प्यास बढ़ती है और तीव्र धूम्रपान की इच्छा जाग्रत होती है। अमोनिया रक्त को भी दूषित करता है।
४. कारबोनिक एसिड (कोयले का तेजाब) उत्पन्न होता है, जिससे सिर दर्द, अनिद्रा और स्मरण शक्ति का ह्रास होता है।
५. निकोटीन प्रवाहित होती है। निकोटीन एक तीव्र विष है, इसकी एक बूंद खरगोश के मुंह मे डालो तो वह तुरन्त मर जायगा। कुत्ते की जीभ पर दो बूंद डालो तो वह भी मर जायगा। निकोटीन को कबूतर की टांग से छुआ दो तो वह चार मिनट के अन्दर मर जायेगा। डाक्टर ब्रोडे ने बिल्ली की जीभ पर एक बूंद डाली तो वह पांच मिनट मे उसी क्षण मर गई। हरी-हरी पत्तियों को पीसकर मनुष्य-शरीर की त्वचा पर मालिश करें तो विषैला प्रभाव होगा।

और भी सूक्ष्म विष हैं जैसे : कोलिडीन, प्रुसिक एसिड, कार्बन-मोनक्साइड, फरफुरल और एक्रोलीन। कोलिडीन जहरीला क्षार है, जिससे स्नायु दुर्बल हो जाते हैं और चक्कर आने लगते हैं। प्रुसिक एसिड ज्ञान-तन्तुओं को मलीन कर देता है। सिर में भारीपन रखता और मन में अरुचि पैदा करता है। कार्बन मोनक्साइड दम घोटकर मार डालने वाली गैस है। इसका प्रभाव यह होता है कि सांस जल्दी-जल्दी चलने लगती है, हृदय की गति तेज हो जाती है, रोमांच और ऐंठन होती है। आंखों की

पुतलियां फैल जाती हैं और ठंडा पसीना, ठंडा बदन और बेहोशी पैदा करती है। फुरफुरल भी मस्तिष्क के ज्ञान-तन्तुओं को ढीला कर देने वाला विष है, जिससे बाद में आचार और शुद्ध विचार नष्ट हो जाते हैं। एक्रोलीन एक गैस है जो मन मे चिड़चिड़ाहट पैदा कर देती है।

अब यह प्रश्न उठ सकता है कि इतने विष रहते तम्बाखू पीने वाले दीर्घ काल तक कैसे जीते रहते हैं? बात यह है कि यदि विष की सम्पूर्ण मात्रा शरीर में एक साथ पहुंच जाय तब तो ऐसा होना सम्भव है। परन्तु ४ प्रतिशत ही विष रुधिर में प्रवेश कर पाता है शेष वापिस निकल जाता है। यह ४ प्रतिशत भी एक साथ ही प्रवेश नही करता, धीरे-धीरे करता है। थोडा-थोड़ा करके पहुचने से शरीर को उसके सहने का अभ्यास हो जाता है। इसलिए *वर्षों मे वह विष अपनी मात्रा पूरी कर पाता है* और तब अनेक रोगों को उत्पन्न करके मनुष्य के प्राण समाप्त करता है। डाक्टरो ने प्रयोग करके देखा है कि तम्बाखू सेवनकरने वाला व्यक्ति जीवन के १०-१५ वर्ष अवश्य ही तम्बाखू की भेंट चढायेगा।

इन हानियों से परिचित होकर तम्बाखू का परित्याग किया जाने लगा। रानी एलिजाबेथ ने अपने राज्य मे तम्बाखू का पूर्णनिषेध करने की आज्ञा प्रचारित कर दी थी। उसके बाद दूसरे शासक जेम्स-प्रथम ने तम्बाखू के विरुद्ध प्रसिद्ध पुस्तक Counterblast to Tobacco लिखी। उन्होने लिखा था कि "तम्बाखू नेत्रों के लिए घृणास्पद, नाक के लिए दुर्गन्धित, मस्तिष्क के लिए हानिप्रद, फेफड़ो के लिए शत्रु और इसका धुआं जीवन-अंधकार का अथाह समुद्र है।" पोप अर्बन अष्टम ने तम्बाखू पीना अपराध करार दे दिया था। टर्की के अमुरथ चतुर्थ ने धूम्रपान करने वालो को मृत्यु-दण्ड दिये थे। कुस्तुन्तुनिया मे ऐसे व्यक्ति की नाक मे नली को आर-पार छेदकर बाजारो मे घुमाते थे। मास्को के ग्रान्ड ड्यूक ने धूम्रपानी को पहले आर्थिक दण्ड और फिर दुबारा मृत्यु-दण्ड नियत किया था। फारस के बादशाह ने अपने राज्य में तम्बाखू का आना वर्जित कर दिया था। अबीसीनिया के राजा किंग जॉन ने सूंघने वाले की नाक काटने और खाने तथा

पीने वाले की गर्दन उतार लेने की दण्ड-व्यवस्था की थी। फिर भी धूम्र-पान रुका नही। विश्व के मेघ के समान यह प्रतिपल समस्त संसार में आच्छादित होता रहा और आज अपने देश भारत मे तीन-चार वर्ष के बच्चे सिगरेट और हुक्के के कश का आंख मीच कर आनन्द लेते हैं।

भारत में इसका प्रचार अकबर के शासन मे बढ़ा। अंग्रेजी सभ्यता ने इसे और भी सुलभ कर दिया, क्योंकि हुक्के और चिलम की झंझट न रही और सिगरेट अथवा बीड़ी चाहे जहां चलते-फिरते पी सकते हैं। तम्बाखू का व्यवहार इतनी प्रचण्डता से बढा है कि अन्य सारी मादक वस्तुओं की बिक्री इससे बहुत ही पीछे है। गत योरोपीय युद्ध के समय हिसाब लगाया गया था कि संसार-भर में तम्बाखू की खेती की कीमत ६२५,००००,००० रुपये थी।

भारत में प्रति वर्ष ढाई लाखटन तम्बाखूखर्च होता है। जिसका मूल्य लगभग तीन अरब रुपये है। लगभग ३५ प्रतिशत व्यक्ति तम्बाखू सेवन करते हैं। बंगाल, मद्रास और बर्मा मे इसकी खेती प्रति दिन उन्नति पर है। दस लाख एकड़ जमीन पर यह बोया जाता है और ५ करोड़ रुपये से अधिक मूल्य का विलायत से आता है। बर्मा और मद्रास मे सिगरेट के बड़े-बड़े कारखाने हैं। जबलपुर और म० प्र० मे बीडियो के घर-घर कारखाने हैं। बम्बई में पत्तो की बीड़ियो का अधिक प्रचार है। राजपूताने मे देशी और काबुली दो प्रकार की तम्बाखू होती है, उसमें गुड मिलाकर भांति-भांति के हुक्के, नरेली और चिलमो मे लोग पीते हैं। कलकत्ता, बनारस, लखनऊ, दिल्ली आदि शहरों मे सुगन्धित वस्तु मिलाकर सुरती, मुश्की, अवरी आदि नामों से उसकी गोलिया बनाते और सोने के वर्क चढ़ा कर बेचते हैं। अमेरिका, इग्लैंड, और मिश्र से प्रति वर्ष ४ करोड़ रुपये से अधिक के सिगरेटें भारत मे आती हैं। लगभग एक करोड़ रुपये का तम्बाखू भारत से विदेशो मे जाता है। भारत की ६० करोड़ जनसंख्या मे कई अरब रुपये का तम्बाखू फूका जाता है। प्रति मनुष्य १० रुपये साल से अधिक पड़ता है। इसके साथ यदि एक मनुष्य एक महीने मे एक माचिस भी खर्च

करे, तो साढ़े सात अरब माचिसें होती हैं, अर्थात् सत्तर करोड़ रुपये प्रतिवर्ष।

बहुत आदमी प्रति दिन सौ-सौ बीड़ियां और ५०-४० चिलम तक पी जाते हैं। यदि प्रति आदमी २५ बीड़ी गिनें और बीस पैसा उनका मूल्य समझें तो प्रति वर्ष ७२) रुपये होते हैं। यदि वह आदमी ४० वर्ष तक बीड़ियां पीता रहा, तो २८८० रुपये की बीड़िया और २५० रुपये की दियासलाई, इस प्रकार कुल३१०० रुपये उसने फूक डाले। इस प्रकार इस रकम पर सूद दर लगाइये और सोचिये कि यदि कुल भारत में २० करोड़ मनुष्य भी तम्बाखू सेवी हुए तो ५०० अरब रुपया से अधिक तम्बाखू की भेंट जाता है।

भारत में १० लाख से अधिक बीघे जमीन में तम्बाखू बोई जाती है, इतनी जमीन में यदि अन्न बोया जाय और दो बार बुआई करने से उसमें से प्रति बीघा २ टन अन्न भी हो, तो २० लाख टन से अधिक अन्न उत्पन्न हो सकता है। प्रति दिन आधासेर के हिसाब से एक-एक मनुष्य को ५ मन अन्न एक वर्ष को काफी होता है। इस तरह १ करोड़ से अधिक मनुष्यों का पेट भर सकता है।

तम्बाखू एकाध मात्रा लेने मे तो दर्द की पीड़ा कम करने वाला है। परन्तु अधिक मात्रा मे लेने पर घुमेरी, बेहोशी, नशा, मृगी, उन्माद और मृत्यु भी हो जाती है। धूम्रपान का इतना अधिक व्यापक प्रचार होने का कारण यह है कि इसे सेवन करके व्यक्ति कुछ देर के लिए चिन्ताओं और भार से मुक्त हो जाता और आराम अनुभव करता है। हमे सच्ची मुक्ति तो अपने कार्य के करने पर ही मिल सकती है। हमे अपनी बुद्धि से अपना उत्तर-दायित्व-भार जो ईश्वर ने हमे मनुष्य-शरीर देकर दिया है, प्रतीत करना और उसका निरालस्य भाव से अकृत्रिम रीति से पालन करना चाहिए।

हमने देखा है कि पक्षियो को पालतू और न उड़ने देने योग्य करने के लिए तम्बाखू खिलाया जाता है।

एक वृद्ध की मृत्यु हो गई। मरने से एक दिन पहले वह डाक्टर के

पास गया था। उसके घर वालों ने लाश को पोस्टमार्टम के लिए सरकारी जांच करने भेजा। वहां चार डाक्टरों ने परीक्षा की, उसके कलेजे में तम्बाकू का धुआं और विष ठसा हुआ था, इसी कारण से मृत्यु हुई। वह बचपन में ३-४ वर्ष की आयु से ही तम्बाखू पीने लगा था। वास्तव में हम बहुत छोटे-छोटे बच्चों को आजकल बीड़ी-सिगरेट पीते देखते हैं। जो बच्चे अपने बड़ों के अथवा आये-गये मित्रों तथा मेहमानों के लिए हुक्का भरकर उनके सामने पेश करते हैं, वे हुक्का-चोरी से एक-दो कश खींच कर चिलम का स्वाद चख लेते हैं। और फिर बड़े होने पर तो वे भी सबके सामने पीने लगते हैं। उनके अभिभावकों की भी यही धारणा होती है कि हुक्का उनके घर की शान और दस-पांच आदमियों की मण्डली में पीने की बड़े-बूढ़ों की वंश परम्परागत देन है। बिरादरी के सरपंचों की संतान हुक्का पीना अपना गौरव समझती है। शहरों के लड़के मुंह में सिगरेट दबाकर चलना, उसके कश खींचकर धुएं को उड़ाना अपनी प्रतिष्ठा और अमीरी समझते हैं। सिनेमाओं ने छोटे-छोटे बच्चों में कुचेष्टाओं का बहुत प्रचार कर दिया है, जिसमें से सिगरेट पीना भी एक है। सिनेमा हाल में १०-१२ वर्ष के बच्चे को फिल्म की चेष्टाओं का बखान करते और सिगरेट का कश लगाते देखिये तो हमें यही प्रतीत होता है कि भारत की नस्ल को यही भर जवानी है। वह धुएं को इस अभ्यास से छोड़ेगा कि बड़े-बड़े भी उतनी नफासत न सीखे होंगे। बच्चों की धारणा हो जाती है कि बिना पान खाये और सिगरेट पिये हमें कोई बड़ा और बुद्धिमान नहीं समझेगा। हमने अनेक परिवार ऐसे देखे हैं जो बहुत दरिद्र हैं। जब उनके पास तम्बाखू के लिए पैसा नहीं रहता, वे अपने छोटे बच्चे को लेकर किसी अमीर व्यक्ति के पास जा बैठे। उस व्यक्ति ने बच्चे को चीज खाने के लिए एक पैसा दिया, उन्होंने पैसा अंटी में लगाया और बच्चे को लेकर बाजार चले। उस पैसे से तम्बाखू की एक गोली खरीदी जाती है।

एक बार एक साठ वर्ष के मरीज ने डॉक्टर को बुला भेजा। डॉक्टर ने उसकी परीक्षा करके कहा कि मैं तुम्हारा इलाज तब कर सकता हूं जब

तुम तम्बाकू पीना छोड़ दोगे। रोगी ने कहा, "तम्बाखू छोड़ना असम्भव है।" डॉक्टर चले गये। रोगी ने दो दिन तक डॉक्टरके पास आदमी भेजा, पर वे नही आये, उन्होंने यही कहा कि पहले उससे तम्बाखू छुड़ाओ, नही तो वह मर जायगा। पर रोगी तम्बाखू न छोड़ सका। उसने पच्चीस वर्ष की अवस्था से तम्बाखू सेवन आरम्भ किया था और अभ्यास यहां तक बढ गया कि एक क्षण को भी मुंह खाली नही रह सकता था। जीभ के नीचे तम्बाखू की पत्ती दबी ही रहती थी। चौथे दिन जब वह मरने लगा और डॉक्टर ने उसे कह दिया तुम आज मर जाओगे, अब भी तम्बाखू छोडो तो औषध अपना असर करे। उसने लड़खड़ाती जुबान से उत्तर दिया कि डॉक्टर को निकाल दो। जब वह ठंडा होने लगा तब उसने चिल्ला-चिल्ला कर कहा, "मेरी जीभ केनीचे तम्बाखू की पत्ती रख दो। मेरे मुंह में सोना न डालना, गगा जल न डालना, तम्बाखू की पत्ती डाले जाना।" तम्बाखू खाते-खाते ही उसके प्राण निकले।

एक बार एक प्रोफेसर ने एक विद्यार्थी को सिगरेट पीते देख लिया। वे उस विद्यार्थी को बहुत प्यार करते थे, उन्होंने उससे कहा, अब कभी सिगरेट न पीना। विद्यार्थी न माना और नित्य पीता रहा। प्रोफ़ेसर को इस बात से बहुत दु:ख हुआ। उन्होने उसके पिता के पास पहुंचकर इसकी शिकायत की। पिता ने तनिक भी विस्मित न होकर उत्तर दिया, "अच्छा तो है, मैं बूढा हो चला। वह अब पीना न सीखेगा, तो मेरे पीछे सभा सोसा इटी और जाति बिरादरी मे उठ बैठकर सग कैसे निभायेगा। प्रो० साहब, हुक्का ही जाति बिरादरी की नाक है, जिसका हुक्का बन्द, उसे जाति से अलग समझना चाहिए।" प्रोफ़ेसर साहब निराश होकर लौट आये।

दिल्ली के एक करोड़पति सेठ के बहुत ही नाजुक और लाड़ले बेटे रात्रि के समय अपने कमरे मे गद्दे पर सिगरेट पी रहे थे। मलमल का कुरता और बारीक धोती हवा से इधर-उधर फहरा रही थी। वे निन्द्रा-वस्था में होकर सिगरेट का आनन्द लूट रहे थे कि उन्हें नीद सी आ गई। सिगरेट का हाथ उनके सीने पर आ पड़ा। कुरता जरा-सा सुलग कर

जलने लगा, सीना भी जला। पांच मिनट में ही सब कुछ हो गया, भाग दौड़ मच गई, नौकर चाकर आये, डॉक्टर को फोन किया गया। परन्तु छटे मिनट ही उनकी मृत्यु हो गई। उनका नाजुक दिल हल्का-सा घाव नही सह सका।

बच्चों का प्रबल शत्रु यह धूम्रपान है। यह उनकी शारीरिक और मानसिक उन्नति को रोकता तथा उनके आचार को दूषित करता है। फ्रांस के सिपाहियों की नस्ल अब छोटी हो गई है, क्योंकि वे पचास वर्ष पहले बहुत धूम्रपान करते थे। टर्की के सैनिक तम्बाखू और अफीम के के कारण से ही कद मे छोटे हो गये।

धूम्रपान रोकने से आर्थिक सुधार तो होगा ही, नैतिक सुधार भी होगा। यदि एक परिवार में एक व्यक्ति तम्बाखू के ऊपर दस पैसे या पंद्रह पैसे प्रति दिन व्यय करता है, तो उतने धन से प्रति मास वह अपने घर के या बच्चो के लिए कोई वस्तु खरीद कर ला सकता है। धूम्रपान का अभ्यास निश्चय ही व्यर्थ और दूसरों के लिए अपनी शान दिखाने के लिए है। इसका गुण कुछ भी नही। एक बार एक ऑफिसर की स्त्री ने बाजार से एक वस्त्र खरीद लाने के लिए कहा। ऑफिसर एक महीने तक भी उमे नही खरीद सके, क्योंकि उनके पास रुपये नही थे। और वेतन महीने की चार तारीख को मिलता था और उसी दिन उसका सब बंटवारा हो जाता था। वेतन आया, पर खेद है कि वह वस्त्र खरीदने की उसमें गुंजायश न रही। पत्नी ने बिगड़ कर घर का काम धन्धा बन्द कर दिया और कमरे में पड़ी रहतीं। धीरे-धीरे यह छोटी-सी लड़ाई सब पर प्रकट हो गई, क्योंकि केवल बीस रुपये ही का तो प्रश्न था। एक मित्र ऑफिस से लौटते समय उनके साथ हो लिए। ऑफिस और कोठी का फासला एक ही फर्लांग था, इस बीच में पैदल आते-आते उन्होंने चार सिगरेट पी डाली। मित्र ने कहा, "क्या तुम अपने सिगरेट के खर्च का अनुमान कर सकते हो?"

उन्होंने आश्चर्य से पूछा, "क्यों?" इसलिए, कि तुम इसे त्याग कर चालीस रुपये महीने बचा सकते हो। अपनी पत्नी के लिए वैसे दो वस्त्र

खरीद कर ला सकते और लड़ाई मिटा सकते हो। मित्र ने भर्त्सना से उत्तर दिया। ऑफिसर ने उन पर घृणापूर्वक दृष्टि डाली और मित्र को अन्दर आने को बिना कहे ही कोठी में घुस गये।

एक पंसारी को सिगरेट पीने की धुन थी। एक डॉक्टर ने उसे छोड़ने की सलाह दी। पंसारी ने सिगरेट पीना तो छोड़ दिया, किन्तु जितने पैसों की नित्य पीता था, उतने पैसे गुल्लक में डालने लगा। तीस वर्ष के बाद उसने जमीन खोद कर उस गुल्लक को देखा। उसके आश्चर्य की सीमा न रही उसने उस द्रव्य से शहर से बाहर एक मकान बनवा लिया और आज कल वहां स्वच्छ हवा मे आनन्द से रहता है।

इस आर्थिक लाभ पर हम आंख मीच कर कह सकते हैं कि यह ठीक है। धूम्रपान का रुपया धुएं में उड़ ही तो जाता है जिससे न किसी का पेट पलता है, न वस्त्र बनते हैं, न किसी की रक्षा होती है। उससे दुःख ही दुःख मिलता है। अमेरिका में सन् १८६० में ६००,०००,००० रु० का तम्बाखू फूंका गया, और ३०३,०००,००० रु० का मांस खाया गया।

धूम्रपान भोग विलास की भी वस्तु नहीं है। विलास की वस्तु तो वह है जिससे हमें आनन्द प्राप्त हो और नुकसान कुछ भी न हो। हम एक सप्ताह के सिगरेटों के पैसे जोड़ कर अपने बच्चे का एक जोड़ा जूता खरीद सकते हैं। उसका कोई वस्त्र बना सकते हैं। बच्चे को सजा कर और उसे सुखी देखकर हमें कितना आनन्द होगा, यही गृहस्थ का विलास है।

तम्बाखू का सब से पहला प्रभाव भूख कम करना है। दूसरा प्रभाव मांस कम करना है। एक किसान ने पचास वर्ष की आयु मे हुक्का पीना एक दम छोड़ दिया। पूछने पर उसने गर्व से कहा, "मैंने अपना जीवन दस वर्ष और बढ़ा लिया है।"

डॉक्टरी राय है कि तम्बाखू किसी भी रोग की औषध नहीं। जो दो-चार उपचार हैं भी वे सत्य नहीं हैं। लोग इसे दांतों के दर्द की अक्सीर दवा बतलाते हैं। दांतों का दर्द तम्बाखू दांतों के नीचे दबाने से सुन्न हो

जाता है, जड़ से नहीं जाता। बल्कि यह कहिये कि इसी प्रकार उन्हें दस-पन्द्रह दिन दांतों के नीचे दबाना पड़ा कि वे तम्बाखू के अभ्यस्त हुए। एक बार एक मित्र के घर एक मन्त्री, एक डॉक्टर और एक केमिस्ट चाय पीने आये। मित्र ने उनसे तम्बाखू प्रयोग का कारण पूछा। मन्त्री और डाक्टर के उत्तर को छोड़ कर केमिस्ट का उत्तर हमारी बात की पुष्टि करता है, उसने कहा, कि दो वर्ष पहले मेरे होठ गल गये थे तब से तम्बाखू लिया था। उनसे फिर पूछा, कि जब होठ अच्छे हो गये तब भी अब तक क्यों लेते हैं? केमिस्ट ने उत्तर नहीं दिया, वे झुंझलाकर उठकर चल दिये। डॉक्टर सोल्ली कहते हैं कि तम्बाखू नसों को सुन्न कर देता है, जीवन को मूर्छित कर देता है, और निर्बलता को बढ़ाता है। यह वास्तव में कलेजे को धीरे-धीरे जलाता है। उसके पीने वाला साक्षात् सूली पर चढ़ा हुआ अपने दुर्भाग्य को चूमता है।

तम्बाखू का पीना अधिक हानिकारक है या खाना? अधिकांश पीने में अधिक हानि है। क्योंकि गले की नसों में होकर मस्तिष्क और जिगर दोनों दिशाओं में फैलता है। मस्तिष्क में अधिक विष फैलने से 'मस्तिष्क-ज्वर' हो जाता है। सरकारी अस्पतालों और पागलखानों में ऐसे केस देखने में आ सकते हैं। विद्यार्थियों को, जिन्हें मित्र संसर्ग से सिगरेट पीने का चस्का लग जाता है, शीघ्र ही अपनी स्मरण शक्ति के ह्रास का अनुभव होने लगता है, वे पहले की भांति पाठ याद नहीं कर सकते। फिर भी वे धुआं उड़ाना नहीं छोड़ते। डॉक्टर गोर्जस कहते हैं—"तम्बाखू अध्ययन का बन्द द्वार है।" ड्राइंग के विद्यार्थियों का अथवा अध्यापकों का, जो तम्बाखू पीते हैं, काम करते समय हाथ कांपने लगेगा। उनकी ड्राइंग में कंपकंपी अवश्य चित्रित होगी। उनकी दृष्टि में भी अन्तर आ जायगा।

तम्बाखू मस्तिष्क को तुरन्त ही मलिन कर देता है। अनिद्रा, आंखों के आगे तारे से दीखना, दिल का शीघ्र घबड़ा जाना, प्रत्येक कार्य में निरुत्साही होना ये समस्त दोष तम्बाखू की अवश्यम्भावी देन हैं। डॉक्टर रिचार्डसन कहते हैं 'जो माता-पिता तम्बाखू का सेवन करते हैं,

उनकी सन्तान अवश्य ही मानसिक और शारीरिक दुर्बलताओं का शिकार होगी।" एक अन्य प्रतिष्ठित चिकित्सक की राय है कि "मैंने आज तक एक भी ऐसा तम्बाखू सेवी माता-पिता नही देखा जिसकी सन्तान का स्नायु मण्डल कमजोर न हो। उनका मस्तिष्क भी दुर्बल होता है।" फ्रांस और अमेरिका मे ऐसे अनेक प्रयोग देखे गये हैं जो बच्चे जितनी अल्पावस्था मे तम्बाखू सेवन करने लगते हैं उतनी ही जल्दीउनका पतन होता है। एक बड़े डॉक्टर का यह अनुभव है कि सिगरेट पीने से प्रत्येक मनुष्य का ह्रास होता है। ज्यों-ज्यों धूम्रपान का सेवन संसार मे बढ रहा है, हमें निम्न बीमारियाँ भी बढती नजर आती हैं : मुख-दर्द (अचानक ही मुंह का दुखना), अपच, गठिया का दर्द और मस्ि क रोग। छोटे बच्चों पर तम्बाखू का शीघ्र प्रभाव पडता है। वास्तव मे सिगरेटों ने हमारे सामाजिक, नैतिक और राजनैतिक जीवन मे दुर्बलता ला दी है।

प्रसिद्ध फ्रेंच डॉक्टर जी० सेसने ने नौ से पन्द्रह वर्ष की आयु वाले ३८ धूम्रपामी बच्चों का निरीक्षण किया। इन बच्चो का रक्त प्रवाह बहुत क्षीण था और उन्हें हृदय रोग हो चुका था। पाचन शक्ति बिगड़ गई थी, और उन्हें अल्कोहल पीने की इच्छा होती थी। पारी का बुखार आने लगा था, रक्त के लाल कण नष्ट हो गये थे। नाक से खून गिरता था। रात को भरपूर नींद नही आती थी और मुंह का स्वाद बिगड़ गया था। डॉक्टर ने इन बच्चों से तम्बाखू छुड़ाया और वे ६ महीने के बाद बिल्कुल स्वस्थ हो गये।

युवावस्था में धूम्रपान की सबसे अधिक प्रचुरता होती है। ज्यों-ज्यो अवस्था बढ़ती जाती है, नसो मे सुस्ती जल्दी-जल्दी आती है और तम्बाखू का सेवन अधिक होता है। हृदय पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है, स्नायु मण्डल ढीला हो जाता है। इच्छाशक्ति नष्ट हो जाती है। इच्छाशक्ति ही सदाचार की कुंजी है, जिसमे इच्छाशक्ति नही, उसकी इन्द्रियां वश मे नही, वह सदाचारी नहीं, संयमी नहीं। इच्छाशक्ति मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति है, इसी के सहारे जीवन के दुःख सुख कटते हैं। जीवन एक नौका है

जो पानी में डूबती और उतराती रहती है, इच्छाशक्ति ही उसका खिवैया है यह एक प्रकार की मानुषीय आशा और शक्ति का संचित सुरक्षित कोष है, यही उसका भाग्य है।

अमेरिका के सरकारी अस्पताल के बड़े सर्जन कहते हैं—"तम्बाखू दिलेरी को कम करता है, शरीर को कमजोर बनाता है और खून को सुखाता है।"

एक बार एक विद्यार्थी ने स्कूल में तम्बाखू खाना सीख लिया। गर्मी की छुट्टियाँ होने पर उसे अपने पिता के साथ दुकान पर शारीरिक परिश्रम का कार्य करना पड़ा। वह जब थक जाता था, तब पिताजी की नजर बचा कर थोड़ा तम्बाखू खा लेता था और फिर काम में लग जाता था। परिणाम यह हुआ कि वह प्रतिदिन पीला पड़ता गया और बीमार होकर खाट पर पड़ गया। पिता ने डॉक्टर को बुलाना चाहा, पर असली भेद खुल जाने के भय से उसने पिता को बारम्बार डॉक्टर लाने से रोका। जब वह मृत्यु के समीप ही आ गया तब डॉक्टर ने आकर नब्ज देखी। उसकी शक्ति मर चुकी थी और दिल की चाल बढ़ गई थी। उसी शाम को उसका हार्ट फेल हो गया।

एक युवक महाशय एक कन्या को अपनी शादी के लिये देखने गये। वे सिगरेट बहुत पीते थे। कन्या के पास जाते समय उन्होंने अपनी जेबों को खूब झाड़ कर साफ कर लिया था और उनमें सेंट लगा लिया था कि कहीं सिगरेटों की गन्ध न रह जाय। कन्या सुशिक्षित थी और उसे किसी ने यह बात बता दी थी। उसके सामने जब युवक महाशय पहुंचे तो उसने उनके होठों को तीक्ष्ण दृष्टि से देखा। युवक ने होठों पर तुरन्त उंगली फेरी और रूमाल से पोंछ लिया। कन्या ने हंसकर कहा, "होठों को पलौस सिगरेट पीने के अभ्यास को नहीं छिपा सकती। और वह तुरन्त वहां से चली गई।" युवक महाशय को उस कन्या के न मिलने का कई वर्ष तक खेद रहा, क्योंकि उससे विवाह हो जाने पर वे कलेक्टरी की उम्मेदवारी में आ सकते थे।

एक प्रसिद्ध शराबी व्यक्ति ने शराब और सिगरेट बिल्कुल छोड़ दी। जब उसके मित्रों ने इस पर आश्चर्य प्रकट किया तो उसने कहा, "इसमें आश्चर्य क्या है। मैंने हृदय से जब चाहा तब छोड़ दी, और मेरा विश्वास है कि मनुष्य अपनी इच्छा शक्ति से सब कुछ कर सकता है। परन्तु एक बात मेरे अनुभव में आई कि शराब तो मुझ से अनायास ही छूट गई किन्तु सिगरेट छोड़ने में कठिनाई हुई। मैं सिगरेट को इतना कठिन नहीं समझता था। पर मैंने उस कष्ट को भी अपनी इच्छा शक्ति से सहन किया और वह भी त्याग दी। अब मैं मानों स्वतन्त्र हूं।"

एक नवयुवक को सारे दिन सिगरेट पीने की बुरी लत थी, सिगरेट न मिलने से वह बेहोश होने लगता था। उसकी नव-विवाहिता सुन्दरी ने अपने पति से एक दिन कहा, "मैं आपके इस अभ्यास को पसन्द नहीं करती, तुम्हारे पास आने से मुझे चक्कर आने लगते हैं क्या तुम मेरे लिए सिगरेट नहीं छोड़ सकते ?" युवक को अपनी पत्नी अति प्रिय थी, उसने उत्तर दिया कि "शायद मैं छोड़ सकूंगा।" उसने उसी समय से सिगरेट पीना बन्द कर दिया, पर उसे अत्यन्त कष्ट हुआ, वह बेहोशी में भी अपनी उंगलियों को होठों से लगाकर सिगरेट पीने का संकेत करता था, उसकी पत्नी ने द्रवित होकर सिगरेट सुलगा कर दे दी। पीते ही होश में आ गया। उसने पत्नी से कहा, तुम अब मुझे सिगरेट न देना, मुझे इतना तो विश्वास है कि मैं मरूंगा नहीं और यों चाहे जितना कष्ट सहने के लिए मैं तैयार हूं। कदाचित तुम्हारे प्रेम वश ही मैं इस लत से स्वतन्त्र हो सकूं। तीन महीने तक वह सिगरेट से संघर्ष करता रहा, उसे खांसी उठने लगी, कफ गिरने लगा, स्नायु मण्डल सुन्न हो गया, प्रत्येक समय बेहोशी और आंखों के आगे अंधेरा रहने लगा। उसके आगे संसार के भूत प्रेत सिगरेट से लेकर नाचने और उसे पेश करने लगे। जब उसने सिगरेट पीना आरम्भ किया था तब भी उसे इसी प्रकार के उपद्रव सहने पड़े थे। पर उसे सदैव अपनी प्रिय पत्नी का ध्यान रहता था, परोक्ष में भी उसे अपनी पत्नी की मधुर और मुस्कराती मूर्ति सिगरेट न पीने का आदेश करती हुई दीख

पड़ती थी। उसे कुछ भी नहीं सूझता था, उसकी कुछ भी अभिलाषा न थी, वह केवल अपनी पत्नी की इच्छा को पूरी करना चाहता था। अन्त में एक दिन उसे प्रातःकाल सोकर उठते ही बहुत शांति का अनुभवहुआ। उसने अपनी पाशविक वृत्ति पर विजय पा ली थी। उसका सिगरेट पीना सर्वथा के लिये छूट गया। इस घटना से हम प्रत्येक स्त्री के आकर्षण में सुधार की आशा करते हैं।

एक बार एक किसान ने कहा कि मेरे शरीर में तम्बाखू का इतना अधिक असर हो चुका है कि मेरे पास मच्छर और मक्खी नहीं आ सकते। वे मेरी शरीर गन्ध से दूर भागते हैं, और यदि वे मेरे शरीर से चुपट जायें तो मेरे पसीने से मर जायेंगे। डॉक्टर लोग तम्बाखू पीना दमे के लिए लाभदायक बताते हैं। परन्तु इससे दमे की जड़ नहीं जाती। एक बार मेडिकल बोर्ड के निमन्त्रण पर इंगलैंड में तम्बाखू के दोषों पर एक निबंध लिखा गया जिस पर पांच सौ पौंड पारितोषिक दिया गया था। इस निबंध का कुछ सार इस प्रकार है :—

१—तम्बाखू का प्रयोग अप्राकृतिक है, क्योंकि कोई भी नभचर पशु इसे नहीं चरता।

२—पहले पहल जब मनुष्य इसे पीता है तो वह बीमार हो जाता है यदि वह पहले पहल किसी फल को खाये और चाहे वह फल उसे रुचिकर न भी हो तब भी वह उसके खाने से बीमार नहीं होता।

३—यह आनन्ददायक वस्तु नहीं है। आनन्ददायक वस्तु हानि नहीं करती।

४—अकेले इंगलैंड में १२,०००,००० पौंड वार्षिक मूल्य का तम्बाखू उड़ाया जाता है। और इसके साज सामान सहित, २०,०००,००० पौंड वार्षिक व्यय होते हैं।

५—यह गन्दी आदत है।

६—यह दांतों को बिगाड़ देती है।

७. इससे अनेक रोग शरीर में प्रवेश करते हैं। यह शारीरिक विकास को रोक देता है। बचपन में खाने से स्वाद शक्ति जाती रहती है। सूंघने, सुनने और देखने की शक्ति भी कमजोर पड़ जाती है। गले मे घाव हो जाते हैं। दिल कमजोर हो जाता है। पाचन शक्ति बिगड़ जाती है। स्नायु-मण्डल छिन्न-भिन्न हो जाता है, हाथ कांपने लगते हैं। इच्छा शक्ति नष्ट हो जाती है। मनुष्य संशय और पशोपेश में पड़ा रहता है। मनुष्य ओज और स्मरण-शक्ति खोकर पशु के समान हो जाता है। पेट और होठों के नीचे नासूर हो जाते हैं। धूम्रपानी के घाव देर मे अच्छे होते हैं। यह समय को नष्ट करता है। इससे शराब पीने की इच्छा होती है।

८. इसके कारण मकानों मे आग लग जाती है जिससे जन-हानि भी होती है।

९. तम्बाखू दिमाग को अचेत रखता है और मनुष्य लापरवाह हो जाता है।

उपरोक्त विवरण निःसन्देह सत्य है। अमेरिका की प्रसिद्ध Harpers दुकान सिगरेट की राख झड़ने के कारण जलकर भस्म हो गई, जिसमे दो लाख पौंड की हानि हुई थी। दूसरा उदाहरण आग लगने का इससे भी भयानक है, इसमें ६ घर, २ जहाज और १०० से अधिक मनुष्य जलकर भस्म हो गये थे।

जब हम तम्बाखू खाते हैं तब हमें बार-बार थूकना पड़ता है।

यह थूक कहां से आया ? मुंह मे लार का बहना ही थूक है। हम जब खाना आदि खाते हैं तब यह लार तुरन्त जीभ के नीचे ग्रन्थी में से निकल कर बहने लगती है और भोजन पचाती है। तम्बाखू खाने और थूकने से यह लार कम हो जाती है, इसी से अपच और भूख न लगने की शिकायत बनी रहती है। तम्बाखू खाकर हम कितना थूक देते हैं, जरा इस पर भी विचार तो करिये। खूब तम्बाखू खाने वाला एक दिन में ३ पिन्ट लार थूकता है। दूसरे डॉक्टर बतलाते हैं कि ६ महीने में थूकी हुई लार का वजन मनुष्य के अपने वजन के बराबर होता है। तीसरे डाक्टर कहते हैं

कि जो मनुष्य प्रत्येक पांच मिनट में चाय के चम्मच जितना थूकता है, वह अपने शरीर से पचास वर्ष में ६ टन शक्ति खो देता है।

अमेरिका में सन् १९०० में प्रति वर्ष ९९,[illegible] पौंड तम्बाकू और १०००,३००,००० *सिगरटें खर्च होती थीं।*

एक व्यक्ति खूब सिगरटें पीता था और यह सुधारवादियों का मजाक उड़ाकर कहा करता था कि मैं इतनी पीता हूं फिर भी मुझे क्यों नहीं कुछ होता। एक दिन सुना गया कि उसे लकवा मार गया है, पहले उसकी दृष्टि जाती रही, फिर बोलना बन्द हो गया, फिर गर्दन मुड़नी बन्द हो गई, हाथ उठने बन्द हो गये, धीरे-धीरे सभी अंगो का संचालन बन्द हो गया और वह एक ही सप्ताह में मर गया।

आखों के एक बड़े भारी विशेषज्ञ डॉक्टर का कहना है कि 'तम्बाखू आंखों का शत्रु है। यह आंखों को ले बैठता है और श्रवण शक्ति को कम कर देता है। यदि वे किसी भी अवस्था में पहुंच कर तम्बाखू त्याग दें तो उनका रोग अच्छा हो जाएगा। मिस्टर प्लाइमाऊथ इंगलैंड के प्रसिद्ध वकील थे, उन्होंने लगातार तीस वर्षों तक तम्बाखू खाया भी और पिया भी। उसकी दृष्टि लगभग नष्ट हो चुकी थी और पिछले दस वर्षों से सिर मे गूंज बनी रहती थी। उनके मित्रों ने तम्बाकू छोड़ देने की प्रार्थना की। उनके बार-बार कहने पर उन्होंने तम्बाखू छोड़ दिया, परिणाम यह हुआ कि ६३ वर्ष की अवस्था में भी वे देखने और सुनने लगे। उनकी शिकायतें मिट गईं।

सिगरेट और बीड़ी के कारखाने मे काम करने वाले मजदूरों को अनेक ऐसे रोग लग जाते हैं। एक डॉक्टर का कहना हैं कि मेरे अस्पताल मे ऐसे अनेक केस आते हैं। उन कोआराम होने में साधारण रोगियों की अपेक्षा दूना समय लगता हैं। एक बार एक सिगरेट के कारखाने से पचास मजदूर एक अचानक बीमारी हो जाने के कारण अस्पताल में लाए गये। पता चला कि सिगरेट का अन्तिम फिनिश देते समय (जो उन्हें दांत और जीभ के द्वारा करना पड़ता था) उन सबको एक-सा ही अद्भुत ज्वर हो गया था।

जर्मनी में एक कारखाने में काम करने वाले व्यक्ति पीले और कमजोर बने रहते है। उनमें से दस प्रतिशत बूढ़े होते होगे नहीं तो शेष वृद्धावस्था आरम्भ होने से पहले ही मर जाते हैं। स्त्रियों की आयु आधी ही रह जाती हैं। इन परिणामों से हमे जान लेना चाहिए कि जिस वस्तु के कारखाने में इस प्रकार की तकलीफें होती हैं उस वस्तु में अवश्य ही दोष है। गठिया और मृगी तम्बाखू के अवश्यम्भावी परिणाम है।

तम्बाखू से आवाज खरखरी और भारी हो जाती है। संगीत के प्रेमी गवैये न तम्बाखू खाते हैं, न ही पीते हैं। मधुर कण्ठ वाले प्रसिद्ध गवैये तम्बाखू से बचे रहते हैं।

एक आदमी के मुह में हर समय सिगरेट लगी रहती थी। कई वर्ष व्यतीत हो गये परन्तु उसके सेवन में कमी नही हुई। एक दिन वह सड़क पर चलते-चलते गिर पड़ा। वह छाती पर हाथ रखे हुए था और चिल्लाता था। लोगों ने देखा कि कपड़ो के नीचे एक भारी फोड़ा हो रहा है। उसके विष ने इस समय उसे अचेत और अशक्त बना दिया था। उसे अस्पताल ले गये पर पहुंचते ही वह मर गया।

तम्बाखू खाने, पीने और सूंघने का एक ही अर्थ है, हल्का नशा होना। इसीलिए इसका व्यवहार किया जाता है। परन्तु यह प्रत्येक अवस्था में स्नायुमण्डल को निर्बल और सुस्त कर देता है। रक्त का प्रवाह ठीक-ठीक नही बहता। पसीने निकलने के छिद्र बन्द हो जाते हैं, मल अंतड़ियों में चिपक जाता है। जब शरीर में मल पदार्थ और अशुद्ध पानी रुकने लगेगा तो अवश्य कोई रोग उत्पन्न होगा। बहुत से व्यक्ति भोजन के बाद तम्बाखू पीते हैं जिससे वे समझते हैं कि भोजन के पचने में सहायता मिलती है। परन्तु वास्तव में यह बात नहीं है। वह नसों को केवल गरमा देता है, जिससे अंतड़ियाँ खुश्क हो जाती हैं और मल को बाहर फेंकने में अशक्त हो जाती हैं।

एक परिवार में तम्बाखू का बहुत ही प्रचार था, छोटे बडे सभी

लगे। बड़ा लड़का एक दिन घोड़े पर घूमने जा रहा था, हाथ में सिगरेट थी कि दौरा आ गया और गिर पड़ा, गिरते ही मर गया। गृहपति जिसकी अवस्था चालीस के लगभग थी, दौरे में ही मरा। स्कूल में पढ़ने वाले लड़कों को भी क्लास में बैठे-बैठे दौरे आ जाते थे। एक बार एक लड़के को दौरा आया, मास्टर ने इसकी जांच की तो देखा कि मुंह में तम्बाखू भरा हुआ है। उसे बहुत मना किया गया परन्तु तम्बाखू नहीं छोड़ा। भरी जवानी में चौबीस वर्ष का होकर वह भी मर गया।

एक पार्लियामेंट के सदस्य बहुत ही प्रतिष्ठित थे, उनकी बहुत धाक जमी हुई थी, किन्तु चालीस वर्ष की अवस्था तक पहुंचते-पहुंचते उनका रंग फीका पड़ गया, उनमें न पहले जैसा ओज था, न वाकपटुता, न चुस्ती। वे बन्द कमरे में पड़े सिगरेट फूंका करते थे। डॉक्टर ने परीक्षा करके कहा कि तुम सिगरेट छोड़ दो तो बच जाओगे। पर उन्होंने कहा, कि मैं सिगरेट के बिना ही मर जाऊंगा। अन्त में वे बेहोश और पागल होकर मर गये।

एक और सम्भ्रान्त व्यक्ति सिगरेट पीते-पीते पागल हो गये थे, वे रात को छत पर चढ़कर चिल्लाते, 'परमात्मा मुझे यह क्या हो गया ?' एक दिन उन्हें आवाज आई 'तम्बाखू। तम्बाखू। तम्बाखू।।' उस दिन से उन्होंने तम्बाखू छोड़ दिया और वे अच्छे हो गये। एक युवक ने विवाह किया, और विवाह-रात्रि से ही बीमार रहने लगा, उसे हृदय रोग, मृगी, उन्माद, हिस्टीरिया जैसे दौरे आने लगे। स्त्री ने समझा कि मेरे कारण ही ये रोगी हुये हैं, उसने डरते-डरते पति से कहा, आप किसी अच्छे डॉक्टर को दिखाइये न। पति ने एक मामूली वैद्य से अपनी परीक्षा कराई। उसने रोग को भली-भाँति न समझ कर कहा, 'मुझे तम्बाखू की गंध आती है क्या तुम्हें किसी ने विष दिया है ?' युवक समझ गया। उसने उसी दिन से तम्बाखू पीना छोड़ दिया। और शीघ्र ही स्वस्थ हो गया।

एक प्रोफेसर साहब को गाँव में रात बितानी पड़ी, वे जिस कमरे में सोये उसमें गृहपति ने रात भर हुक्का गुड़गुड़ाया। प्रातः होने पर उसने

देखा कि मेहमान उठते ही नही है। उन्हे बहुत हिलाया डुलाया गया, पर वे न उठे। लोगों ने समझा मर गये। दौड़-धूप मच गई। गांव मे एक वैद्य रहते थे वे आये, उन्होने नाड़ी देखी और कहा, 'गड़बड़ मत करो' अभी मरे नही हैं।' पर वे बेहोशी का कारण न समझ सके। उन्हें कमरे से निकाल कर नीम के पेड़ो की छाया मे खुली हवा में रखा गया। थोड़ी देर मे उनकी मुर्छा जाती रही। उन्हे अपने कण्ठ मे कड़वी चीज अटकी-सी जान पडी। उन्होने कई बार जोर लगाकर खकार थूकी तो काला धुआं निकला। और जीभ पर तम्बाखू का स्वाद मालूम पड़ा। उन्होने पूछा कि मेरे कमरे मे रात कौन सोया था, गृहपति ने कहा कि मैं ही था, मैं रात मे कई बार हुक्का पीने उठा था, पर किसी गैर आदमी को अन्दर नही पाया। प्रोफेसर साहब खिलखिलाकर हँस पड़े और बोले—'बस-बस, तम्बाखू से मुझे बेहद घृणा है। मैं इसी के धुएँ से बेहोश हुआ था।'

इसके विषैले धुएँ का परिणाम अवश्य ही भयानक है। अब आप कल्पना कीजिए कि यदि कोई बच्चा दस वर्ष की अवस्था मे तम्बाखू पीने लगे तो पांच वर्ष बाद उसके कलेजे मे कितना विष जम जायेगा और उसकी दस वर्ष बाद क्या दशा होगी। वह निश्चय ही पागल और मूढ बुद्धि हो जायेगा। परीक्षण करने से ज्ञात हुआ कि तम्बाखू सेवन करने वालो पर टाइफाइड ज्वर और हैजे का शीघ्र प्रभाव होता है।

एक रियासत के प्रधान मन्त्री टाइफाइड से बीमार हुए और छः महीने तक स्वस्थ न हो सके। डॉक्टरो ने कहा आप योरोप जाइये और सिगरेट न पीने का प्रण करिये। मन्त्री महोदय योरोप गये परन्तु उन्होने तम्बाखू पीना न छोड़ा। वे बिना पिये बेचैन होने लगते थे परिणाम यह हुआ कि वे वहां जाकर और भी अशक्त हो गये। डॉक्टरों ने समझाया और तम्बाखू की हानि बतलाने के लिए पुस्तकें पढने को दीं पर वे न माने। आखिर डॉक्टरों ने उनकी चिकित्सा बन्द कर दी और वे और भी रोगी होकर भारत लौट आये।

तम्बाखू पीने से समय भी कितना व्यर्थ जाता है यह भी सोचिए।

दो घण्टे नित्य ही इस काम मे खर्च हों तो एक वर्ष में ६० दिन खर्च हुए। दस वर्ष में डेढ़ वर्ष खर्च हुआ, पचास वर्ष में साढ़े सात वर्ष व्यर्थ गंवाये गये, और आर्थिक व्यय का तो हिसाब और भी अधिक है। अमेरिका मे एक व्यक्ति की अभी मृत्यु हुई है जो 75 सिगरेट नित्य पीता था। उसकी मृत्यु का कारण निकोटाइन विष था। मिस्टर मिम्स समस्त दुनिया का हिसाब लगाकर बतलाते हैं कि प्रति वर्ष 1000,000,000 रु० के तम्बाखू का सेवन किया जाता है।

वैज्ञानिक आधार पर यह बात मानी गई है कि पीने और खाने दोनों क्रियाओं से प्यास लगती है। मुंह और गला खुश्क हो जाता है, और पानी पीने से भी प्यास कम नहीं होती। डॉक्टर हम्फ्रे ने तम्बाखू का व्यापक प्रचार देख कर कहा था, "वन मानुष भी इसे खाना पसन्द नहीं करेगा, फिर ये बुद्धिमान आदमी इसे क्यों खाते हैं? यह न तो पोषकतत्त्व है, न पाचक है, न मानसिक और शारीरिक शक्ति को बढ़ाने वाला है, यह तो हमारा प्रबल शत्रु है जो नसों को काट डालता है-पेट को नष्ट कर डालता है, प्यास को बढ़ाता है।"

जिस भूमि में तम्बाखू की खेती होती है वह शीघ्र ही शक्तिहीन हो जाती है, उसमे उर्वरा-शक्ति नहीं रहती। इसीलिए जहाँ पहले तम्बाखू के खेत लहलहाया करते थे। वे भू भाग अब सूखे बंजर पडे हैं, क्योंकि तम्बाखू के विष ने उनका सत्यानाश कर डाला है। जो व्यक्ति तम्बाखू खाता और थूकता है वह अपने इर्द-गिर्द ६० फीट तक तम्बाखू की गन्ध फैलाता है।

× × ×

"दारू, भाँग की तरह तम्बाखू भी खराब है। जो शराब को खराब मानता है, वह सिगरेट, तम्बाखू कैसे पी सकता है। तम्बाखू पीने वाले ज्ञानशून्य हो जाते हैं। वे बिना आज्ञा के दूसरों के घरों में तम्बाखू पीते जरा भी नहीं शर्माते।"

—महात्मा गाँधी

"चुरुट, तम्बाखू पीने से बुद्धि नष्ट होकर मनुष्य की अधर्म में प्रवृत्ति

हो जाती है। यह एक ऐसा नशा है, जो कई अंशो में शराब से भी बुरा है।"
—टालसटाय

"तम्बाखू पीने से हाजमा सुधरता है, यह विचार बिल्कुल गलत है। ऐसे हजारों रोगी आते हैं जिनकी पाचन शक्ति तम्बाखू के व्यसन से बिगड़ गयी है।"
—डॉक्टर मसो

"तम्बाखू, शराब, चाय आदि नशीली और विषैली चीजों में शरीर को पोषण करने वाला गुण जरा भी नहीं है। कमजोरी और अकाल मृत्यु के सिवा और कोई नतीजा इससे नहीं होता।" डाक्टर टी०ए० निकोलस

"तम्बाखू से शरीर के भीतरी भाग बिगड़ कर सूज जाते हैं। यह भयंकर विष है इसमें जरा भी सन्देह नहीं।"
— डॉक्टर अल्माट

"जिस पुरुष को ५० वर्ष तक जीना हो, वह तम्बाखू पीने के कारण ४० वर्ष ही जियेगा"
—डाक्टर शाफ़

